सहयोग राशि
50 रूपए

मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

पंजीयन क्रमांक : MPHIN/2021/82532

मासिक जागरण पत्रिका

भोजपर्व

राजा भोज के दर्शन, अध्यात्म, साहित्य, राजव्यवस्था, नगर नियोजन,
निर्माण इत्यादि समग्र विषयों पर आधारित जाग्रत मालवा का विशेषांक

जाग्रत मालवा
मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN/2021/82532
वर्ष : 02 अंक : 07

भोजपर्व विशेषांक

माघ/कृष्ण
युगाब्द ५१२४

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास

संपादक
अरुण सपकाले

अतिथि संपादक
अमन व्यास

संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा
राकेश दांगी

मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी-1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731-3551341

Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी – विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित।
संपादक अरुण सपकाले
फोन नं. 0731-3551341

अपनी बात

ॐ

जाग्रत मालवा का यह विशेषांक महत्वपूर्ण जानकारियों के साथ पठनीय तो है ही अपितु संग्रहणीय भी बन गया है। राजा भोज के बहुआयामी व्यक्तित्व एवं कृतित्व को किसी एक अंक में समेटना बहुत कठिन है फिर भी प्रयास किया है कि उनके द्वारा किये गये महत्वपूर्ण कार्यों को जनमानस को परिचित कराया जाए।

मध्यप्रदेश के सांस्कृतिक गौरव को बढ़ाने वाले स्मारक हो या अन्य जनकल्याणकारी योजना हो उनमें से अधिकांश राजा भोज की ही देन हैं। इनमें विश्व प्रसिद्ध भोजपुर मन्दिर हो या उज्जैन स्थित महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग का मन्दिर तथा धार की भोजशाला और भोपाल का विशाल तालाब ये सब राजा भोज की सृजनशीलता को दर्शाते हैं। इस अंक में राजा भोज की वंश, उनकी ज्ञान परम्परा, नगर नियोजन, धर्म और आध्यात्म में उनकी आस्था, उनकी विजय वरण करनेवाली युद्ध नीति, उनकी दानशीलता, मालवा-निमाड़ के प्रति उनका प्रेम, उनकी न्याय व्यवस्था, जल प्रबन्धन, भगवान श्रीराम के प्रति उनकी आस्था, राजा भोज की तकनीकि और उनके नवरत्नों की विशेषता तथा उनके द्वारा लिखे गये ग्रन्थ, धार, मांडव और उज्जैन की भोजशाला, विजय मंदिर, धारेश्वर मन्दिर, गढ़कालिका मंदिर धार, तथा वाकणकर जी की दृष्टि में राजा भोज, के अतिरिक्त अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर आधारित आलेखों का समावेश किया गया है। **कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली** इस कहावत के पीछे की कहानी भी इसमें सम्मिलित है। राजा भोज को कला, साहित्य, विद्वानों तथा विज्ञान के संरक्षक के रूप में भी जाना जाता है। संस्कृत अध्ययन के केन्द्र भोजशाला की स्थापना का श्रेय भी उनको ही जाता है। हिन्दुत्व के प्रति उनकी प्रगाढ़ आस्था हम सब के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है। राजा भोज सम्राट विक्रमादित्य के वंशज थे आज के समय हम जिस हिन्दू कैलेण्डर का उपयोग करते हैं उसका श्रेय राजाभोज के पूर्वज विक्रमादित्य को ही जाता है। राजा भोज जिनके नाम पर भोपाल बसा है, भारतीय इतिहास में राजा भोज को हिन्दूधर्म रक्षक के रूप में भी जाना जाता है। उन्होंने अनेक ऐसे कार्य किए है जो वर्तमान में अद्भुत एवं असंभव से लगते हैं। राजा भोज द्वारा धार भोजशाला में स्थापित माँ वाग्देवी (सरस्वती की प्रतिमा आज भी लन्दन के म्युजियम में रखी है। उस प्रतिमा को भोजशाला में, पुनर्प्रतिष्ठा के लिए सतत प्रयत्न चल रहा है। इस पुनीत कार्य में हमें एक दिन सफलता अवश्य मिलेगी।

इस शुभ दिन की प्रतीक्षा हम सबको है। श्रद्धा और विश्वास लिए, जब आवाज उठेगी धार से, माँ सरस्वती भी आयेगी, सात समन्द पार से।

श्री गुरूजी
(श्री माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर)

जहाँ.... मानव सेवा ही मूल मंत्र

श्री गुरूजी सेवा न्यास की स्थापना; श्री माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर (श्री गुरूजी) के जन्म शताब्दी वर्ष 2006 में स्वस्थ मानव समर्थ राष्ट्र के पावन संकल्प के साथ की गई थी। 2018 में मानव सेवा को समर्पित समग्र स्वास्थ्य प्रकल्प की रुप रेखा बनी और माधव सृष्टि परियोजना का प्रादुर्भाव हुआ।

संकल्प के लिए सद्‌प्रयास और सद्‌प्रयास से सृजन होता ही है, यह सद्‌वाक्य **माधव सृष्टि चमेलीदेवी अग्रवाल मेडिकल सेंटर** के रुप में आज जरुरतमंदो की सेवा हेतु कार्यरत है।

पावन प्रकल्प का विस्तारित स्वरूप **केंसर केयर सेंटर** के रूप में आगामी वर्षों में कार्यान्वित होकर सुपर स्पेशियलिटी सुविधाओं के साथ इन्दौर शहर के स्वास्थ्य क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगा और सेवा की हमारी मूल भावना साकार होगी।

न्यूनतम मूल्यों पर उपलब्ध सुविधाएँ

- डायलिसिस सेंटर
- पैथोलॉजी लैब
- सोनोग्राफी सुविधा
- नेत्रालय
- ई.सी.जी. सुविधा
- सर्व चिकित्सा परामर्श केंद्र
- फिजियोथेरेपी सेंटर
- योग केंद्र
- प्रधानमंत्री जन औषधीय केंद्र
- आयुष्मान भारत परामर्श केंद्र

सर्वे भवन्तु सुखिन:
सर्वे सन्तु निरामया

श्री गुरूजी सेवा न्यास, प्लॉट नं. ए-बी, स्कीम नं. 54, बॉम्बे हॉस्पिटल के पीछे, इंदौर ▸ दूरभाष: 0731 4996792

माधव सृष्टि

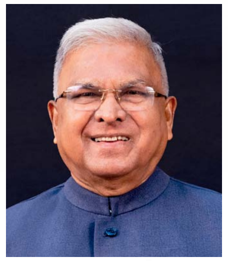

MANGUBHAI PATEL
GOVERNOR, MADHYA PRADESH
BHOPAL - 462052

सत्यमेव जयते

मंगुभाई पटेल
राज्यपाल, मध्यप्रदेश
भोपाल - 462052

क्रमांक 002/राजभवन/2023
भोपाल, दिनांक-04 जनवरी, 2023

संदेश

हर्ष का विषय है कि मासिक जागरण पत्रिका जाग्रत मालवा, इंदौर द्वारा राजा भोज के जीवन पर आधारित विशेषांक **भोजपर्व** का प्रकाशन किया जा रहा है।

राजा भोज बहुत बड़े वीर, प्रतापी, पंडित और गुणग्राही थे। सरस्वतीकंठाभरण, शृंगारमंजरी, चंपूरामायण, चारुचर्या, आदि अनेक ग्रंथ राजा भोज द्वारा लिखे हुए बतलाए जाते हैं। मध्यप्रदेश के अधिकांश सांस्कृतिक गौरव चाहे विश्वप्रसिद्ध भोजपुर मंदिर हो या विश्वभर के शिवभक्तों के श्रद्धा के केंद्र उज्जैन स्थित महाकालेश्वर मंदिर, राजा भोज की देन हैं।

आशा है, विशेषांक में राजा भोज जैसे महान वीर, प्रतापी, पंडित और गुणग्राही के व्यक्तित्व पर आधारित विशेषांक युवाओं में राष्ट्रभक्ति और समाज सेवा की भावना को सुदृढ़ कर राष्ट्रहित में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देने में सफल होगा।

शुभकामनाएं,

मंगुभाई पटेल
(मंगुभाई पटेल)

दूरभाष : 0755-2858828, 2858830, फैक्स : 0755-2858832, ई-मेल : mprajbhavan@mp.gov.in

अनुक्रमणिका

विषय	लेखक	पृष्ठ क्रं.
अखंड भारत के उद्गाता राजा भोज	लोकेंद्र शर्मा	7
राजा भोज का नगर नियोजन	जितेंद्र जाखेटिया	11
राजा भोज का विलक्षण जल प्रबंधन	श्रीरंग पेंढारकर	13
भोजपुर का निर्माण	जितेंद्र जाखेटिया	15
राजा भोज द्वारा विदिशा में निर्मित बीजा मंडल	शिवम चतुर्वेदी	16
चित्तौड़ स्थित भोजस्वामी मंदिर	संतोष पटेल	17
कपटेश्वर महादेव मंदिर एवं पापसूदन तीर्थ	शिवम चतुर्वेदी	18
राजा भोज मंदिर		19
राजा भोज की चंपू रामायण	अनुभूति शर्मा	21
भारतीय परंपरा के साधक राजाभोज	डॉ सोनाली नरगुंदे	23
राजाभोज का साहित्यिक अवदान	दुर्गेश कुमार साध	26
राजा भोज : विद्यापति ठाकुर	डॉ राजेश रावल 'सुशील'	27
भोज की राजस्व व्यवस्था तथा भोज के व्यापारिक नगर	शक्ति सिंह परमार	29
पत्थरों पर पुस्तक वाली नगरी धार	डॉ श्रीकृष्ण जुगनू	30
भोजशाला की संघर्ष गाथा	अमन व्यास	33
मां वाग्देवी चालीसा	देव कृष्ण व्यास	35
लोह स्तंभ : अद्भुत धातु मिश्रण	डॉ श्रीकृष्ण जुगनू	36
राजा भोज और उनका विजय स्तंभ	विश्वनाथ शर्मा	37
लघु कथा	प्रोफेसर योगेंद्र नाथ शुक्ल	41
असाधारण व्यक्तित्व के धनी : राजा भोज	राजेश्वरी भट्ट	44
बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे राजा भोज	मनीषा व्यास	47
शक्ति,कला, संस्कृति से समृद्ध राजा भोज का राज्य	मनीष खेडे	48
राजा भोज की दानशीलता और उसका मनोवैज्ञानिक पक्ष	मनमोहन प्रकाश	49
न हि भोजसमो नृप:	डॉक्टर संतोष पंड्या	52
कला धर्म और राजा भोज	कवि राकेश दांगी	54
भारत के गौरव -: महाराजा भोज	जीवनसिंह ठाकुर	56
लौकपुरुष राजा भोज	डॉ शिवप्रसाद बामने	57
भोज का परिवार	भगवतीलाल राजपुरोहित	59

अखंड भारत के उद्गाता राजा भोज

लोकेंद्र शर्मा, उज्जैन

भारत माता के मानवाकार मानचित्र के मध्य नाभि स्थान में विराजित आज का मालवा और उस के मध्य भाग में स्थित उज्जयिनी का स्थान अपनी विभिन्न विशेषताओं के कारण सदा सर्वदा के लिए महत्वपूर्ण बना हुआ है, साथ ही यह भूत भावन महाकाल के साथ अनेक तपस्वियों, सम्राटों और ऋषियों की जन्मस्थली तथा शिक्षा और तपस्थली के रूप में विख्यात है। इसी क्रम में भारत माता के सपूत मालवा माटी की रजाभोज का जन्म 965 ईस्वी में इसी मालवा प्रदेश की ऐतिहासिक नगरी उज्जयिनी (वर्तमान उज्जैन) में परमार वंश के राजा मुञ्ज के अनुज सिन्धुराज के घर हुआ था। एक दिन मुञ्ज की सभा में एक विद्वान ज्योतिष उपस्थित हुआ। मुञ्ज ने उसे भोज की जन्मपत्रिका देकर उसका भविष्य पूछा। ज्योतिष ने ग्रह गणना कर कहा - राजन्! मैं तो एक साधारण ब्राह्मण हूँ। भोज के सौभाग्य का तो स्वयं विधाता भी वर्णन नहीं कर सकते। यह बालक परम प्रतापी और यशस्वी होगा। 55 वर्ष 7 माह और 3 दिन तक देश सहित सारे दक्षिण देश पर राज्य करेगा। मुञ्ज को यह सुनकर अत्यंत बड़ा हर्ष हुआ, उसने ज्योतिषी को संतुष्ट कर विदा किया। अब भोज के विद्याध्ययन का समय आया, उज्जयिनी नगरी में 5 वर्ष की आयु में भोज का विद्याध्ययन आरंभ हुआ। भोज बड़े मेधावी थे। अपनी प्रखर बुद्धि के कारण उन्होंने महज 8 वर्ष की आयु में संपूर्ण वेद-पुराण, समस्त विद्या-कला और आयुर्विज्ञान का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। भोज की तेजस्विता देख मुञ्ज का हृदय काँप उठा, उनकी विद्वत्ता और वीरता देखकर उसे हर्ष के बदले परिताप होने लगा। भोज अब कुछ ही दिनों में राज्य ले लेगा यह जानकर वह चिंतित हो उठे। उनके मन में राज्य लोभ समा गया। अंत में राजा मुञ्ज ने भोज को मरवा डालने का निश्चय किया और अपने विश्वासपात्र मंत्री वत्सराज को आज्ञा दी कि अर्धरात्रि के समय भोज को किसी निर्जन वन में ले जाकर मार डाले। राजा की आज्ञा अनुसार मंत्री भोज को एकांत वन में ले गया। वहाँ उसने भोज को मुञ्ज की आज्ञा सुनाई। भोज की अवस्था तो उस समय अधिक न थी परन्तु वे समझदार अवश्य थे। मुञ्ज की आज्ञा सुनकर वे विचलित नही हुए उन्होंने एक श्लोक लिखा और मंत्री वत्सराज को देते हुए कहा कि 'राजा की आज्ञा पालन करने के बाद जब आप नगर लौटें तब यह पत्र राजा मुञ्ज को दे देना। आप परवश हैं, अतः खेद न करें। जो दैव की इच्छा होती है वही होता है। मैं मरने के लिये तैयार हूँ आप अपना कर्तव्य पालन करे।' उनके शरीर की सुकुमारता को देखकर मंत्री वत्सराज का हृदय पसीज उठा और वह विचार करने लगा। वत्सराज निरा हृदयहीन न था उसे भोज पर दया आ गयी। उनके निर्भीक शब्दों ने उसके हृदय में प्रेम उत्पन्न कर दिया। उनका निर्दोष मुख देखकर उसका हृदय द्रवित हो उठा। उसके हाथ से तलवार छूट गई और भोज को उसने एक गुप्त स्थान पर छिपा दिया। इसके बाद जब वे नगर को लौटे तब उन्होंने भोज का दिया वह पत्र मुञ्ज को दे दिया उसमें लिखा था:-

'मान्धाता स महीपतिः कृतयुगालंकारभूतो गतः।
सेतुर्येन महोदधौ विरचितः क्वासौ दशास्यान्तकः।।
अन्येचापि युधिष्ठिरप्रभृतियो याता दिवं भूपते।
नैकेनापि समं गता वसुमती मुंजत्वया यास्यति।।'

अर्थात्- 'सतयुग में परम प्रतापी

मान्धाता पृथ्वीपति थे परन्तु वे न रहे। त्रेतायुग में समुद्र पर सेतु बाँधकर रावण को मारने वाले राम भी न रहे। द्वापरयुग में युधिष्ठिर आदि भी स्वर्गगामी हो गये। हे मुञ्ज! बड़े-बड़े राजा चले गये परन्तु पृथ्वी किसी के साथ नहीं गई। संभव है कलियुग में अब तुम्हारे साथ चली जाय।'

इस श्लोक को पढ़कर राजा को बड़ा दुःख हुआ। वे पुत्रघात की ग्लानि में आत्मघात करने को आतुर हो गए। मंत्री वत्सराज ने उन्हें आश्वासन दे, आत्मघात करने से रोका और भोज को छिपा रखने का सारा हाल राजा मुञ्ज को कह सुनाया। यह सुन मुञ्ज बड़े प्रसन्न हुए और भोज को बुलवाकर युवराज घोषित कर दिया। भोज जब 15 वर्ष के थे तब उन्हें मालवा का राजा बनाया गया। भोज सिंहासनारूढ़ हो न्याय-नीति पूर्वक प्रजा का पालन करने लगे। वे विद्वान, शूरवीर और उदार थे। भोज जब सिंहासन पर बैठे तब उन्होंने पूरे देश का मानचित्र देखा और यह भी देखा कि देश 57 भागों में बंटा हुआ था। उस समय भोज ने अखंड भारत को एक करने का बीड़ा उठाया। भोज ने भारतवर्ष के सभी राजाओं को संदेश भेजा कि सभी देशवासियों को एक होकर देश को बचाना होगा। कई राजाओं ने भोज का विरोध किया, तब भोज ने देश-धर्म की रक्षा के लिए तलवार उठाई और जन्म हुआ इतिहास के सबसे बड़े योद्धा महाराजा भोज का। महाराजा भोज ने अपने जीवन में हिंदुत्व की रक्षा के लिए अनगिनत युध्द किए और अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की। जिससे सिद्ध होता है कि उनमें असाधारण योग्यता थी आज तक किसी ने इतने युद्ध नहीं लड़े। यद्यपि उनके जीवन का अधिकांश भाग युद्धक्षेत्र में बीता तथापि उन्होंने अपने राज्य की उन्नति में किसी प्रकार की बाधा नहीं उत्पन्न होने दी। भोज बहुत बड़े वीर, प्रतापी, पंडित और गुणग्राही थे। इन्होंने कई विषयों के अनेक ग्रंथों का निर्माण किया था। ये बहुत अच्छे कवि, दार्शनिक और ज्योतिषी थे। सरस्वतीकंठाभरण, श्रृंगार मंजरी, चंपूरामायण, चारुचर्या, तत्वप्रकाश, व्यवहारसमुच्चय आदि अनेक ग्रंथ इनके लिखे हुए बतलाए जाते हैं। इनकी सभा सदा बड़े-बड़े पंडितों से सुशोभित रहती थी। इनकी पत्नी का नाम लीलावती था जो बहुत बड़ी विदुषी थी।

भोज जब 15 वर्ष के थे तब उन्हें मालवा का राजा बनाया गया। भोज सिंहासनारूढ़ हो न्याय-नीति पूर्वक प्रजा का पालन करने लगे। वे विद्वान, शूरवीर और उदार थे। भोज जब सिंहासन पर बैठे तब उन्होंने पूरे देश का मानचित्र देखा और यह भी देखा की देश 57 भागों में बंटा हुआ था। उस समय भोज ने अंखड भारत को एक करने का बिडा उठाया। भोज ने भारतवर्ष के सभी राजाओं को संदेश भेजा कि सभी देशवासियों को एक होकर देश को बचाना होगा। कई राजाओं ने भोज का विरोध किया तब भोज ने देश-धर्म की रक्षा के लिए तलवार उठाई और जन्म हुआ इतिहास के सबसे बडे योद्धा महाराजा भोज का।

वे स्वयं विद्वान थे और विद्वानों को आश्रय भी देते थे। उनकी राज सभा में जो आता उसकी मनोकामना अवश्य पूर्ण होती। वे कवि और पंडितों को मुक्त हस्त से धन प्रदान करते थे। एक-एक श्लोक पर लाख-लाख रूपये दे देते थे। लक्ष्मी और सरस्वती का एक्य उन्हीं के समय में देखा गया। उनके संसर्ग में आकर अनेक विद्वान धन और कीर्ति उपार्जन करने लगे। साधारण मनुष्य भी उनकी संगति में पड़कर कवि बन जाता था। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया त्यों-त्यों भोजदेव की कीर्ति वृद्धिगत होती गई। उनकी उदारता और काव्यप्रियता का हाल सुनकर दूर-दूर के कवि राजसभा में उपस्थित होने लगे। राजा भोज आदर सत्कार कर उनकी इच्छा पूर्ण करते, कोई खाली हाथ या निराश होकर नहीं लौटता। कुछ ही दिनों में उनके इन गुणों के कारण, सर्वत्र उनका गुणगान होने लगा। विद्वानों को आश्रय देकर जो कीर्ति महाराजा भोज ने प्राप्त की है वह किसी और को भी प्राप्त नहीं हुई।

कहते हैं धारा नगरी में उस समय एक भी मनुष्य मुर्ख नहीं था। भोज प्रबंध में अनेक कवि और पण्डितों के नाम दृष्टि गोचर होते हैं। उसमें उनकी कविता और उस पर दिये पुरस्कार अंकित हैं। उसके उल्लेखानुसार भोज की राजसभा में कालिदास (द्वितीय), भवभूति, बल्लाल मिश्र, माघ मल्लिनाथ, वररुचि, सुबन्धु, बाणभट्ट, मयूर, रामदेव, हरिवंश, शंकर, दण्डी, कपूर, विनायक, मदन, विद्याविनोद, कोकिल, तारिन्द प्रभृति, कविशेखर, रामेश्वर, शुकदेव, भास्कर, शांडिल्य प्रभृति 1400 विख्यात पण्डित और कवि थे। बुद्धिसागर नामक एक पुराने मंत्री को मुंज ने निकाल दिया था। वह अनुभवी और विद्वान् था, अतः भोज ने पुनः उसे उस के पद पर नियुक्त किया। फणीन्द्रनाथ नामक उनके गुरु ने उन्हें राजनीति का उपदेश दिया था। अपने शासन के तीसरे या चौथे वर्ष, एक दिन भोज ने निम्नलिखित आज्ञा पत्र प्रकाशित किया-

1) कल एक महती सभा होगी, उसमें समस्त पदाधिकारी उपस्थित हों।

2) प्रत्येक अधिकारी से शास्त्रानुसार कई प्रश्न किये जायेंगे

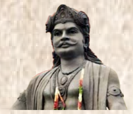

यदि वह उनका संतोषप्रद उत्तर न दे सका, तो यह सिद्ध हो जायेगा कि उसे अपने कर्तव्यों का ज्ञान नहीं है, और वह अयोग्य समझा जायेगा। एवं पदच्युत कर दिया जायेगा।

3) राज्य में जितने पण्डित हों वे उपस्थित होने की कृपा करें, उन्हें योग्यतानुसार स्थान दिये जायेंगे।

4) मेरे नगर में जो मूर्ख हो, वे सब काम छोड़कर पढ़ना-लिखना सीख लें। उन्हें एक वर्ष का समय दिया जाता है। इतने समय में यदि वे ऐसा न करेंगे तो नगर से निकाल दिये जायेंगे और बाहर से आये हुए विद्वान उनके घरों में बसाये जायेंगे। भोज की इन आज्ञाओं का बहुत प्रभाव पड़ा। जिनके पास कार्य करने की योग्यता थी, वे ही पदाधिकारी रह सके और जो मूर्ख थे सब निष्कासन के भय से पढ़-लिख कर विद्वान हो गये।

विश्ववंदनीय राजा भोज माँ सरस्वती के वरदपुत्र थे। उनकी तपोभूमि धारा नगरी में उनकी तपस्या और साधना से प्रसन्न होकर माँ सरस्वती ने स्वयं प्रकट हो कर दर्शन दिए। माँ से साक्षात्कार के पश्चात उसी दिव्य स्वरूप को माँ वाग्देवी की प्रतिमा के रूप में अवतरित कर भोजशाला में स्थापित करवाया। भोज ने धार, माण्डव तथा उज्जैन में सरस्वतीकण्ठाभरण नामक भवन बनवाये थे। भोज के समय ही वाग्देवी की प्रतिमा संवत् 1091 (ईस्वी सन् 1034) में बनवाई गई थी। गुलामी के दिनों में इस मूर्ति को अंग्रेज शासक लंदन ले गए। यह आज भी वहां के संग्रहालय में बंदी है। जिसे वापस लाने के प्रयास आज भी जारी हैं।

माँ सरस्वती की कृपा से महाराजा भोज ने चौंसठ प्रकार की सिद्धियां प्राप्त की तथा अपने युग के सभी ज्ञात विषयों पर 84 ग्रन्थ लिखे जिसमें धर्म, ज्योतिष, आयुर्वेद, व्याकरण, वास्तुशिल्प, विज्ञान, कला, नाट्यशास्त्र, संगीत, योगशास्त्र, दर्शन, राजनीतिशास्त्र आदि प्रमुख है। समरांगण सूत्रधार, सरस्वती कंठाभरण, सिद्धान्त संग्रह, राजमार्तण्ड, योग्यसूत्रवृत्ति, विद्या विनोद, युक्ति कल्पतरु, चारु चर्चा, आदित्य प्रताप सिद्धान्त, आयुर्वेद सर्वस्व, श्रृंगार प्रकाश, प्राकृत व्याकरण, कूर्मशतक, श्रृंगार मंजरी, चम्पूरामायण, कृत्यकल्पतरु, तत्वप्रकाश, शब्दानुशासन आदि।

मालवमण्डन, मालवाधीश, मालवचक्रवर्ती, सार्वभौम, अवन्तिनायक, धारेश्वर, त्रिभुवन नारायण, रणरंगमल्ल, लोकनारायण, विदर्भराज,हिरराज या अहीन्द्र, अभिनवार्जुन, कृष्ण आदि कितने विरूदों से भोज विभूषित थे।

आइन-ए-अकबरी में प्राप्त उल्लेखों के अनुसार भोज की राजसभा में पांच सौ विद्वान थे। इन विद्वानों में नौ (नौ रत्न) का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

महाराजा भोज ने अपने ग्रंथों में विमान बनाने की विधि का विस्तृत वर्णन किया है। चित्रों के माध्यम से उन्होंने पूरी विधि बताई है। इसी तरह उन्होंने नाव एवं बड़े जहाज बनाने की विधि विस्तारपूर्वक बताई है। किस तरह कीलों को जंगरोधी किया जाये जिससे नाव को पानी में सुरक्षित रखा जा सके। इसके अतिरिक्त उन्होंने रोबोटिक्स पर भी काम किया था। उन्होंने धारा नगरी के तालाबों में यन्त्र चलित पुतलियो का निर्माण करवाया था जो तालाब में नृत्य करती थी। विश्व के अनेक महाविद्यालयो में भोज के किये गए कार्यो पर शोध कार्य हो रहा है उनके लिए यह आश्चर्य का विषय है कि उस समय उन्होंने किस तरह विमान, रोबोटिक्स और वास्तुशास्त्र जैसे जटिल विषयों पर महारत हासिल की थी। वैज्ञानिक आश्चर्य चकित हैं, जो रोबोटिक्स आज भी अपने प्रारंभिक दौर में है उस समय कैसे उस विषय पर उन्होंने अपने प्रयोग किये और सफल रहे। भोज से संबंधित 1010 से 1055 ईस्वी तक के कई ताम्रपत्र, शिलालेख और मूर्तिलेख प्राप्त होते हैं। इन सबमें भोज की सांस्कृतिक चेतना का प्रमाण मिलता है।

भोज के समय मालवा क्षेत्र में निर्माण क्रांति आ गई थी। अनेक प्रसाद, मंदिर, तालाब और प्रतिमाएं निर्मित हुईं। मंदसौर में हिंगलाज गढ़ तो तत्कालीन अप्रतिम प्रतिमाओं का अद्वितीय नमूना है। भोज ने शारदा सदन या सरस्वतीकंठाभरण बनवाये। भोज के नाम पर भोपाल के निकट भोजपुर बसा है। यहां का विशाल किन्तु खंडित शिवमंदिर आज भी भोज की रचनाधर्मिता और इस्लामिक जेहाद तथा विध्वंस के उदाहरण के रूप में खड़ा है। यहीं बेतवा नदी पर एक अनोखा बांध बनवाया गया था। इसका जलक्षेत्र 250 वर्गमील है। इस बांध को भी होशंगशाह नामक आक्रांता ने तोड़ कर झील खाली करवा दी थी। यह मानवनिर्मित सबसे बड़ी झील थी जो सिंचाई के काम आती थी। महाराजा भोज ने जहाँ अधर्म और अन्याय से जमकर लोहा लिया और अनाचारी क्रुर आतताइयों का मानमर्दन किया, वहीं अपनी प्रजा वात्सल्य और साहित्य-कला अनुराग से वे पूरी मानवता के आभूषण बन गये। मध्यप्रदेश के सांस्कृतिक गौरव के जो स्मारक हमारे पास हैं, उनमें से अधिकांश राजा भोज की देन हैं। चाहे विश्वप्रसिद्ध भोजपुर मंदिर हो या विश्वभर के शिव भक्तों के श्रद्धा के केन्द्र उज्जैन स्थित महाकालेश्वर मंदिर, धार की भोजशाला हो या भोपाल का विशाल तालाब। ये सभी राजा भोज के सृजनशील व्यक्तित्व की देन हैं। उन्होंने जहाँ भोज

नगरी (वर्तमान भोपाल) की स्थापना की वहीं धार, उज्जैन और विदिशा जैसी प्रसिद्ध नगरियों को नया स्वरूप दिया। उन्होंने केदारनाथ, रामेश्वरम, सोमनाथ, मुण्डीर आदि मंदिर भी बनवाए जो हमारी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर हैं। इन सभी मंदिरों तथा स्मारकों की स्थापत्य कला बेजोड़ है। इसे देखकर सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि एक हजार साल पहले हम इस क्षेत्र में कितने समुन्नत थे। राजा भोज ने अपने जीवन काल में जितने अधिक विषयों पर कार्य किया है वो अत्यंत ही चकित करने वाला है। इन सभी कार्यों को देख कर लगता है कि वो कोई देव पुरुष थे। ये सारे काम एक जीवन में करना एक सामान्य मनुष्य के बस की बात नहीं है।

(भोज के कुछ प्रसिद्ध युद्ध)

1. भोज चरित्र के अनुसार राजा भोज ने चालुक्य राज्य के कल्याणी राजा को युद्ध में मारा क्योंकि वो देश को एक करने के भोज के अभियान का विरोधी था ।
2. धुआरा प्रसति के अनुसार राजा भोज ने कलचुरी राजा गांगेय देव को हराया।
3. उदयपुर प्रसति के अनुसार महाराजा भोज ने उड़ीसा के राजा इंद्रदत्त को हराया जो कि उड़ीसा के सबसे ताकतवर राजा थे।
4. धुआरा प्रसति के अनुसार राजा भोज ने लता नगर के कीर्ती राजा को हराया था।
5. भोज ने महाराष्ट्र के कोंकण, मुंबई सहित अनेक राजाओं को हराया।

6. कन्नौज शहर से प्राप्त हुए दस्तावेजों के अनुसार राजा भोज ने संपूर्ण उत्तर भारत, बिहार सभी राज्य को हराया था।
7. ग्वालियर में स्थित सास बहू लिपि के अनुसार ग्वालियर के राजा कीर्तीराज को हराया था।
8. भोज से राजपूताना के चौहान राजा ने भी युद्ध लड़ा पर वो भोज से हार गये इसी तरह राजा भोज ने पूरे राजपूताने पर राज्य किया।
9. राजा भोज ने चित्रकूट के किले को जीता और चित्रकूट की रक्षा की।
10. भोज ने महमूद गजनवी की सेना से युद्ध लड़ा और भारत के कई राजाओं को गजनवी से लड़ने के लिए सहायता प्रदान की।
11. राजा भोज ने थानेश्वर, हांसीनगर, कोटा को मुस्लिम राजाओं की गुलामी से छुड़ाया और हिन्दू शासन की स्थापना की।
12. राजा भोज ने सय्यद सालार मसूद गाजी के विरुद्ध हांसी दिल्ली के तोमर राजपूतों और अयोध्या के बैस गहरवार राजपूतों सुहेलदेव बैस की मदद की जिससे उस आक्रमणकारी को उसकी सेना सहित नष्ट कर दिया गया।
13. सन् 1008 ई. में जब महमूद गज़नवी ने पंजाब में जंजुआ राजपूत शाही जयपाल के राज्य पर आक्रमण किया, भोज ने भारत के अन्य राज्यों के साथ अपनी सेना भी आक्रमणकारी का विरोध करने तथा शाही आनंदपाल की सहायता करने हेतु भेजी। सन् 1043 ई. में भोज ने अपने भृतिभोगी सिपाहियों को पंजाब के मुसलमानों के विरुद्ध लड़ने के लिए दिल्ली के राजा के पास भेजा। उस समय पंजाब गज़नी साम्राज्य का ही एक भाग था और महमूद के वंशज ही वहाँ राज्य कर रहे थे। दिल्ली के तोमर राजा को भारत के अन्य भागों की सहायता मिली और उसने पंजाब की ओर कूच करके मुसलमानों को हराया और कुछ दिनों तक उस देश के कुछ भाग पर अधिकार रखा।

राजा भोज के राज्य मालवा में उनके होते हुए कोई भी विदेशी आक्रांता कदम नहीं रख पाया। वहीं राजा भोज ने सम्राट बनने के बाद पूरे देश को सुरक्षित कर महान राज्य की स्थापना की। भोज द्वारा बसाए गये ऐतिहासिक शहर 'भोपाल' जो पहले 'भोजपाल' था, धार, भोजपुर सहित 8 4 नगरों की स्थापना राजा भोज ने ही कि थी। वास्तु शास्त्री नगर रचना और अपनी युद्ध कौशल के आधार पर राजा भोज ने एक दिग्विजय सुसंस्कृत और साहित्यिक राष्ट्र के भारतीय आदानों को पूर्ण किया। यही थे उज्जैनी में जन्मे अखंड भारत के उद्गाता राजाभोज। प्रभु हम सभी सीख लेते रहे इनके ज्ञान पराक्रम और विज्ञान से सदैव आकंठ डूबे रहें। अखंड भारत केवल भारत ही नहीं पूरे विश्व की सुख-शांति, साहित्य, ज्ञान-विज्ञान इत्यादि की उन्नति के अवसरों का एक परिभाषिक शब्द है।

राजा भोज का नगर नियोजन

जितेन्द्र जाखेटिया

राजा भोज को नगर नियोजन व वास्तु के उनके ज्ञान के कारण खास तौर पर जाना जाता है। वर्तमान दौर में राजा भोज की नगरी के रूप में धार नगर को पहचाना जाता है, जो कि मध्य प्रदेश का एक जिला है। जिस समय राजा भोज थे उस समय उनके द्वारा मालवा के अपने राज्य की राजधानी को उज्जैन से हटाकर धार को बनाया गया था। उस समय पर धार का नाम धारा हुआ करता था। इस धार नगर को खुशहाल और सुरक्षित बनाने के लिए राजा भोज ने नगर के चारों तरफ चार दीवारी बनवाई थी और उसके बाहर की ओर खाई थी।

उसी समय पर राजा भोज के द्वारा नगर नियोजन के अपने ज्ञान के आधार पर भोपाल नगर के निर्माण का कार्य भी किया गया था। वर्तमान में मध्य प्रदेश की राजधानी के रूप में पहचाने जाने वाले भोपाल नगर में राजा भोज के समरांगण सूत्रधार में वर्णित की गई डिजाइन नजर आती है। उस समय पर राजा भोज के द्वारा नगरों के नियोजन पर जोर दिया गया। वास्तुकला के भी राजा भोज एक बेहतर जानकार थे। यही कारण है कि उनके द्वारा देशभर में अलग-अलग स्थानों पर बड़ी संख्या में जलाशय, मंदिर, महल - किले बनवाए गए । उनके द्वारा बनवाए गए बांध आज भी सुरक्षित हैं। हमारे देश के 1000 वर्ष पुराने किसी भी शहर की शायद ही इतनी व्यवस्थित बसाहट की गई हो जितनी कि राजा भोज के द्वारा भोपाल की गई। परमार वंश के महान शासक राजा भोज ने ही इस नगर को बसाया था। इस नगर की आज पहचान इसका बड़ा तालाब है, जिस पर बांध भी बना हुआ है। इस तालाब और बांध का निर्माण राजा भोज ने ही कराया था। भोपाल से लेकर भोजपुर तक की पूरी बसाहट का नियोजन उस युग में किया गया था। देश की गुलामी के दिनों से लेकर अब तक के दौर में देश में बहुत परिवर्तन आया है। बहुत सी पुरानी पहचान अंग्रेजों और मुगलों के शासन काल में नष्ट कर दी गई। मंदिरों में व्यापक तोड़फोड़ की गई। इन सबके बावजूद बहुत से स्थानों पर इतिहास की धुंधली तस्वीर उस समय के गौरवशाली अतीत का आभास कराती नजर आती है। तालाब बनाकर उसके पास में शहर किस तरह बसाया जाए ? यह शहर कैसा हो ? यहां पर कितनी सड़कें और कितने चौराहे हों? यह शहर चारों तरफ से कैसे सुरक्षित हो ? इसमें कितने दरवाजे हों ? यह दरवाजे किस स्थान पर हो ? ऐसे सारे सवालों के जवाब भोपाल शहर की रचना करते हुए राजा भोज ने दिए थे। राजा भोज के द्वारा भोपाल

में लोहा बाजार से लेकर इतवारा होते हुए पीर गेट तक खाई बनवाई गई थी। उस समय पर यानी आज से एक हजार से ज्यादा वर्ष पहले बेहतर नगर नियोजन करते हुए उस समय के भोपाल नगर के चारों तरफ दीवार बनाई गई थी। हर दिशा की दीवार 660 मीटर लंबी बनाई गई थी। उस समय पर जो भोपाल बनाया गया था वह आज के जुमेरात गेट, पीर गेट, इब्राहिमपुरा और इतवारा के बीच का था। वह छोटा सा भोपाल 12 दरवाजों के साथ एक चौकोर चारदीवारी में बनाया गया था। इस दुर्ग की चारदीवारी से सट कर चारों तरफ सड़क बनी हुई थी जिसे वर्तमान भाषा में हम रिंग रोड कह सकते हैं। इस दीवार के बाहर की तरफ गहरी खाई बनाई गई थी जिसे सुरक्षा की दृष्टि से किए गए निर्माण के रूप में समझा जा सकता है। भोपाल के बड़े तालाब का पानी इस खाई से होकर चारों तरफ से बहता हुआ नीचे की तरफ ओवरफ्लो हुआ करता था। इस नगर नियोजन की डिजाइन में शहर के बीचो बीच में एक विशाल चौराहा था जिसे आज के समय में चौक बाजार के नाम से जाना जाता है। राजा भोज के नगर नियोजन पर अब तक कई केस स्टडी की गई हैं। इतिहास के अनुसार भोपाल नगर में राजा भोज के द्वारा सड़कों का भी जाल बिछाया गया था और 90 डिग्री पर सड़कें एक दूसरे को काटते हुए चलती थीं। जिससे कि आवाजाही आसान रहे। इस नगर में हर तबके के ठिकाने और आवास के स्थल क्या होंगे और कहां होंगे, यह सब कुछ निश्चित किया गया था। किसी आपात स्थिति में शहर को खाली करना पड़े तो उसके लिए हर क्षेत्र से बाहर जाने के 2 दिशाओं में दरवाजे बने हुए थे। वास्तु पर राजा भोज के द्वारा लिखी गई किताब समरांगण सूत्रधार से इस बात की तस्दीक हो जाती है कि किस तरह वास्तु की डिजाइन से भोपाल को तैयार किया गया। शहर के बीचो बीच के चौराहे पर उस समय पर ब्रह्म स्थान का निर्माण किया गया था ।

तालाब बनाकर उसके पास में शहर किस तरह बसाया जाए ? यह शहर कैसा हो ? यहां पर कितनी सड़कें और कितने चौराहे हों? यह शहर चारों तरफ से कैसे सुरक्षित हो ? इसमें कितने दरवाजे हो ? यह दरवाजे किस स्थान पर हो ? ऐसे सारे सवालों के जवाब भोपाल शहर की रचना करते हुए राजा भोज ने दिए थे।

10 मंजिला भवन के निर्माण की योजना

उस समय पर राजा भोज के द्वारा विज्ञान, साहित्य शास्त्र, व्याकरण , धर्मशास्त्र , संगीत, स्थापत्य कला, वास्तु आदि 12 विषय पर किताबें लिखी गई। इन किताबों के साथ ही मेवाड़ में जो अवशेष मिले हैं, उसमें राजा भोज के नगर नियोजन पर प्रतिमान प्रमाणित हैं। उस समय राजा भोज के द्वारा अपने ग्रंथों में 10 मंजिला भवनों तक की संरचनाओं के निर्माण का जिक्र मिलता है। इन किताबों के अनुसार जब भी हम नगर संरचना का संयोजन करने लगते हैं तो हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि चारों तरफ पानी की सप्लाई की व्यवस्था हो। इस नगर में लोहा बाजार, अनाज बाजार आदि सभी बाजार किस स्थान पर होंगे, उसे चिन्हित किया जाए। राजा भोज का नगर नियोजन उस जमाने में कितना विस्तृत और गहरा था इसका अंदाजा तो इसी बात से लगाया जा सकता है कि वर्तमान दौर में स्कूल आफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर ने अपने पोस्ट ग्रेजुएशन के पाठ्यक्रम में इसे शामिल किया है। राजा भोज के समरांगण सूत्रधार का दसवां अध्याय पूरी तरह से नगर नियोजन पर केंद्रित था।

गुलामी के पूर्व के दौर में भारत को जो विश्व गुरु के रूप में पहचाना जाता है। उस पहचान का असली कारण राजा भोज और इनके जैसे उस दौर के ज्ञानी और गुणी जन थे, जिनके द्वारा वर्तमान दौर में भी मार्गदर्शन देने लायक पुस्तकों की रचना कर उस ज्ञान को सुरक्षित किया गया है। हमें यदि अपने अतीत के गौरव को सहेजना है और एक बार फिर विश्व गुरु बनाना है तो आवश्यक है कि राजा भोज की कालजयी पुस्तकों के ज्ञान पर रिसर्च किया जाए और उसे वर्तमान दौर में प्रगति के लिए सहभागी बनाया जाए।

जाग्रत मालवा अब सोशल मीडिया पर भी

जाग्रत मालवा से वेबसाइट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व यूट्यूब पर जुड़कर देशभर के विशेषकर मालवा के समाचार प्राप्त कर सकते हैं।

अभी फॉलो करें - किसी भी प्लेटफॉर्म पर जाकर जाग्रत मालवा सर्च करें

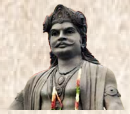

महाराजा भोज का विलक्षण जल प्रबंधन

श्रीरंग पेंढारकर, इन्दौर

महाराज भोज निस्संदेह भारतीय इतिहास के महानतम शासकों में से एक रहे हैं। सामान्यतः भारत में नगरों का विकास नदियों के किनारे किया जाता था। इन नगरों की जलप्रदाय व्यवस्था पूर्णतः वर्षा ऋतु पर ही निर्भर रहती थी। अतिवृष्टि और अल्पवृष्टि दोनों के ही परिणाम नगरवासियों के जीवन का अंग थे। अतिवृष्टि की वजह से बाढ़ और उसकी वजह से जन, धन और पशुधन की हानि, तो दूसरी ओर अल्पवृष्टि की वजह से सूखा और उस वजह से भी जन, धन और पशु धन की हानि होती रहती थी। ऐसी स्थिति में जल प्रबन्धन अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। आवश्यक था कि कोई नई व्यवस्था अपनाई जाए जो किसी नवीन तकनीक पर आधारित हो। नई तकनीक का विकास करना सदैव ही एक बड़ी चुनौती होता है। आज से एक हजार वर्ष पूर्व तो यह लगभग असंभव ही था।

महाराज भोज ने इस असामान्य चुनौती के लिए असामान्य तकनीक का विकास करवाया। उन्होने भोपाल, भोजपुर, मंडीदीप और मांडू जैसे नगर बसाए जो किसी नदी के किनारे नहीं बसे थे। उसकी जगह उन्होंने विशाल जलाशयों की श्रृंखला का निर्माण करवाया जिससे कि वर्षा का जल संगृहित किया जा सके। अतिवृष्टि होने पर एक जलाशय का अतिरिक्त जल नहरों के माध्यम से दूसरे तल पर बने जलाशय में भरने लगता था। इस वजह से बाढ़ की स्थिति निर्मित नहीं होती थी, साथ ही जल का इतना विशाल संग्रहण संभव हो पाता था कि किसी वर्ष अल्पवृष्टि होने पर भी जीवन प्रभावित नहीं होता था।

तकनीकी दृष्टि से यह अत्यंत जटिल व्यवस्था थी। इस प्रकार की व्यवस्था के लिए भू गर्भ शास्त्र का सही एवं सटीक ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक रहता था। ऐसे जलाशय बनाने के लिए योग्य स्थान का चयन अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। भूमि की उपरी सतह के कई गज नीचे मिट्टी और पत्थर की परतों के सही सही आकलन पर ही ऐसे जलाशयों की निर्मिति संभव हो सकती है। यह भूमि ऐसी होनी चाहिए, जो जल को थाम कर रख सके, साथ ही ऐसी भी हो जहां खुदाई दुष्कर न हो। उस स्थान पर यथेच्छ वर्षा भी होती हो और वहां भौगोलिक स्थिति भी जलाशय के लिए अनुकूल हो। यह भी देखा जाता था कि उत्खनन के दौरान निकला पत्थर गुणवत्ता की दृष्टि से निर्माण कार्य के लिए उपयोगी हो, जिससे की नगर के वास्तु निर्माण में उस पत्थर का सहजता से उपयोग हो सके।

अनेक प्रकार की कसौटियों पर खरा उतरने के पश्चात ही किसी स्थान का चयन जलाशय बनाने के लिए किया जाता था। कोई आश्चर्य नहीं कि आज सैकड़ों वर्षों के पश्चात भी वे ताल जल से समृद्ध है, और विशाल नगरों को जल आपूर्ति कर रहे हैं। **महाराज भोज के काल में भोजपुर के जलाशय के निकट बांधों की रचना भी नजर आती है। आज से एक हजार वर्ष पूर्व बांध बना कर जल के बहाव को रोकना आश्चर्यचकित कर देता है। ये बांध बड़े बड़े पत्थरों को जमा कर उस पर काली मिट्टी और मुरम के मिश्रण का आवरण चढ़ा कर बनाए गये है। यह संरचना इतनी मजबूत है, कि यदि होशंगशाह द्वारा सेना लगा कर नष्ट नहीं की जाती तो आज भी अक्षुण्ण ही नजर आती।**

महाराजा भोज के शासन में जो अद्भुत विकास कार्य हुए और जो तकनीकें अपनाई हुई नजर आती है, उन पर विस्तृत और गहन शोध किए जाने की आवश्यकता है। कोई अचरज नहीं होगा यदि ऐसे शोध के माध्यम से उस महान शासक के संबंध में ऐसी जानकारियां सामने आएं जो अब तक किसी के संज्ञान में नहीं आई है।

New Generation School

QUEENS' COLLEGE, INDORE

CBSE Affiliation No. 1030104

LEGACY OF CREATING FUTURE LEADERS

- International Dimension in School (IDS) Award by British Council.
- Queens' College is Ranked as No. 1 Girls' Day School in Madhya Pradesh and Indore by Education World.

REGISTRATION - SESSION 2023 - 2024

Admission open for Girls & Boys for Nursery, Junior KG & Senior KG

(Limited seats are available in other classes)
Admission is open for boys till grade IV

Age criteria (as on July 31, 2023)

- Nursery – Born on or between 01st January 2020 to 31st December 2020
- Jr. KG – Born on or between 01st January 2019 to 31st December 2019
- Sr. KG – Born on or between 01st January 2018 to 31st December 2018

Registration forms will be available in the School office

- Forms can also be downloaded from the School Website. (No interviews for Pre-Primary Classes)
- Admission will be given on the basis of criteria decided by the School Management.
- For more details contact the School Office between 09:00 am to 02:30 pm on all working days (Monday to Saturday)

Khandwa Road, Indore (M.P.) 452 020 | Phone Nos. 2877777, 66, 55

Mobile No. 91099 77717, 91099 77716, 97527 71140

E-mail id : queenscollegeindore@gmail.com, Website : www.queenscollegeindore.edu.in

www.facebook.com/queenscollegepage/?modal=admin_todo_tour

भोजपुर का निर्माण

जितेन्द्र जाखेटिया

राजा भोज के द्वारा भोपाल से 30 किलोमीटर की दूरी पर वर्तमान में रायसेन जिला के क्षेत्र के रूप में पहचाने जाने वाले स्थान भोजपुर में विश्व का सबसे बड़ा शिवलिंग वाला मंदिर में निर्मित किया गया था। भोपाल के तालाब का पानी इस शिव मंदिर तक पहुंचता था और इसी पानी से भगवान शिव का अभिषेक भी किया जाता है। इस मंदिर की ऊंचाई 1519 फीट है । इसे राष्ट्रीय महत्व का स्मारक घोषित किया गया है। यहां पर विश्व का सबसे बड़ा 18 फीट ऊंचा शिवलिंग स्थापित किया गया था। आज भी यह देवालय और वहां पर वास्तुशिल्प के आधार पर किया गया निर्माण हर किसी को चौंका देता है। बेतवा नदी के किनारे पर 250 वर्ग मील का सरोवर बनाया गया। भोपाल नगर की रचना जिस तरह से राजा भोज के द्वारा वैज्ञानिक तरीके से की गई वह नगर नियोजन भोजपुर में किए गए मंदिर के निर्माण में आज भी स्पष्ट रुप से नजर आता है।

मंदिरों का निर्माण और पुनर्निर्माण

राजा भोज के द्वारा अपने जीवनकाल के दौरान देश में बहुत से मंदिरों का निर्माण किया गया और बहुत से मंदिरों का पुनर्निर्माण किया गया। उनके द्वारा उज्जैन के महाकाल मंदिर, केदारनाथ मंदिर, सोमनाथ मंदिर, रामेश्वरम मंदिर का निर्माण और पुनर्निर्माण किया गया। इसके अतिरिक्त मुंडीर, काल, अनल, रूद्र व चित्तौड़ के किले में मंदिरों का निर्माण किया गया। कश्मीर के कोटर में उन्होंने पापसूदन तीर्थ का कुंड बनवाया था। उज्जैन में उनके द्वारा कई घाट और मंदिर बनाए गए। यह एक किंवदंती है कि महमूद गजनवी ने सोमनाथ के मंदिर पर हमला कर मंदिर को ध्वस्त कर दिया था। इस बात की जानकारी जब राजा भोज को मिली तो वे महमूद गजनवी को मारने के लिए अपनी सेना लेकर निकल पड़े थे। इस बात की सूचना महमूद गजनवी को भी मिल गई थी। वह राजा भोज के डर से देश छोड़कर भाग गया। राजा भोज ने इस घटना के बाद बहराइच में महमूद गजनवी के बेटे सालार मसूद को मारकर सोमनाथ के मंदिर पर किए गए हमले का बदला लिया था। इसके बाद में इस मंदिर का पुनर्निर्माण कराया गया था।

राजा भोज द्वारा विदिशा में निर्मित – बीजा मंडल / विजय मंदिर

शिवम चतुर्वेदी, इतिहासकार

मां सरस्वती की आराधना के लिए सम्राट भोज ने तीन नगरों में अध्ययन शालाओं का निर्माण कराया, जिसमें उन्होंने विदिशा नगरी में बीजा मंडप या विजय मंडपम (बीजा मंडल) की स्थापना की तथा इसका पुनः निर्माण एवं विस्तार परमार वंश के अन्य नरेशों जैसे नरवर्मन परमार, उदयादित्य आदि ने किया। मंदिर परिसर में बावलिया सोपानयुक्त कुआ है, जिसका मुंह वृत्ताकार है। बावली के प्रथम उतार पर लगभग 8 वीं शती. ई. के दो सुंदर अलंकृत स्तंभ हैं। जो कि मंदिर के पूर्व काल के हैं, जिससे मंदिर के और अधिक प्राचीन होने के स्पष्ट प्रमाण प्राप्त होते हैं, उपरोक्त स्तंभों पर कृष्ण लीला के भी सुंदर दृश्य उकेरे गए हैं। पूर्व काल में मंदिर अष्टकोणीय था, जिसे बाद में ओरंगजेब ने चुनवाकर चतुष्कोणीय रूप में परिवर्तित कर दिया। मंदिर से 150 गज की दूरी पर द्वार बने थे एवं सामने विशालकाय यज्ञशाला थी। बांयी ओर बावड़ी एवं पृष्ठ भाग में सरोवर था। यहां खुदाई में मानव व शेर के मुख की आकृतियां भी मिली हैं।

इस मंदिर के स्तंभ युक्त मंडप के एक स्तंभ पर उत्कीर्ण संस्कृत अभिलेख के अनुसार इस मंदिर का तादात्म्य 'चर्चिका देवी' से स्थापित किया जाता है। इस अभिलेख में परमार शासक नरवर्मन परमार का उल्लेख भी आता है। ऐसा माना जाता है कि उक्त देवी का एक अन्य नाम **विजया** भी था, जिस कारण मंदिर का नाम विजय मंदिर पड़ गया। इस मंदिर की दीवार से सन् 1186 ई. का उदयादित्य (उदय बर्मन) का भी अभिलेख मिला है। अल-बरुनी के अनुसार सोमनाथ मंदिर लूटने के बाद महमूद गजनी विदिशा आया और इस मंदिर को तोड़ा व लूटा। जिसे बाद में परमार राजाओं ने पुनः बनवाया, इसके उपरान्त बीजा मंडल को इल्तुतमिश ने 1233-34 ईस्वी में तोड़ा व नगर को लूटा। इसके बाद सन 1290 ईस्वी में अलाउद्दीन खिलजी के मंत्री मलिक काफूर ने इस पर हमला कर लूटमार की एवं मंदिर की 3 फीट ऊंची अष्टधातु की प्रतिमा को, दिल्ली स्थित बदायूं दरवाजे की मस्जिद में स्थित सीढ़ियों के नीचे दबा दिया था। इसके उपरांत 1459-60 ईस्वी में मांडू के शासक महमूद खिलजी द्वारा, 1532 ईस्वी में गुजरात के शासक बहादुर शाह द्वारा मंदिर को नष्ट किया व नगर में लूटपाट की। अंत में औरंगजेब ने सन् 1682 ईस्वी में मंदिर को तोप से उड़वाया, जिसके निशान आज भी यहां की दीवारों पर स्थित हैं। उसने अष्टकोणीय मंदिर को चुनवाकर चतुष्कोणीय रूप में परिवर्तित किया, साथ ही मंदिर के अवशेषों का प्रयोग कर, दो मीनारें बनवा दीं व मंदिर के स्थान पर मस्जिद बना दी। **सन 1760 ईस्वी में पेशवाओं द्वारा मस्जिद को नष्ट कर दिया गया।**

संदर्भ - 1. राजा भोज एवं उनकी भोजशाला, श्रीमती मधु चतुर्वेदी पृष्ठ क्र. 14

2. बहादुर शाह द्वारा विध्वंस, मिरात ए सिकंदरी

3. तबाकत एनासिरी, मेजर एच. जी. रावेरटी, पृष्ठ क्र. 622

4. हिंदू मस्जिद, प्रफुल्ल गोराडिया, अध्याय 14, पृष्ठ क्र. 79 - 81

5. ए.एस.आई. का सूचना बोर्ड

चित्तौड़ स्थित भोजस्वामिदेव मंदिर

संतोष पटेल

चित्तौड़ का भोजस्वामिदेव का मंदिर जिसे वर्तमान में समाधीश्वर मंदिर के नाम से भी जाना जाता है उसका निर्माण राजा भोज द्वारा कराया गया था। उक्त मंदिर को आक्रांताओं द्वारा कई बार तोड़ा गया। जिसे विभिन्न सम्राटों द्वारा पुनः निर्मित किया गया। ऐसा कहा जाता है कि मंदिर के वर्तमान विग्रह एवं स्वरूप का निर्माण महाराजा मोकल सिंह द्वारा कराया गया, जो कि मेवाड़ के महान सम्राट राणा कुंभा के पिता थे। इन्हीं के नाम से कुंभलगढ़ बसाया गया। 1273 ईस्वी के चिरावा अभिलेख के अनुसार मदाना, जिनका पद तालरक्ष (राज्यपाल) था, वे भगवान सदाशिव की पूजा उक्त मंदिर में किया करते थे जिसे राजा भोज द्वारा बनवाया गया, उस समय मंदिर को त्रिभुवन नारायण के नाम से भी जाना जाता था।

श्री चित्रकूटदुर्गे तलारता य पितृक्रमायाता ।।
श्री समरसिंहराज प्रसादत प्रात नि पाप ।। 30 ।।
श्री भोजराजरचित - त्रिभुवननारायणरयदेवगहे ।।
यो विरचयति स्म सदाशिव परिचर्या स्वशिवलिप्यु ।। 31 ।।

इसी मंदिर को भोजस्वामिदेव जगाती भी कहा है, 1358/1301 में लिखे अभिलेख के अनुसार प्रशस्ति पट्टिका पर लिखा अभिलेख।

ज. धारसिंहेन ओभोजस्वामिदेव जग (ती)
केलिनिर्मित प्रशस्ति - पट्टिका महिता कु ....
श्रयसे करापिता द ।। धा ....

ऊपर लिखे लेख से स्पष्ट है त्रिभुवन नारायण मंदिर को ही भोज स्वामी मंदिर कहा जाता था।

संदर्भ - 1. एटिक्युटी ऑफ चित्तौड़गढ़ आर. नाथ (1985), पृष्ठ क्र. 45-54

2. राजा भोज एवं उनकी भोजशाला, श्रीमती मंजू चतुर्वेदी, पृष्ठ क्र. 14

कपटेश्वर (महादेव) मंदिर एवं पापसूदन तीर्थ

शिवम चतुर्वेदी

राजतरंगिणी के अनुसार पद्मराज, (कश्मीर नरेश अनंतदेव के प्रीतिपात्र) पान के व्यापारी द्वारा मालव नरेश भोज को नित्य मुँह धोने हेतु काँच के कलसों में पापसूदन कुण्ड का औषधीय गुणों से युक्त, पवित्र जल भेजा जाता था।

राजा भोज द्वारा बहुत सा सुवर्ण पद्मराज के माध्यम से कपटेश्वर (महादेव) मंदिर एवं पापसूदन तीर्थ के निर्माण हेतु भेजा गया था। जिससे उक्त स्थान पर एक भव्य मंदिर एवं कुण्ड का निर्माण कराया गया था। कपटेश्वर महादेव के नाम पर ही वर्तमान गाँव का नाम बिगडकर कोटेर हो गया जो कि अनंतनांग जिले में अब स्थित है।

सन्दर्भ

1 पापसूदन कुण्ड का चित्र जिसका व्यास लगभग 60 गज है जो कि चारों ओर से पत्थर की दिवार से घिरा है।

2 कपटेश्वर महादेव मंदिर के पुराअवशेष

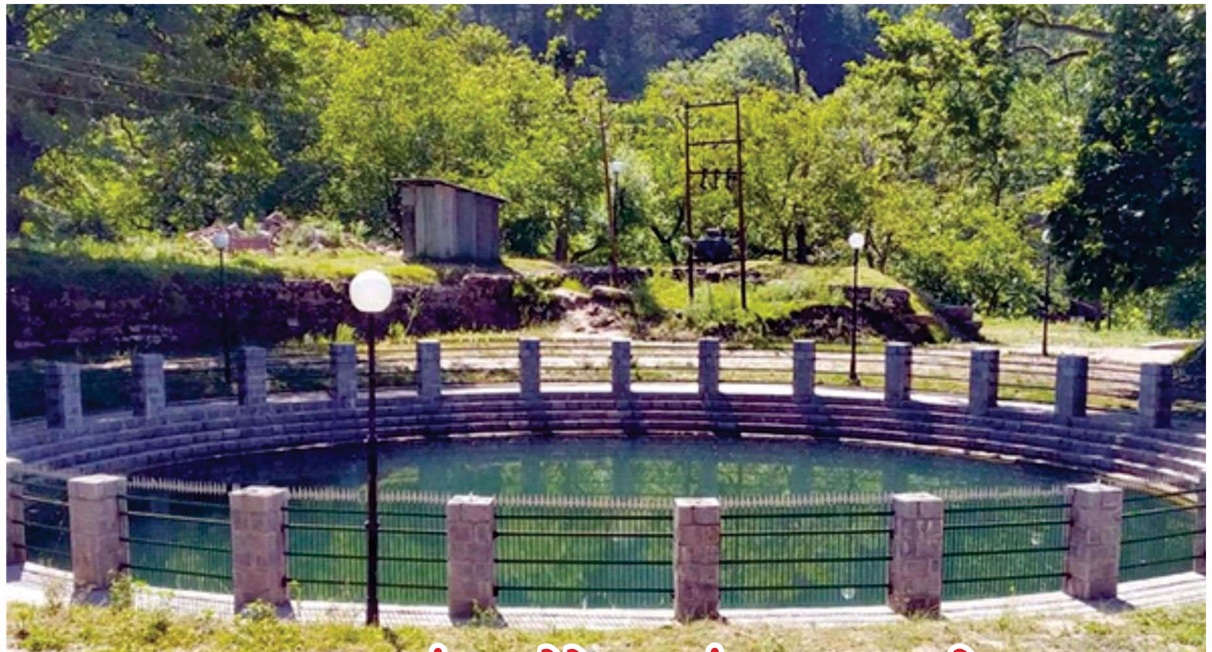
पाप सूदन कुंड, कोटेर, अनंतनाग, कश्मीर

राजा भोज - मंदिर निर्माण

केदार-रामेश्वर-सोमनाथ-सुण्डीर-कालानल-रूद्रसत्कैः सुराश्रयैर्व्याप्य च यःसमन्ताद्यथार्थसंज्ञां जगतीं चकार ॥

पूर्वी सीमा पर सुंदरबन स्थित सुण्डिर, दक्षिणी सीमा पर रामेश्वर, पश्चिमी सीमा पर सोमनाथ तथा उत्तरी सीमा पर केदारनाथ जैसे विख्यात मदीरों का निर्माण तथा पुर्ननिर्माण किया था राजा भोज ने।

राजा भोज परमार या पंवार वंश के नवें राजा थे। परमार वंशीय राजाओं ने मालवा की राजधानी धारानगरी (धार) से आठवीं शताब्दी से लेकर चौदहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध तक राज्य किया था।

उनका जन्म सन् 980 में महाराजा विक्रमादित्य की नगरी उज्जैनी में हुआ। राजा भोज चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य के वंशज थे। पन्द्रह वर्ष की छोटी आयु में उनका राज्य अभिषेक मालवा के राजसिंहासन पर हुआ। प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान डॉ. रेवा प्रसाद द्विवेदी ने प्राचीन संस्कृत साहित्य पर शोध के दौरान मलयाली भाषा में भोज की रचनाओं की खोज करने के बाद यह माना है कि राजा भोज का शासन सुदूर केरल के समुद्र तट तक था। कहा जाता है कि वर्तमान मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल को राजा भोज ने ही बसाया था, तब उसका नाम भोजपाल नगर था, जो कि कालान्तर में **भूपाल** और फिर **भोपाल** हो गया। राजा भोज ने भोजपाल नगर के पास ही एक समुद्र के समान विशाल तालाब का निर्माण कराया था, जो पूर्व और दक्षिण में भोजपुर के विशाल शिव मंदिर तक जाता था। आज भी भोजपुर जाते समय, रास्ते में शिवमंदिर के पास उस तालाब की पत्थरों की बनी विशाल पाल दिखती है।

4. मध्यप्रदेश के सांस्कृतिक गौरव के जो स्मारक हमारे पास हैं, उनमें से अधिकांश राजा भोज की देन हैं, चाहे विश्वप्रसिद्ध भोजपुर मंदिर हो या विश्वभर के शिवभक्तों के श्रद्धा के केंद्र उज्जैन स्थित महाकालेश्वर मंदिर, धार की भोजशाला हो या भोपाल का विशाल तालाब- ये सभी राजा भोज के सृजनशील व्यक्तित्व की देन हैं।

5. उन्होंने केदारनाथ, रामेश्वरम, सोमनाथ, मुण्डीर आदि मंदिर भी बनवाए, जो हमारी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर हैं।

6. राजा भोज का युगबोध, सांस्कृतिक दर्शन और धर्मसम्मत शिक्षा- संस्कार अनोखा था... उन्होंने परंपराओं की रक्षा करते हुए भूत, वर्तमान का समन्वय किया और भविष्य को ध्यान में रखकर अपने समकाल को सँवारकर ऐसी चमक दी कि वह एक सहस्राब्दी बाद आज तक जस की तस है... और दिनो दिन प्रासांगिकता के नए आयाम गढ़ रही है....

राजा भोज ने शिव मंदिरों के साथ ही सरस्वती मंदिरों का भी निर्माण किया। राजा भोज ने धार, मांडव

तथा उज्जैन में **सरस्वतीकण्ठभरण** नामक भवन बनवाए थे जिसमें धार में **सरस्वती मंदिर** सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

एक अंग्रेज अधिकारी सीई लुआर्ड ने 1908 के गजट में धार के सरस्वती मंदिर का नाम **भोजशाला** लिखा था। पहले इस मंदिर में मां वाग्देवी की मूर्ति होती थी। मुगलकाल में मंदिर परिसर में मस्जिद बना देने के कारण यह मूर्ति अब ब्रिटेन के म्यूजियम में रखी है।

आठ वर्ष की अल्पायु में ही माँ सरस्वती के वरद पुत्र राजा भोज को 72 प्रकार की कलाओं, 36 प्रकार के आयुध विज्ञानी का ज्ञान प्राप्त हो चुका था...जिस स्थान पर अनेकों बार माँ सरस्वती के दर्शन एवं उनसे साक्षात्कार हुआ, उसी स्थान पर राजा भोज ने माँ सरस्वती की आराधना एवं साधना के लिए स्वयं की परिकल्पना एवं वास्तु से विश्व के सर्वश्रेष्ठ मंदिर **माँ सरस्वती मंदिर भोजशाला'** का निर्माण किया...यहां पर महाराजा भोज ने ज्योतिष, आयुर्वेद, वास्तु, ज्ञान दर्शन सहित अपने समय के प्रायः सभी ज्ञान विषयों पर कुल 84 ग्रंथों की रचना की। प्रत्येक क्षेत्र में बहुआयामी प्रतिभा वाले ऐसे राजा भोज का समरूप विकल्प विश्व इतिहास में मिलना कठिन ही नहीं..,असंभव भी है। तभी तो वे आज भी **भोज राजा** के रूप में कहानियों-कविदंताय-कथानकों के द्वारा लोगों की स्मृतियों में रचे-बसे हैं...क्योंकि राजा भोज के विषय में तब लिखा गया था-अद्य धारा सदा धारा सदालंबा सरस्वती! पण्डिता मण्डिताः सर्वे भोजराजे भुवं गते !!

स्वतंत्रा जैन लेखक मेरुतुंगा ने अपने प्रबन्ध- चिंतामण में कहा है कि भोज ने अकेले अपनी राजधानी धार में 104 मंदिरों का निर्माण किया। हालांकि, भोजपुर में भोजेश्वर मंदिर एक मात्र जीवित मंदिर है जिसे निश्चित रूप से भोज के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है।[84] जीएच ओझा और आर. नाथ सहित कई इतिहासकारों ने चित्तौड़ में समाधीश्वर शिव मंदिर की पहचान त्रिभुवन नारायण शिव या भोज-स्वामी मंदिर से की है, जिसका श्रेय भोज को दिया जाता है, इसके निर्माण के बाद से मंदिर का कई बार जीर्णोद्धार किया गया है जिसमें से कुछ निम्न हैं - **महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग** पृथ्वी के केंद्र में स्थित श्री महाकालेश्वर मंदिर जो की बारह ज्योतिर्लिंग में सब से प्रमुख है, इसके निर्माण कार्य में राजा भोज का योगदान रहा है।

स्वतंत्रा जैन लेखक मेरुतुंगा ने अपने प्रबन्ध- चिंतामण में कहा है कि भोज ने अकेले अपनी राजधानी धार में 104 मंदिरों का निर्माण किया। हालांकि, भोजपुर में भोजेश्वर मंदिर एक मात्र जीवित मंदिर है जिसे निश्चित रूप से भोज के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है।[8 4] जीएच ओझा और आर. नाथ सहित कई इतिहासकारों ने चितौड़ में समाधीश्वर शिव मंदिर की पहचान त्रिभुवन नारायण शिव या भोज- स्वामी मंदिर से की है, जिसका श्रेय भोज को दया जाता है, इसके निर्माण के बाद से मंदिर का कई बार जीर्णोद्धार किया गया है जिसमे से कुछ निम्न हैं - महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग पृथ्वी के केंद्र में स्थित श्री महाकालेश्वर मंदिर जो की बारह ज्योतिर्लिंग में सब से प्रमुख है, इसके निर्माण कार्य में राजा भोज का योगदान रहा है।

सोमनाथ गुजरात में जब महमूद गजनवी (971-1030 ई.) ने सोमनाथ का ध्वंस किया तो तब राजा भोज ने हिन्दू राजाओं की संयुक्त सेना एकत्रित करके गजनवी के पुत्र सालार मसूद को युद्ध में मारकर सोमनाथ का बदला लिया और फिर 1026-1054 की अवधि के बीच भोपाल से 32 किमी पर स्थित भोजपुर शिव मंदिर का निर्माण करके मालवा में सोमनाथ की स्थापना कर दी।

केदारनाथ ग्वालियर से मिले महान राजा भोज के स्तुति पत्र के अनुसार केदारनाथ मंदिर को राजा भोज ने 1076 से 1099 के बीच पुनर्निर्माण कराया था। राहुल सांकृत्यायन के अनुसार यह मंदिर 12-13 वीं शताब्दी का है। अतः माँ सरस्वती के वरद सुपुत्र महान प्रतापी राजा भोज के नाम सर्वमान्य हैं... राजा भोज न केवल वीर-धीर थे, अपितु कलम के भी धनी थे... वे आदर्श प्रशासक, वर्जिता, कर्वा, शास्त्रज्ञ, कुशल निर्माता, उदात्त चरित से सम्पन्न ऐसे इतिहास पुरुष रहे, जो अपने समय में ही जन-जन के आदर्श बनकर हमेशा के लिए किंवदंती बन गए।

राजा भोज की चंपू रामायण

अनुभूति शर्मा,भोपाल

परमार वंश के नवें सबसे प्रतापी राजा भोज मालवा की धार नगरी के अधिपति थे। राजा भोज का नाम भोजराज तो कहीं भोजदेव, तो कहीं राजा भोज परमार मिलता है।

राजा भोज की **चंपू रामायण** का आधार वाल्मीकि रामायण है। आदि रामायण की परंपरा में रघुवंश कालिदास 5 वीं शताब्दी हकीहरण कुमारदास 6 वीं शताब्दी ,पउमचरिउ विमल सूरी 6 वीं शताब्दी, सेतुबंध आचार्य प्रवरसेन 6 वीं शताब्दी, भट्टिकाव्य या रावणवध महाकवि भट्टि 7 वीं शताब्दी योग वशिष्ठ रामायण 8 वीं शताब्दी, रामचरित अभिनंदन 9 वीं शताब्दी, पंपरामायण 10 वीं शताब्दी, रामायण मंजरी आचार्य क्षेमेन्द्र 11 वीं शताब्दी आदि अनेक महत्वपूर्ण रामायणों की रचना उस समय तक हो चुकी थी तथा राजा भोज की चंपू रामायण का आधार वाल्मीकि रामायण है।

राजा भोज की चंपू रामायण में गद्य भाग संक्षिप्त है तथा पद्यों की बहुलता है। दोनों ही भागों में शब्द पांडित्य के साथ अलंकारों की प्रमुखता लक्षित होती है। चंपू रामायण पर नारायण, रामचंद्र, कामेश्वर, मानवेद, घनश्याम तथा अन्य कई विद्वानों ने इस पर टीका की है।

प्रतीकात्मक चित्र

राजा भोज की चंपूरामायण ने रामकथा को एक नवीन गौरव प्रदान किया। चंपू रामायण छह कांड में है, बालकांड से लेकर सुंदरकांड तक की रचना राजा भोज ने की है। चंपू रामायण का युद्ध कांड लक्ष्मण सूरी ने पूर्ण किया है । चेदिराज कर्ण और गुजरात के प्रथम राजा भीम से युद्ध के दौरान भोज की मृत्यु हुई तब यह चंपू रामायण अधूरा रह गया। यह भी कहा जाता है कि पंडित वेंकटेश ने इस चंपूरामायण का उत्तरकांड पूर्ण किया किंतु वह प्रकाशित नही हैं और न ही उसकी गुणवत्ता चंपू रामायण के समान है। वाल्मीकि रामायण के कांडों का जिन शब्दों से आरंभ हुआ है, उन्हीं शब्दों से भोज ने बाल कांड को छोड़कर अन्य कांड का आरंभ किया है। यह तथ्य इस बात का धोतक है कि राजा भोज वाल्मीकि से कितना प्रभावित थे।

राजा भोज चित्रकाव्य रचना में पारंगत थे। वे शब्द चित्रों की रचना कर ऋ तुओं को जीवंत कर देते थे। कही माघ तो कहीं कालिदास की शैली, अलंकार, रसों का सुंदर प्रयोग।

राजा भोज एक प्रतिभा संपन्न कवि थे उन्होंने भाव प्रसंगो व रामायण के पात्रों को शब्दावतार के रूप में अपने ग्रंथ में हमारे समक्ष प्रकट कर दिया ।

राजा भोज अपने अद्वितीय कला प्रेम विद्वत्ता और वीरता के अनूठे संगम थे। चंपू रामायण में कई रोचक शोधपरक तथ्य राम की वनगमन यात्रा, उड़ने वाले विमान की परिकल्पना, औषधि विज्ञान, युद्ध पद्धति भी मिलते हैं जिन पर शोध कार्य की अनेक संभावनाएं हैं। इस प्रकार चंपूरामायण, संस्कृत भाषा में रचित रामकथा का अनूठा ग्रंथ है। राजा भोज के जीवन और उनके साहित्यिक और सामाजिक कार्यों पर विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में शोध कार्य हो रहे हैं। चंपू रामायण में लोकरंजन तत्वों की भरमार हैं। संस्कृत भाषा की दृष्टि से भी अनूठा ग्रंथ है। राजा भोज द्वारा रचित चंपू रामायण का महत्व इस बात से और भी महत्वपूर्ण है कि भारत मे सर्वाधिक लोकप्रिय होने वाली रामचरित मानस की रचना से छः सौ वर्ष पूर्व लिखा गया ग्रंथ है। चंपू रामायण वैश्विक रामकथा साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

राजा भोज की चंपू रामायण में गद्य भाग संक्षिप्त है तथा पद्यों की बहुलता है। दोनों ही भागों में शब्द पांडित्य के साथ अलंकारों की प्रमुखता लक्षित होती है। चंपू रामायण पर नारायण, रामचंद्र, कामेश्वर, मानवेद, घनश्याम तथा अन्य कई विद्वानों ने इस पर टीका की है। राजा भोज की चंपूरामायण ने रामकथा को एक नवीन गौरव प्रदान किया। चंपू रामायण छह कांड में है, बालकांड से लेकर सुंदरकांड तक की रचना राजा भोज ने की है। चंपू रामायण का युद्ध कांड लक्ष्मण सूरी ने पूर्ण किया है ।

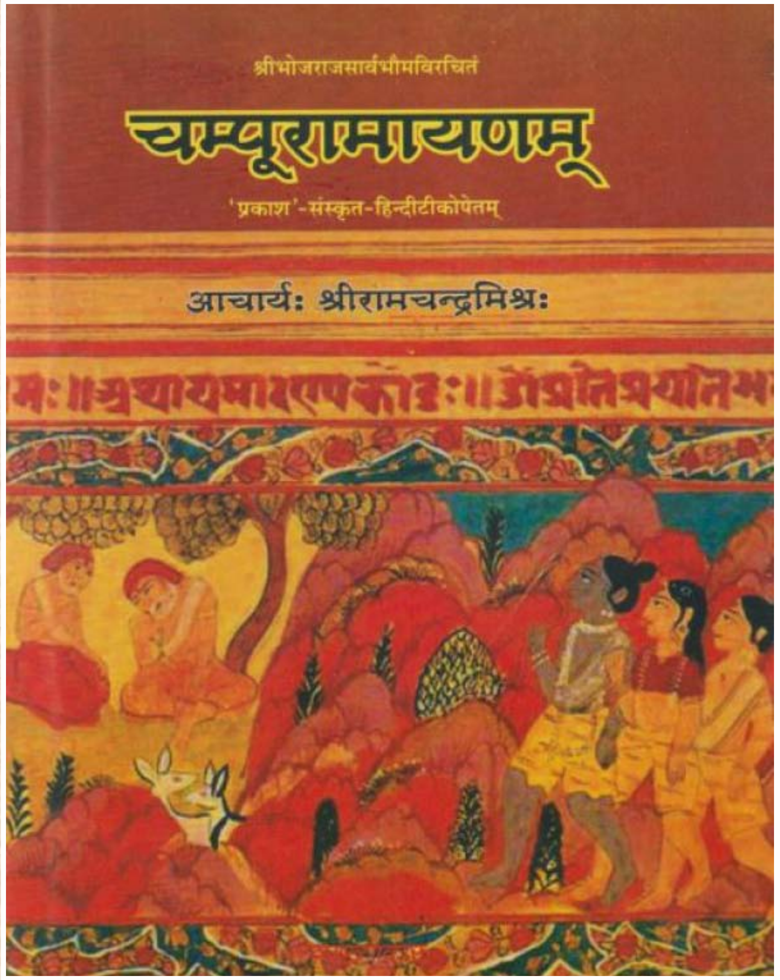

परमारो के वैभव को अस्त हुए सदियां गुजर गईं। राजा भोज अब भी सम्राट अशोक, राजा विक्रमादित्य और राजा हर्ष जैसे महान राजाओं की श्रृंखला में बहुत ही आदर के साथ याद किये जाते हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा के साधक राजा भोज

डॉ. सोनाली नरगुन्दे

राजाभोज भारत के विलक्षण शासक हुए हैं। आपका नाम पराक्रम और शौर्य के लिये जितने आदर से लिया जाता रहा है, उतना ही सम्मान आपको ज्ञान साधना के लिये भी मिला। आपको भारतीय ज्ञान, विज्ञान, साहित्य, कला के साथ ही धर्म का भी गहरा ज्ञान था। औषधशास्त्र, भवन निर्माण, खगोल जैसे विषयों के भी राजा भोज ज्ञाता थे। भारतीय जीवन दर्शन पर भी आपने किताब लिखी। उनकी ज्ञान साधना का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि करीब 85 विषयों पर उन्होंने किताब लिखी। राजा भोज ने भारतीय ज्ञान परंपरा में एक नया अध्याय लिखने का प्रयास किया, जिसमें वे सफल भी हुए। भारत में राजाओं की कीर्तियां समाज में लोक कथाओं के रूप में सुनायी जाती रही है, लेकिन ऐसे कम ही राजा हुए हैं, जिनकी कीर्तियों को लोकोक्ति के रूप में समाज में जगह मिली और वह आज भी प्रासंगिक है। ऐसी ही एक लोकोक्ति भारत में प्रचलित है, जो राजा भोज से जुड़ी हुयी है। **कहां राजा भोज, कहां गंगू तेली** लोकोक्ति राजा भोज के उच्च आदर्श और ज्ञान की प्रकृति की ओर संकेत करते हैं।

राजा भोज के राज में भारतीय ज्ञान परंपरा की बात करें तो एक लंबी विषय श्रृंखला हमारे सामने आती है। धर्म से लेकर विज्ञान तक एक भी ऐसा विषय नहीं है, जिस पर राजा भोज का अपना ज्ञान दर्शन न हो। समरांगणसूत्रधार, सरस्वतीकंठाभरण, राजमार्तंड, योग्यसूत्रवृत्ति, विद्या विनोद, चारू चर्चा, आयुर्वेद सर्वस्व, श्रृंगार प्रकाश, प्राकृत व्याकरण, कूर्मशतक, आदित्य प्रताप सिद्धान्त, भोजचंपू, कृत्यकल्पतरू, शब्दानुशासन, तत्वप्रकाश जैसे कई कालजयी ग्रंथों की रचना राजा भोज ने की। राजा भोज ने अपनी आत्मकथा भी लिखी, जिसका नाम भोज प्रबंधनम् है।

समरांगण सूत्रधार ग्रन्थ वास्तु शास्त्र का सबसे प्रथम ज्ञान ग्रन्थ है, जिसमें राजा भोज ने वास्तु मापन संबंधी सूक्ष्म जानकारी को शब्दों में पिरोया है। इसमें राजा भोज ने वास्तु योजनाओं को एक निश्चित सिद्धांत के साथ पेश किया, जिसका परिपालन आज भी आधुनिक जीवनशैली के परिपालन में भी भवन निर्माण में किया जा रहा है। सरस्वतीकंठाभरण व्याकरण और काव्य शास्त्र पर आधारित थी, तो राजमार्तड योग और ज्योतिष पर। श्रृंगार प्रकाश में नाट्यशास्त्र और काव्यशास्त्र का विस्तृत उल्लेख है तो वृहद्राजमार्तण्ड में धर्मशास्त्र का गहन उल्लेख है। राजमृगांक

में चिकित्सा, आदित्यप्रतापसिद्धांत में खगोल, भुलबुल में धर्म और राज शास्त्र, व्यवहारसमुच्चय में चाणक्यनीति या दण्डनीति पर गहन अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

युक्तिकल्पतरू नामक ग्रंथ में राजा भोज ने अनेक विषयों के ज्ञान को समाहित किया है, जिसमें राजनीति, वास्तु, रत्नपरीक्षा, आयुध, अश्व, गज, वृषभ, नौका जहाज जैसे विषयों का ज्ञान भी विस्तार से है। इतना ही नहीं विभिन्न पालकियों और जहाजों का विवरण भी इस ग्रंथ में किया गया है, जो अपने आप में अद्भुत है। समराङ्गणसूत्रधार सीधे तौर पर यंत्र विज्ञान पर आधारित है। इसमें यंत्र, उनके भेद, विविध यंत्र निर्माण पद्धति को विस्तार से समझाया गया है।

राजा भोज की ज्ञान साधना के कई पहलु रहे हैं। ज्ञान परंपरा के वाहक के रूप में आपने हनुमानजी द्वारा रचित राम कथा के शिलालेखों को समुद्र से निकलवाकर धारा नगरी में स्थापित करवाया, जिन्हें आज भी हनुमान्नाटक के नाम से पहचाना जाता है। इसके बाद ही राजा भोज ने चंपू रामायण की रचना की, जो महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण के बाद सबसे तथ्य परक महाग्रंथ है। आपकी काव्यात्मक ललित अभिरूचि भी गहरी, सूक्ष्म और वैज्ञानिक थी। आप अच्छे कवि, ज्योतिषी और दार्शनिक भी थे, जिस पर उन्होंने समाज को मार्गदर्शित किया। यह कहना गलत नहीं होगा कि ग्रंथों के माध्यम से राजा भोज ने अपनी ज्ञान परंपरा को जीवित रखा। इसके अलावा कई कालजयी ग्रंथ हैं, जिसमें राजा भोज की अमिट ज्ञान परंपरा के दर्शन होते हैं। इसके अलावा भी कई संस्कृत ग्रंथों, नाटकों, काव्यों, लोक कथाओं में राजा भोज की ज्ञान परंपरा का चिंतन झलकता है। राजा भोज ऐसे महान राजाओं में शामिल थे जिनके कारण धारानगरी ज्ञान, कला और संस्कृति के लिये विश्व में प्रसिद्ध हो गयी थी।

ज्योतिष विज्ञान जैसे जटिल विषय पर भी राजा भोज की गहरी पकड़ थी। वे ज्योतिष विज्ञान के गहन अध्येता थे। ब्रह्मांण और पिण्डों की चाल, उनकी दृष्टि और मानव जीवन के बीच के संबंधों को राजा भोज ने गहरायी से समझाया है। ज्योतिष विज्ञान वैसे तो अपने आप में एक अलग ही विषय है, लेकिन राजा भोज की लेखनी इस विषय पर भी उतनी ही गहरायी से चली जितनी अन्य विषयों पर उन्होंने लिखा। आदित्य प्रताप सिद्धान्त, राजमृगांक और राजमार्तण्ड ऐसे ही कुछ प्रमुख ग्रंथ हैं, जिसमें राजा भोज के ज्योतिष के साथ ही खगोल ज्ञान के दर्शन होते हैं। राजा भोज का मानना था कि एक तरफ विभिन्न ग्रह, नक्षत्र, राशियां, मन्दाकिनियां और दूसरी तरफ मानव, प्राणी, वनस्पतियां, खनिज संपदा आदि में एक संबंध है, जो एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं और एक-दूसरे को प्रभावित भी करते हैं। ग्रहों की चाल का मानव जीवन पर सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसी प्रभाव के बारे में राजा भोज ने विस्तार से लिखा है।

राजा भोज के राज में ज्ञान का सर्वोच्च सम्मान था। यही कारण था कि उनके समय में कवियों को राज्य में सबसे ज्यादा आश्रय मिला हुआ था। आइने-ए-अकबरी में लिखे गए आलेखों के अनुसार भोज की राजसभा विद्वानों से भरी हुयी थी, जिसमें नौरत्नों का विशेष उल्लेख मिलता है। कालिदास, भवभूति, बल्लाल, सुबन्धु, मयूर, हरिवंश, शंकर, कपूर, विनायक, मदन, कोकिल, तारिन्द, कविशेखर, शुकदेव, भास्कर, शांडिल्य, प्रभृति जैसे विद्वान राजा भोज की सभा में शोभित होते थे। राजसभा में विद्वानों को स्थान देकर उनके ज्ञान का उपयोग अपने राज्य के उत्थान के लिये करना राजा भोज की ज्ञान परंपरा का ही सूचक है। ज्ञान का वातावरण बनाने के लिये भी राजा भोज ने अपने राज्य में विविध विषयों के ज्ञाता मनीषियों को आश्रय दे रखा था, जो अपने-अपने विषय पर ज्ञान का प्रकाश फैलाते रहते थे। उनकी सभा में धनपाल, हलायुध, पद्मगुप्त, चित्तप, धनंजय, केशव, निचुल, शुभचंद्र, नेमिचंद्र, प्रभाचंद जैसे ज्ञानी विद्वान थे।

हिन्दू धर्म को लेकर राजा भोज का एक अलग ही दर्शन था। इस्लाम के प्रभाव से धूमिल हो चुकी सनातन संस्कृति को एक नया आयाम देने में राजा भोज की महत्वपूर्ण भूमिका रही। आपका हिंदू धर्म के प्रति ज्ञान का ही प्रभाव था कि हिंदू धर्म को बल मिला और लोगों को हिंदुत्व को लेकर अपना नजरिया बदलाना पड़ा। राजा भोज की ज्ञान परंपरा का ही सूचक है कि उन्होंने ऐसे कई विषयों पर भी लिखा, जिसकी कल्पना उस समय नहीं की जा सकती है। उन्होंने कई विषयों पर लिखा, जिस पर आज भी सतही काम ही हुआ है, जो उनके ज्ञान दर्शन को बताते हैं। राजा भोज ने अपने ग्रंथों में विमान बनाने की विधि का विस्तृत वर्णन किया। चित्रों के माध्यम से उन्होंने पूरी विधि को समझाया, जिसकी कल्पना ही नहीं की जा सकती है। नाव और बड़े जहाज बनाने की विधि के भी राजा भोज ज्ञाता थे। इतना ही नहीं उन्होंने रोबोटिक्स पर भी काम किया और धारा नगरी के तालाबों में यंत्र चलित पुतलियों का निर्माण करवाया। तालाबों में पुतलियों का नृत्य करना इसी का परिणाम था। लोहे को जंग नहीं लगने की विधि भी वे जानते थे।

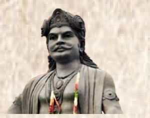

भोज के शासन के समय के कई ताम्रपत्र, शिलालेख, मूर्तिलेख प्राप्त होते हैं, जिसमें राजा भोज की सांस्कृतिक चेतना का प्रमाण मिलता है। राजा भोज ने अपने समय में प्रचलित ज्ञान के संपूर्ण वाड्मय को अपनी लेखनी में समेटने का प्रयास किया। कुछ विषयों को उन्होंने अपने विद्वानों की लेखनी से समेटा जो अपने आप में उनकी ज्ञान पिपासा का दर्शन करवाता है। राजा भोज बड़े साहित्यकार होने के साथ ही अनुसंधानकर्ता भी थे। जीवन का एक बड़ा हिस्सा युद्ध भूमि में गुजारने के बाद भी राजा भोज के ज्ञान की कोई सीमा नहीं थी। उनकी विशाल ग्रंथ श्रृंखला को देखकर कई बार विद्वानजन शंका पैदा करते थे कि कहीं राजाजी ने पुस्तकें अपने राज्याश्रय में रहने वाले विद्वानों से तो नहीं लिखवायी। हांलाकि पुस्तकों के अन्तः साक्ष्य और अन्तः संबंधों से यह स्थापित है कि खुद राजा भोज ने ही इन पुस्तकों का लेखन किया है। वास्तव में राजा भोज त्वरित ग्रंथ लेखन की अद्भुत क्षमता रखते थे और वे बहुविद्याविद् थे। राजा भोज ने विपुल लेखन किया था, जो उनके ज्ञान दर्शन का प्रतीक भी था।

राजा भोज के राज में भारतीय ज्ञान परंपरा की बात करे तो एक लंबी विषय श्रृंखला हमारे सामने आती है। धर्म से लेकर विज्ञान तक एक भी ऐसा विषय नहीं है, जिस पर राजा भोज का अपना ज्ञान दर्शन न हो। समरांगणसूत्रधार, सरस्वतीकंठाभरण, राजमार्तंड, योग्यसूत्रवृत्ति, विद्या विनोद, चारू चर्चा, आयुर्वेद सर्वस्व, श्रृंगार प्रकाश, प्राकृत व्याकरण, कूर्मशतक, आदित्य प्रताप सिद्धान्त, भोजचंपू, कृत्यकल्पतरू, शब्दानुशासन, तत्वप्रकाश जैसे कई कालजयी ग्रंथों की रचना राजा भोज ने की। राजा भोज ने अपनी आत्मकथा भी लिखी, जिसका नाम भोज प्रबंधनम् है।

आदर्श जीवन को लेकर राजा भोज की दृष्टि गहरी थी। उनका मानना था कि स्वस्थ और सुव्यवस्थित जीवन शैली के लिये प्रकृति और पदार्थों का सूक्ष्म निरीक्षण आवश्यक है। प्रकृति को जाने बिना जीवन शैली को अपनाना खतरनाक साबित हो सकता है। जीवन की प्रत्येक गतिविधि की बारीकी से मीमांसा आवश्यक है। जीवन शैली को अपनाने के पहले ऐसे कई राज हैं, जिनके बारे में मुनष्य को पता होना चाहिये, ताकि स्वस्थ और सुव्यवस्थित जीवन को जिया जा सके। मानव को वैज्ञानिक दृष्टि से ही जीवन जीना चाहिये। सुबह उठने के बाद की गतिविधि, वस्त्र क्या धारण करना चाहिये, भोजन का स्वरूप क्या होगा, ॠतु के अनुसार कर्म का क्या परिणाम है जैसे गहरे विषयों पर भी उनका गहरा ज्ञान था। पानी की परिशुद्धता, जल के प्रकारों, उसके उपयोग, वायु शोधन के साथ ही रोगों को भगाने के लिये वनस्पतियों का उपयोग करने जैसे विषय भी राजा भोज की लेखनी में शामिल थे। गंगा, यमुना, नर्मदा, गोदावरी, सरस्वती जैसे देश की प्रमुख नदियों के पानी की विशिष्टता पर भी राजा भोज की पकड़ थी। पशुओं के दूध की गुणवत्ता और रोगों पर उनके प्रयोग और परिणामों को भी राजा भोज जानते थे। वनस्पति और दूध से बने पदार्थों के मिश्रण से रोगों को भगाने का ज्ञान भी राजा भोज के पास था। इतना ही नहीं वे फूलों के रसों के गुणों को भी भली-भांती जानते थे और उससे रोगों को भगाने का ज्ञान रखते थे। भोजन और दिनचर्या से सुखी जीवन बनाने के ज्ञान पर भी राजा भोज ने जमकर लिखा। ग्रंथ चारूचर्या में इन सभी विषयों को समेटा गया है।

राजा भोज के बहुविद्याविद् और ज्ञान साधक होने के कारण ही उन्होंने कई विद्याओं और विषयों को समृद्ध किया। उनके ताम्रपत्र, शिलालेख आज भी बड़ी संख्या में हैं, जो उनके ज्ञान का दर्शन कराते हैं। यह कारण था कि राजा भोज अपने ही युग में एक चरित्र नायक के रूप में स्थापित हो गये थे। वे एक ऐसे नायक बन गये थे, जिनके ज्ञान का प्रकाश न केवल भारत बल्कि विदेशों में भी फैलने लगा था। राजा भोज की पुस्तक चाणक्यमाणिक्य पुस्तक का एक तिब्बती रूप भी प्राप्त होता है। इसी तरह अराजिबुजि नामक पुस्तक मंगोली भाषा में भी है। आश्चर्य की बात है कि उस समय के कई राजा खुद को लघुभोजराज, नवभोजराज, अपर भोजराज कहलवाने में गर्व महसूस करते थे।

45 साल के अपने छोटे से राजकीय जीवन में भी राजा भोज ने ऐसे महान कार्य कर दिखाये, जिसमें उनके विराट व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं। राजा भोज की ज्ञान परंपरा और ज्ञान दर्शन के कारण ही उन्हें सैंकड़ों वर्षों बाद भी प्रासंगिक बनाये हुए हैं। ज्ञान के आधार पर ही मां सरस्वती के वरद पुत्र राजा भोज आज भी सर्वमान्य हैं। वे एक ऐसे ऐतिहासिक पुरूष हैं, जिनका ज्ञान आज हजारों सालों बाद भी समाज को दिशा दे रहा है। वास्तव में देखा जाए तो राजा भोज को सर्वशक्ति सम्पन्न राजा की बजाय ज्ञान सम्पन्न राजा मानना ज्यादा सही होता है। भारत हमेशा ही राजा भोज के ज्ञान का ॠणी रहेगा।

राजा भोज का साहित्यिक अवदान

दुर्गेश कुमार साध, इन्दौर

राजा भोज धार्मिक, कुशल प्रशासक, महान प्रतापी, न्यायप्रिय एवं प्रकांड विद्वान रहे हैं। धर्म, भाषा, विज्ञान, व्याकरण, साहित्य आदि अनेकों विषयों पर आपके द्वारा रचित ग्रंथ इस बात की पुष्टि करते हैं। मान्यताओं के अनुसार आपने लगभग 84 ग्रंथों की रचना की है, मगर दुर्भाग्य से आज इनमें से केवल 21 ग्रंथ ही उपलब्ध हैं। ये ग्रंथ केवल किसी एक ही विषय पर आधारित नहीं हैं, बल्कि हमारे जीवन के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डालते हैं। आपके ग्रंथों के कुछ मुख्य विषय - धर्म, आयुर्वेद, विज्ञान, कला, ज्योतिष शास्त्र, काव्य, वास्तु कला, नाट्य शास्त्र, राजनीति शास्त्र, दर्शन शास्त्र, चिकित्सा शास्त्र, खगोल विज्ञान, संगीत इत्यादि हैं। आपने **भोज प्रबंधम्** नाम से अपनी आत्मकथा की रचना भी की है। आपकी रचनाओं की विविधता एवं विभिन्न विषयों पर अधिकारपूर्वक लेखन यही दर्शाता है कि आप एक असाधारण मनीषी, शास्त्रज्ञ एवं अनुसंधाकर्ता रहे हैं।

राजा भोज की प्रसिद्ध कृतियों में राजमार्तण्ड धर्मशास्त्र पर आधारित है। चाणक्य राजनीति शास्त्र, नीतिशास्त्र का ग्रंथ है। 'समरांगण सूत्रधार' नामक ग्रंथ प्राचीन शिल्प कला संबंधी वर्णनों पर आधारित है। युक्ति कल्पतरू एक विश्व ज्ञान कोष के समान है। यह ग्रंथ राजनैतिक धर्म का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जो कि राज्य व्यवस्था, युद्ध नीतियाँ एवं प्रकार आदि पर विस्तृत प्रकाश डालता है। जैसा कि नाम से ही विदित है - 'प्राकृत व्याकरण' एवं 'शब्दानुशासन' व्याकरण के विभिन्न आयामों और नियमों पर चर्चात्मक प्रकाश डालते हैं। **राजमार्तण्ड** नामक ग्रंथ पतंजलि के योग सूत्रों की व्याख्या करता है। 'सरस्वती कंठाभरण' भी व्याकरण शास्त्र का एक अन्य ग्रंथ है। 'श्रृंगार प्रकाश' काव्य एवं नाट्य शास्त्र पर आधारित ग्रंथ है। 'वृहद्राजमार्तण्ड' एक धर्मशास्त्र का ग्रंथ है। 'राजमृगांक' चिकित्सा शास्त्र पर, वहीं 'आयुर्वेद सर्वस्व' आयुर्वेद के ज्ञान पर आधारित एक अनुपम ग्रंथ है। 'संगीत प्रकाश' नामक ग्रंथ संगीत पर आधारित है। 'राजमार्तण्ड' योग एवं वेदान्त सूत्रों पर आधारित है। 'चारु चर्या' के केन्द्र में आदर्श दिनचर्या क्या होनी चाहिए, इसका तार्किक विवेचन मिलता है। आपके अधिकांश ग्रंथों की शैली एवं शोध की अनुपम दृष्टि से यह ज्ञात होता है कि ये सब एक ही व्यक्ति द्वारा रचित है।

आपके द्वारा रचित कुछ अन्य ग्रंथों में 'सिद्धांत संग्रह', 'योगयसूत्रवृत्ति', 'विद्या विनोद', 'युक्ति कल्पतरु', 'आदित्य प्रताप सिद्धांत', 'कूर्मशतक', 'श्रृंगार मंजरी', 'भोजचंपू', 'कृत्यकल्पतरु', 'तत्वप्रकाश', नाममालिका इत्यादि हैं।

इसके अलावा धार, माण्डवगढ़ और उज्जैन आदि नगरों में बनाई गई भोजशालाएँ, जो कि संस्कृत भाषा के अध्ययन के प्रसिद्ध विद्यालय रहे हैं, अपनी संस्कृति के प्रति आपकी निष्ठा और कर्तव्य को परिलक्षित करता है।

एक राजा के रूप में इतने विद्वान व्यक्ति का होना भारतीय इतिहास की ऐसी अनोखी घटना है, जो दूसरी जगह देखने में नहीं आती। राज्य की बागडोर संभालने के साथ-साथ इतनी अद्भुत शिल्प एवं स्थापत्य कलाओं की रचना करवाना और साथ ही साथ स्वाध्याय कर इतने परिमाण में ग्रंथों की रचना करना आपको एक 'महामानव' की श्रेणी में लाकर खड़ा करता है।

राजा भोज : विद्यापति ठाकुर

डॉ. राजेश रावल 'सुशील'

राजा भोज के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर जो कुछ लिखा गया एवं लोक में जो कुछ व्याप्त है उस पर चर्चा करना मैं इस आलेख में जरूरी नहीं समझता लेकिन जिस **पुरुष परीक्षा** शीर्षक नीति ग्रंथ में राजा भोज के बारे में तीन कथाएं उल्लेखित हैं मैं उस ग्रंथ एवं उसके रचनाकार के बारे में जरूर इस आलेख में कुछ कहना चाहूंगा ।

पुरुष परीक्षा नीति ग्रंथ के लेखक ठा. विद्यापति का जन्म सन् 1360 ई. में स्वीकार किया जाता है। वे एक बहुआयामी साहित्यकार थे। उन्होंने तीन भाषाओं संस्कृत, अवहट्ठ, मैथिली में काव्य रचना की। विद्यापति मूलतः श्रृंगारि कवि थे । उन्होंने 'पदावली' में श्रीकृष्ण राधा को नायक-नायिका के रूप में चित्रित करके श्रृंगार रस से भरे पदों की रचना की जो लोक में काफी प्रचलित हैं। इन्हीं सरस रचनाओं के कारण उन्हें कई उपाधियों से विभूषित किया गया जिनमें **अभिनव जयदेव, कवि शेखर, कवि कंठहार, कवि रंजन एवं कवि कोकिल** आदि उपाधियों से समय-समय पर सम्मानित किया गया । उन्होंने अनेकों संस्कृत ग्रंथों की रचना की और उन्हीं में से एक नीति विषयक अत्यंत मनोरम पुस्तक **पुरुष परीक्षा** की रचना उन्होंने उस समय के प्रतापी राजा शिवसिंह की आज्ञा से की । **पंचतंत्र एवं हितोपदेश** आदि नीति पुस्तकों में जहां पशु-पक्षियों के माध्यम से अप्राकृतिक उपाख्यान देकर प्रकृत घटनाओं का उल्लेख किया गया वहीं इस कृति में लेखक ने सभी कथाएं इतिहास से संबंध रखने वाली रखी ताकि समाज के प्रत्येक वर्ग एवं उम्र के लोगों तक **नीति शिक्षा** के साथ-साथ **व्यावहारिक शिक्षा** का भी ज्ञान पहुंच सके ।

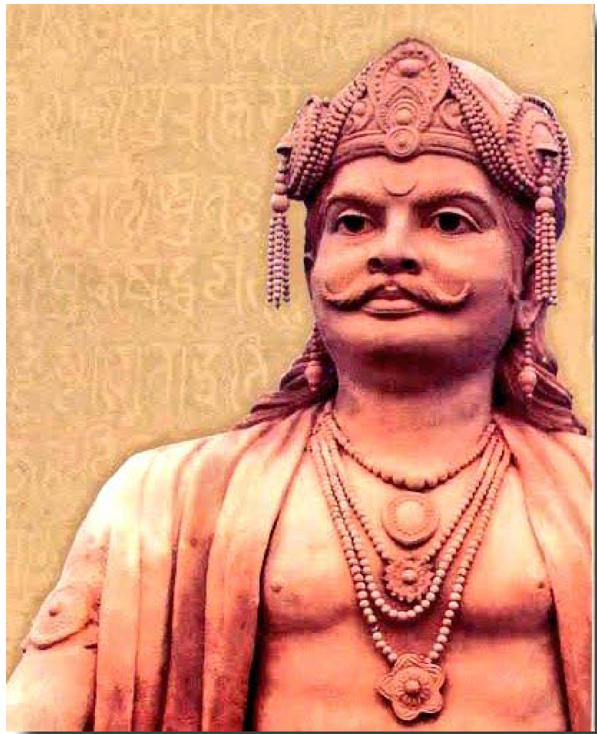

इसी **पुरुष परीक्षा** शीर्षक कृति में में प्रकाशित चवालीस कथाओं में से धारा नगरी के राजा भोज से संबंधित तीन कथाएं प्रकाशित हैं । प्रथम **शस्त्रविद्य की कथा**, द्वितीय **पूजित विद्य की कथा** एवं तीसरी **विदग्ध नायक की कथा** । इन तीनों लोक कथाओं में राजा भोज के व्यक्तित्व से जुड़े कई विषय उद्घाटित होते हैं । प्रस्तुत संस्कृत कृति **पुरुष परीक्षा** को सन् 1926 में **वैदेही शरण प्रकाशन** (हिंदी पुस्तक भंडार, लहेरियासराय, बिहार) से प्रकाशित किया गया । जिसका हिंदी में अनुवाद वाजितपुर, पातेपुर (मुजफ्फरपुर) निवासी देश के विख्यात प्राप्त विद्वान लेखक श्री जनार्दन झा ने किया है । मैं उन लोक कथाओं को विस्तार न देते हुए संक्षिप्त में कहने का प्रयास इस आलेख में जरूरी समझता हूँ ।

चार परिच्छेद में प्रकाशित इस कृति के तीसरे परिच्छेद की शुरुआत में राजा पारावर ने मुनि से प्रश्न किया कि हे मुनि! बुद्धिमान पुरुषों की कथा तो मैंने सुनी अब मुझे विद्वानों की कथा सुनाइए तब मुनि ने राजा पारावर से विद्या की महत्ता, विद्या के चौदह प्रकार एवं विद्याओं की प्राप्ति के चार उपाय संगीत, अध्ययन, अभ्यास और चौथा ज्ञानशक्ति बतलाते हुए राजा से कहा, 'कि जिस गांव में दुराचारी, पापी, दुष्ट प्रवृत्ति के लोग रहते हैं तथा जिस राज्य का राजा मूर्ख होता है, वहां विद्वान दुख पाते हैं । शस्त्र विद्य, शास्त्र विद्य, लोक विद्य और उप विद्य यह चारों सविद्य कहलाते हैं । इसमें से प्रथम शस्त्र विद्या की कथा' कुछ इस प्रकार है -

शस्त्र विद्य की कथा

शस्त्र-विद्या की अपेक्षा, शास्त्र-विद्या हीन ।
शस्त्र-रक्षित देश में, पढ़ते सुशास्त्र प्रवीन ।।
विविध विद्या-कुशल जो है, पुरुष तत्व-अभिज्ञ ।
अस्त्र-शिक्षा में निपुण सो शस्त्र-विद्या विज्ञ ।।

धारा नगरी में विवेक शर्मा नाम का एक ब्राह्मण रहता था उसके बेटे का नाम नीर्विवेक था । विप्र कुल में जन्म लेने के बाद भी वह आचार-विचार एवं वेद विद्या से हीन होकर शिकारियों के साथ शिकार करता था । एक दिन वह अपनी माँ के अनुरोध से शिकार खेलने नहीं गया और घर पर ही रहा । घर के पास स्थित देव मंदिर के शिखर से उसे कबूतरों की आवाज सुनाई दी तो उसके मन में आखेट का विचार आया। उसने मंदिर के शिखर की कोटर में बैठे काले नाग को कबूतरों के बच्चे समझ उन्हें नीचे गिराने का निश्चय किया । जैसे ही मंदिर के शिखर पर चढ़कर, कबूतर के बच्चों के भ्रम में उस कोटर में हाथ डाला वैसे ही वह सर्प उसके हाथ से लिपट कर बाहर आ गया ।

कामुक नर बिन कामिनी, बिन खलता खल मन्द ।
हिंसक नर हिंसा बिना, पाता नहि आनन्द ।।

कबूतर के बच्चों की जगह सर्प को हाथ में आया देख वह अपने प्राणों की रक्षा के लिए जोर-जोर से चिल्लाने लगा । जिससे वहाँ बहुत सारी जनता एकत्रित हो गई लेकिन कोई भी उस ब्राह्मण बालक को बचाने का साहस नहीं जुटा पाया ।

जो बिन बूझे व्यसन में, होता है अभिनीत ।
फल अनिष्ट पा कुमति वह, होता है भयभीत ।।

इस घटना की जानकारी जैसे ही राजा भोज को मिली वह भी उस स्थान पर ब्राह्मण की रक्षार्थ उपस्थित हुए और उन्होंने उसी समय यह घोषणा की कि जो भी इस ब्राह्मण बालक को बचाएगा उसे में एक लाख मुद्राएं दूंगा। यह सुनकर धनुर्विद्या में निपुण सिंहल नामक एक राजपूत ने कहा कि महाराज मैं इस ब्राह्मण की रक्षा एक साधारण उपाय से करूंगा। उससे कहिए कि वह अपने सर्प वाले हाथ को खूब स्थिर कर के ऊपर को उठावें। तत्पश्चात उस धनुर्धर ने अपने धनुष से निशाना साध कर उस सर्प के सिर को काट दिया। मृत सर्प को हाथ से गिराकर वह ब्राह्मण बालक सकुशल नीचे उतर आया। उसे किसी प्रकार की खरोंच तक नहीं आई। राजा ने उस धनुर्धर की शस्त्र विद्या की बड़ी प्रशंसा की। एक लाख स्वर्ण मुद्राओं के साथ ही बहुमूल्य आभूषण, वस्त्र आदि देकर उसे संतुष्ट किया ।

पाया कांचन लक्ष्य, ब्राह्मण का रक्षण किया।
नृप-पूजित भुज-दक्ष, विद्या से होता न क्या।।

इस लोक कथा का उद्देश्य भले ही शस्त्र विद्या की महत्ता को शास्त्र विद्या से ऊपर स्थापित करना रहा हो लेकिन इसके साथ ही यह कथा राजा भोज की अपनी प्रजा के प्रति पुत्र की तरह स्नेह, एक ब्राह्मण के प्रति उनकी निष्ठा के साथ ही राज्य में रहने वाले उन प्रतिभावान लोगों की प्रतिभा को पहचान कर उन्हें उचित सम्मान प्रदान करना भी दर्शाती है ।

पूजित विद्य की कथा

इसी प्रकार इस कृति में प्रकाशित **पूजित विद्य की कथा** शीर्षक से एक छोटी सी कथा कही गई है, जिसमें विद्या अर्थात ज्ञानी, विद्वानों की पूजा एवं सम्मान सर्वत्र होता है इस बात की पुष्टि की गई है।

उत्तम विद्या है वही, जिहि पूजैं भूपाल ।
विभव हेतु, यश हेतु वह, बुध जन को तत्काल।।

धारा नगरी में भोजदेव नाम के राजा थे । उनके आगे किसी **कवि ने इस भाव का श्लोक पढ़ा ।**

सकल समुद्र क्षीर-सागर समान होत ।
बासुकी समान सभी ब्याल दरसावे हैं ।।
शंकर से स्वर्ग में बिराजै देव दिव्य रूप ।
भूधर समग्र हिम-शैल से लखावे हैं ।
एहो भोजराज तूअ कीरति बिशुद्ध जग ।
फैली चहूँ और स्वच्छता की छबि छावे हैं ।।
मेरी ब्राह्माणी के काच-भूषण न जानूँ काहे ।
वैसही लखात दुती मोती की न पावे हैं ।।

यह सुनकर राजा भोजदेव ने काव्य के चमत्कार से प्रसन्न होकर उस कविराज को तुलादान करके बड़े आकार वाले बहुत से मोती दिए। मोती पाकर कविराज कृतार्थ हुए। भोजराज की वह कीर्ति अब भी संसार में गाई जाती है ।

उस अचतुर का राज्य क्या, क्या वदान्य का दान ।
क्या चतुराई चतुर की, जहां न गुण का मान ।।
जो कवि-कला कनक-फल पाती, कल्प-लता को जीतन जाती ।सुयशी भोज गए सुरलोक,
अब पग-पग पावति श्रम-शोक ।।

प्रस्तुत कथा राजा भोज का कवि विद्वान एवं साहित्यकारों के प्रति कितना सम्मान था इस बात को भी दर्शाती है । राजा भोज के विषय में यह किंवदंति काफी प्रचलित है कि राजा भोज कवियों को उनकी एक एक पंक्तियों पर हजारों मुद्राएं दान कर देते थे। यह बात इस लोककथा से भी साबित होती है। साथ ही युवा एवं वरिष्ठ कवियों को मान-सम्मान एवं प्रोत्साहन देकर उन्हें कुछ अच्छा लिखने के लिए सदैव प्रेरित भी करते थे ।

भोज की राजस्व व्यवस्था तथा भोज के व्यापारिक नगर

शक्तिसिंह परमार, संपादक स्वदेश

परमार वंशीय राजा भोज की ग्राम व्यवस्था एवं प्रशासन संगठन व्यवस्था अनुकरणीय उदाहरण पेश करने वाली थी...भोज ने अपने ग्रामीण, प्रशासनिक व्यवस्था के संचालन के लिए पट्टकिल (पटेल) व्यवस्था को अपनाया, जो राजस्व वसूली का काम करते थे... प्रदेश में आज भी वसूली पटेल व्यवस्था निरंतर जारी है...अनेक परमार लोग अपने को पंवार पटेल या परमार पटेल से संबोधित भी करते हैं...भोज की राजस्व व्यवस्था में राजाध्यक्ष, ग्रामटक, गौकुलिक, चौरिक, शैल्किक, दंडपासिक और महत्तम की व्यवस्था थी.., जो राज व्यवस्था में अपनी भागीदारी का निर्वाह करते थे... भोजदेव रचित 'श्रृंगारमंजरीकथा' में इन व्यवस्थाओं का पूर्ण रूप से स्पष्ट उल्लेख मिलता है...

भोज के व्यापारिक नगर

भोज द्वारा स्थापित कर व्यवस्था, नापतौल व्यवस्था, संघ व व्यापार का उनके रचित ग्रंथों, प्रबंधचिंतामणि, भविष्यकर्ता और युक्तिकल्पतरु में स्पष्ट उल्लेख मिलता है.., जिनके अनुसार मालवा राज्य ने उन्नति के नए सोपान तय किए थे... परमार राजवंश और राजा भोज के राजकाज का इतिहास भारतीय इतिहास का स्वर्णिम खंड है, जिसे हमारा देश कभी भी नहीं भुला सकता... राजा भोज भारत की पहचान है... उनके द्वारा निर्मित स्मारक, भवन व रचे गए ग्रंथ हमारी अमूल्य धरोहर हैं...

प्रतीकात्मक चित्र

-भोज की राजस्व व्यवस्था का इतिहास भारत के 500 वर्षों की अर्थव्यवस्था का भी एक अनूठा और भोज द्वारा स्थापित नगरीकरण से विकसित अथुना, उच्चानगढ़, जीरण, उज्जैन, धार, मांडव, भोजपुर, उदयपुर, नेमावर, हरसूद आशापुरी और कलादित्य, ऊन, बीजागढ, ओंकारेश्वर, महेश्वर, धरमपुरी व बावनगजा जैसे व्यापारिक नगरों की आर्थिक गतिविधियों का भी वृहद लेखा-जोखा है...

पत्थरों पर पुस्तक वाली नगरी धार

डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू, - इंडोलॉजिस्ट, उदयपुर

मध्यभारत में जिन दिनों नवीन नगरों की स्थापना और वहां व्यापार सहित ज्ञान विज्ञान के महत्वपूर्ण पक्षों के अध्ययन, अध्यापन का सर्वाधिक प्रयास किया गया था, धार (म.प्र.) उनमें से एक है जिसके विकास और पहचान के लिए राजा भोज (1010 - 55 ई.) ने जो प्रयास किया, उसका कोई सानी नहीं। कल - मशीन और यंत्रों के निर्माण, उपयोग और पञ्च भौतिक ज्ञान, रासायनिक शास्त्र के अध्ययन, अध्यापन की दिशा में यह प्रयास सच में समरांगन सूत्रधार की तरह हुआ

जिसके विषय भारतीयों के अपूर्व अवदान को गौरवान्वित करने वाले हैं। विहग जैसे विमान, विस्फोट, लौह विद्या, वास्तु विन्यास जैसी विद्याओं पर विमर्श के साथ ही विगोपन का प्रयास भी धारा से हुआ ताकि आतंक को रोका जा सके लेकिन विडम्बना है कि धार के उस गौरवशाली पक्ष को भुला दिया गया जबकि यह देश का सम्मानित पक्ष है।

कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन के तत्वावधान में रविवार, 29 दिसंबर, 2019 को धार में राजा भोज महोत्सव में ये बातें न केवल कहने का अवसर मिला बल्कि यह सब देखने का भी अवसर रहा। गौरव इस बात का भी था कि भोजदेव की ऐसी अनेक मान्यताओं वाले ग्रंथों के अध्ययन, अनुवाद का मुझे अवसर मिला है तो ऐसी महिमामय भूमि पर पग पग पर उसके अतीत पर अभिमान हो रहा था। विजय मन्दिर में लौह की लाट के दर्शन हो या नील रंग पुती निर्मितियों के विधान, स्तंभ की रचना और ऊपर लगे पंख जैसे छब्ने, गोख और सोपान सब रोमांचक लगे।

भोजशाला में मानव की ऊंचाई और बांह पसार प्रमाण शिलालेख देख कर दंग रह जाना पड़ता है क्योंकि सिद्धमातृका में ग्रंथों को उत्कीर्ण कर पठन पाठन की अच्छी परम्परा परमारों से अजमेर के चौहानों को मिली। इसको सरस्वती कंठाभरण कहा गया, क्योंकि इसमें भोज के वैचारिक पक्षों को शिलाओं पर खुदवाया गया। यह काम अगली एक सदी तक चला और हमने देखा कि करीब तीस अभिलेख तैयार हुए होंगे। किसी एक जगह ग्रंथों को शिलाओं पर उत्कीर्ण करने का इतना बड़ा काम नहीं हुआ। हालांकि कूर्म शतक, कोदण्ड काव्य जैसे उत्कीर्ण ग्रन्थ प्राकृत, पैशाची में मिले हैं। ये काव्य तब वैसे ही पढ़े पढ़ाए जाते थे, जैसे आज हिंदी के काव्य।

संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश यह त्रिभाषा सूत्र तब शिक्षा में था। यहां पर ही पांव में जड़े शिलालेख और दीवार, छत, स्तंभ पर खुदे लेख किसी कौतुक से कम नहीं है। शिल्पियों के बनाए सूत्र संमत निशान, अपने हस्ताक्षर और संख्यात्मक चिह्न भी खूब खोजे और अपने अध्ययन की एक नई दिशा भी तय की।

भोजदेव (1015-1045 ई.) के लिखे ''समरांगण सूत्रधार'' में प्रासादों की प्रशस्ति में ऐसे 64 प्रकार के मंदिरों का उल्लेख है और उनको संबंधित देवताओं के लिए बनाने का निर्देश है। प्रत्येक देवता के लिए आठ आठ प्रकार के

प्रासाद बताए गए हैं। ये प्रासाद शिव, विष्णु, ब्रह्मा, सूर्य, चंडिका, गणेश, लक्ष्मी और अन्य देवताओं के लिए हैं। प्रासादों की शैली या देवताओं की प्रतिष्ठा के अनुसार उनके लक्षणों को पहचाना जा सकता है।

1. शिव प्रासाद - विमान, सर्वतोभद्र, गजपृष्ठ, पद्मक, वृषभ, मुक्तकोण, नलिन और द्राविड़।

2. विष्णु प्रासाद - गरुड, वर्धमान, शंखावर्त, पुष्पक, गृहराज, स्वस्तिक, रुचक और पुंडवर्धन।

3. ब्रह्मा प्रासाद - मेरु, मंदर, कैलास, हंस, भद्र, उत्तुंग, मिश्रक व मालाधर।

4. सूर्य प्रासाद - गवय, चित्रकूट, किरण, सर्वसुंदर, श्रीवत्स, पद्मनाभ, वैराज और वृत्त।

5. चंडिका प्रासाद - नंद्यावर्त, वलय, सुपर्ण, सिंह, विचित्र, योगपीठ, घंटानाद व पताकिन।

6. विनायक प्रासाद - गुहाधर, शालाक, वेणुभद्र, कुंजर, हर्ष, विजय, उदकुंभ व मोदक।

7. लक्ष्मी प्रासाद - महापद्म, हर्म्य, उज्जयंन्त, गन्धमादन, शतशृंग, अनवद्यक, सुविभ्रान्त और मनोहारी।

इसके अलावा वृत्त, वृत्तायत, चैत्य, किंकिणी, लयन, पट्टिश, विभव और तारागण नामक प्रासाद और बताए गए हैं जो सभी देवताओं के लिए हो सकते हैं। यहां लयन प्रासादों का विवरण रोचक है, यह पर्वतों को काटकर बनाए गए गुहागृहों या प्रासादों के लिए है जैसा कि एलोरा का चित्र दिखाता है, ये कौतुक है या सचमुच, बस सोचना है।

जीवन की क्षणभंगुरता का पाठ - धारा नरेश भोजदेव ने देशवासियों को जीवन की निस्सारता समझाई है।

जीवन की असारता और दान-सेवा की सार्थकता का अपना महत्व है। भोजराज ने वागड़ क्षेत्र का दौर किया और वहां के निवासियों को शिक्षित, दीक्षित करने के उद्देश्य से कर्मकांड करने वाले समुदायों को भूमिदान किया। इस क्षेत्र में परमारों द्वारा भूमिदान का यह पहला प्रमाण है।

बांसवाड़ा ताम्रपत्र के नाम से प्रो. ई. हुल्ट ने इसे भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की ओर से प्रकाशित किया था।

गणितीय गणना के अनुसार यह ताम्रपत्र 24 दिसंबर, 1021 ई. का है, उस दिन मार्गशीर्ष शुक्ला पंचमी, संवत 1076 था। इसमें स्वयं भोजराज हस्ताक्षर है। आज जिस तरह लोग दस्तखत का द. लिखकर अपने हस्ताक्षर करते हैं, वैसे ही भोज ने स्वहस्तोह्ययं लिखकर अपने हस्ताक्षर किए थे - श्रीभोजदेवस्य।

आश्चर्य होता है कि भोज कोंकण विजय पर्व के बाद तीर्थों के स्नान के लिए निकला। माही में स्नान भी उसका लक्ष्य था। ताम्रपत्र की भाषा से प्रतीत होता है कि यहां के विप्रों ने उसको संसार की असारता को बताया, जीवन की सार्थकता परहित में ही निहित बताई। भोज पर बड़ा प्रभाव पड़ा और उसने अपने ही हाथों ताम्रपत्र पर लिखा..... वह चराचर गुरु भगवंत की अभ्यर्चना करके यह जान चुका है कि संसार का सार क्या है, यह संसार हवाओं से छिन्न-भिन्न होने वाले बादल की तरह है, पृथ्वी का आधिपत्य भी बेकार है, विभ्रमकारी है, विषय भोग तिनके आगे टिकने वाले जल बिंदु से ज्यादा महत्व के नहीं है। धर्म ही सर्वोपरि है, इस लोक में और परलोक में भी। संसार चक्र की तरह परिवर्तनशील है। जो कुछ लौहा लिया, वह पश्चाताप के योग्य ही है, **यह जगत विनश्वर स्वरूप वाला है-** भ्रमत संसार चक्राग्र धारामिमां श्रियं। प्राप्येन ददुस्तेषां पश्चाताप परं फल।। इति जगतो विनश्वरं स्वरूपं।

भोजदेव की यह शिक्षा राम के उन शब्दों की पुनर्व्याख्या ही है जिसमें रघुकुलराज ने कहा कि दान ही धर्मसेतु है, उसका भविष्य में होने वाले सभी को सामान्य धर्म की तरह पालन करना चाहिए-

सर्वानेतान्भाविनः पार्थिवेंद्रान्भूयो भूयो याचते रामचन्द्रः।
सामान्योयं धर्मसेतुर्नृपाणां काले काले पालनीयो भवद्भिः।।

(श्रीकृष्ण जुगनू संपादित भोजरचित - राजमार्तण्ड, चौखंबा, 2012 ई., पेज 17)

बिल्कुल सम्राट अशोक की तरह के वचन हैं ये। आत्मगौरव से परिपूर्ण किंतु ये ही वचन स्कंदपुराण में आए हैं। यह लगता है कि इसी काल के आसपास स्कंदपुराण का पुनर्पाठ तैयार हुआ था। उसमें वागड शब्द भी आया है और यहां के गांवों की संख्या भी दी गई है। लगता है, इस पाठ को तैयार करने में वागड वालों ने भी योगदान किया था। इसी समय योगवाशिष्ठ की रचना भी हुई।

राजा भोज का वाहन शास्त्र-शालिवाहन - राजा भोज अपने साहित्यिक अवदान के लिए मशहूर रहे हैं। उनके नामों की उपाधियां चौरासी, दरबार में विद्वान चौरासी, उनकी लिखी किताबें चौरासी। उनकी उम्र चौरासी थी या नहीं, यह तो मालूम नहीं, मगर चित्तौड़गढ़ में कुमारकाल बिताने के बाद 1010 से 1050 ई. तक भोजराज ने राज्य किया और अपने समय के श्रेष्ठ सर्जकों को अपने राजदरबार में आश्रय दिया। स्वयं ने भी कृपाण ही नहीं, कलम उठाई और कई ग्रंथ लिखे। उनका लिखा एक ग्रंथ **शालिहोत्र** है।

शालिहोत्र अश्व का पर्याय है और युद्धोपयोगी इस पशु ने मानव की जो सहायता की, वह रोचक है। जानवरों के स्मारकों के रूप में सिकंदर के समय से ही अश्व की समाधियां बनती रही हैं। चाहे महाराणा प्रताप का अश्व चेतक ही क्यों न हो। अश्व विद्या पर भोज ने जिस शालिहोत्रम् की रचना की, वह संक्षिप्त किंतु गागर में सागर में भरने वाली कृति है। हालांकि अश्वपालन, अश्वशाला व अश्वों के आहार आदि पर भोज ने समरांगण सूत्रधार में भी पर्याप्त लिखा है, वह पहला ग्रंथ है जिसमें पहली बार संक्रमण से बीमारी होने की जानकारी दी गई है।

शालिहोत्र में कुल 138 श्लोक हैं और ग्रंथकार ने अश्व पालन-पोषण, चिकित्सा आदि पर पर्याप्त रूप से जानकारी दी है। वह कहते हैं कि वर्णों के आधार पर श्वेत, लाल, पीले, सारंग, पिंग, नीले और काले घोड़े होते हैं किंतु उनमें सफेद अश्व श्रेष्ठ होता है -

सितो रक्तस्तथा पीतः सारंगः पिंग एव च।
नीलः कृष्णोथ सर्वेषां श्वेतः श्रेष्ठतमः स्मृतः।।

इसके बाद घोड़ों की भंवरियां या आवर्त के बारे में लिखा गया है। अश्व की ऊंचाई आदि के प्रमाण के बाद उनके वेग, उन पर आरोहण, श्लेष्म रक्तलक्षण आदि की जानकारी दी गई हैं। रक्तमोक्षण में कहा गया है कि अश्व के शरीर में 72 हजार नाड़ियां होती हैं और उसके आठ द्वार होते हैं। भोज ने अश्व की ऋतुचर्या को लिखने बाद शरद काल, हेमंत, शिशिर एवं वसंत कालीन रोगों की चिकित्सा की जानकारी है। घोड़ों के नस्य, पिण्ड के क्रम में वे विजलिका नामक औषधि का जिक्र करते हैं जो अश्वों को बल देने वाली है। इस ग्रंथ पर प्राचीनकाल में नकुल के लिखे अश्वचिकित्स ग्रंथ का पूरा प्रभाव है।

धार की यात्रा के दौरान शालिहोत्र का स्मरण हुआ तो याद आया कि यूं भारतीयों के पास अश्व के संबंध में लगभग दो दर्जन ग्रंथ हैं, मगर आज उनमें से एकाध की जानकारी भी शायद ही हो। कभी अश्व विद्या का पठन-पाठन हर आम ओ खास के लिए आवश्यक होता था क्योंकि तब असवारी (सवारी) का मतलब भी अश्व-सवार लिया जाता था। यातायात के लिए यह बेहतर सवारी थी।

धार में सम्पन्न हुए नर्मदा साहित्य मंथन के द्वितीय सौपान की झलकियाँ

धार में सम्पन्न हुए नर्मदा साहित्य मंथन के द्वितीय सौपान की झलकियाँ

लक्ष्य इंटरनेशनल स्कूल, नागदा जं.

DETERMINE DEDICATE DELIVER

(An ISO 9001:2015 Certified Institution)

विशेष सुविधाऐं

* GPS युक्त बस सुविधायें
* CCTV द्वारा सुरक्षित विद्यालय परिसर
* स्विमिंग पूल (मिनी ओलंपिक आकार का)
* इनडोर एवं आउटडोर, अंतर्राष्ट्रीय स्तर की खेल सुविधायें
* स्मार्ट क्लास एवं लेंग्वेज लेब

सुर्वसुविधा युक्त विश्वस्तरीय हॉस्टल

FOR MORE DETAILS - 78798-22277

स्कूल केम्पस : खाचरोद जावरा रोड़ जंक्शन, नागदा जं. (म.प्र.)

ई मेल : support@lisnagda.org वेबसाइट : www.lisnagda.org

CBSE पाठ्यक्रम

कार्यालय नगर पालिका परिषद शाजापुर

* निकाय के बकाया करों का समय पर भुगतान करें।
* पानी अनमोल है। पानी का अपव्यय न करें।
* घर का गीला/सूखा कचरा अलग-अलग कर कचरा वाहन में ही डाले इधर-उधर न फेंके तथा नगर को स्वच्छ रखकर स्वच्छ सर्वेक्षण 2023 में नगर को उच्च स्थान दिलाने में अपना सहयोग दें।
* वृक्ष लगाये पर्यावरण बचाये।
* आवश्यकता से अधिक बिजली का उपयोग न करें।
* बेटी बचाओ बेटी पढाओं।
* शाजापुर को स्वच्छ बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करें।

मुख्य नगर पालिका अधिकारी, नगर पालिका परिषद शाजापुर

भोजशाला की संघर्ष गाथा

अमन व्यास

कहानी धार की है। भोजशाला की है वही धार जिसका सृजन महाराजा भोज ने किया था। महाराजा भोज की संस्कृतनिष्ठा, प्रताप, वैज्ञानिकता और एक प्रजापालक सम्राट होने के विषय में आज भी कहानियां सुनने-पढने को मिलती रहती हैं। ये कहानी राजा भोज द्वारा धार में बनवाई गई भोजशाला की है। राजाभोज सरस्वती के साधक थे, 72 प्रकार की कलाओं के ज्ञाता थे। राजभोज ने विविध विषयों पर चौरासी ग्रन्थ लिखे और वे वास्तु और विज्ञान के महान ज्ञाता थे। सरस्वती के वरद पुत्र राजाभोज को जहाँ अनेक बार भगवती वाग्देवी का साक्षात्कार हुआ, राजा भोज ने उसी स्थान पर विश्व के सबसे उत्कृष्ट सरस्वती माता के मन्दिर का अर्थात 'भोजशाला' का निर्माण कराया। भोज ने इसके निर्माण में अपना समूचा ज्ञान उंडेल दिया। भोजशाला वास्तु का अद्भुत उदाहरण है। पूर्व की ओर मुख किए हुए भोजशाला अपने निर्माण के समय बहुत बडी और बहुमंजिला थी। इस भोजशाला का एक विशाल सभामंडप था, जिसकी छत सैकडों नक्काशीदार स्तंभों (पिल्ररों) पर टिकी हुई थी। भवन में हजारों कक्ष थे। वास्तविकता में भोजशाला संस्कृत अकादमी थी। यहाँ संस्कृत के विद्यार्थी ही नहीं, अध्यापक भी अध्यापन करने आते थे।

भोजशाला का वर्णन बहुत दीर्घ है किन्तु आप इस बात से भोजशाला का महत्व समझ सकते हैं कि कालिदास, माघ, बाणभट्ट, भवभूति, मानतुंग, भास्कर भट, धनपाल जैसे 1400 विख्यात, प्रकाण्ड विद्वानों, धर्मशास्त्रियों, कवियों की साधनास्थली भोजशाला रही है।

भोजशाला के भवन का जो कक्ष उसका गर्भगृह है जहाँ सन 1034 में राजा भोज की आज्ञा से विख्यात मूर्तिकार मंथल ने संगमरमर पत्थर पर माँ सरस्वती की शांतस्वरूपा मनमोहक प्रतिमा को गढा, जिसे गर्भगृह में विराजित किया गया, किन्तु आज वह प्रतिमा लन्दन के संग्रहालय में बंद है। प्रतिमा के लन्दन संग्रहालय पहुंचने के पीछे की कहानी संघर्ष और बलिदान से भरी हुई है। 1239 में अरब से कमाल मौलाना आकर धार में बसा। जादू-टोने के नाम पर धर्मातरण करने लगा, इस्लाम का प्रचार करने लगा। 1305 में इस्लामी आक्रान्ता अलाउद्दीन खिलजी ने मालवा को हराने के उद्देश्य से आक्रमण किया। मौलाना हिंदुत्व की जड को पिछले कई वर्षो से मालवा में बलहीन कर ही रहा था। खिलजी का कार्य सहज हो गया, उसने हिन्दुओं के मानबिन्दुओं को ध्वस्त करना प्रारंभ किया। भोजशाला हिन्दू मानबिन्दुओं में प्रमुख थी तो स्वाभाविक ही उसे भी ध्वस्त करने का कार्य धूर्त खिलजी ने किया।

खिलजी के बाद भी भारत में आक्रान्ता आते गए और भोजशाला ध्वस्त होती रही। जब 1404 में दिलावर खां ने आक्रमण किया तो उसने भोजशाला के सूर्यमार्तण्ड मन्दिर को ध्वस्त कर दिया और भोजशाला के कुछ हिस्से

को मस्जिद में परिवर्तित कर दिया। फिर महमूदशाह ने पूरी भोजशाला को ही मस्जिद में परिवर्तित करने का प्रयत्न किया। कमाल मौलाना की मृत्यु के 250 वर्षों बाद भोजशाला में उसका मकबरा बनाया, जबकि कमाल मौलाना की मृत्यु अहमदाबाद में हुई थी और वहीं उसे दफनाया गया था, फिर भी यह षड्यंत्र रचा गया।

लेकिन इस्लामी आक्रान्ता अपने षड्यन्त्रों में सफल यूँ ही हो गए हों ऐसा कतई नही है। पग-पग पर हिन्दुओं ने अपनी माँ के धाम की रक्षा के लिए कितने ही संघर्ष किये, बलिदान दिए। जब खिलजी ने आक्रमण किया तो वीर गोगादेव और राजा महलकदेव ने हजारों वनवासी शूरवीरों के साथ युद्ध किया, अपने जीते-जी उस आक्रान्ता को भोजशाला में प्रवेश नहीं करने दिया। जब माँ के इन बेटों ने लडते-लडते अपना जीवन बलिदान कर दिया, तब जाकर खिलजी कहीं भोजशाला में प्रवेश पा सका। लेकिन उसका यह मार्ग भी निष्कंटक नहीं था। भोजशाला के आचार्यों और विद्यार्थियों ने काफी संघर्ष किया। पराजित होने पर खिलजी ने उन्हें बंदी बना लिया। 1200 साधकों के संमुख तलवार और कुरान में से किसी एक को चुनने का विकल्प रखा गया। धर्मरक्षकों ने मुक्ति को चुना, सुन्नत को नहीं और इन सब विद्वानों को भोजशाला में वर्षों से अविरत चल रहे यज्ञ में डाल दिया गया, जो किसी कारण से जीवित बच गये उन्हें नारकीय यातनाएं दी गई।

सरस्वती के वरद पुत्र राजाभोज को जहाँ अनेक बार भगवती वाग्देवी का साक्षात्कार हुआ, राजा भोज ने उसी स्थान पर विश्व के सबसे उत्कृष्ट सरस्वती माता के मन्दिर का अर्थात 'भोजशाला' का निर्माण कराया। भोज ने इसके निर्माण में अपना समूचा ज्ञान उंडेल दिया। भोजशाला वास्तु का अद्भुत उदाहरण है। पूर्व की ओर मुख किए हुए भोजशाला अपने निर्माण के समय बहुत बडी और बहुमंजिला थी। इस भोजशाला का एक विशाल सभामंडप था, जिसकी छत सैकडों नक्काशीदार स्तंभों (पिल्लरों) पर टिकी हुई थी। भवन में हजारों कक्ष थे। वास्तविकता में भोजशाला संस्कृत अकादमी थी। यहाँ संस्कृत के विद्यार्थी ही नहीं, अध्यापक भी अध्यापन करने आते थे।

भोजशाला को ध्वस्त करने का और उसके संरक्षण के लिए होने वाले संघर्षों और बलिदान का क्रम कभी नहीं रुका और भोजशाला के लिए इस्लामी आक्रान्ताओं से सतत होते संघर्ष और बलिदान के मध्य ही देश पर अंग्रेजों का शासन हुआ। अंग्रेज धूर्त प्रवृत्ति के थे, वो मुगलों की तरह तलवार से नहीं वरन बुद्धि से हिन्दुओं के मानबिंदुओं को नष्ट कर रहे थे। भोजशाला में सर्वाधिक श्रद्धा का केंद्र भगवती वागेश्वरी की प्रतिमा थी उसे लार्ड कर्जन ने एतिहासिक महत्व की वस्तु बताकर अपने अधीन कर लिया और लन्दन ले गया और मूर्ति आज भी लन्दन में कैद है।

एक तरफ हिन्दू समाज मूर्ति की वापसी और भोजशाला के गौरव की प्राप्ति के लिए संघर्ष कर रहा है तो दूसरी ओर मुस्लिम कट्टरपंथी इसे मस्जिद बनाने का व्यर्थ और तर्कहीन प्रयास कर रहे हैं। स्वतन्त्रता के पश्चात भी तुष्टीकरण की राजनीति के कारण सरकारों ने हिन्दुओं की श्रद्धा को अनदेखा किया। दिग्विजय सिंह ने तो इसकी हद ही कर दी, मुख्यमंत्री रहते हुए हिन्दुओं को वर्ष में मात्र एक वसन्त पंचमी के दिन सशर्त पूजन की अनुमति दी गई और मुस्लिमों को वर्ष भर नमाज की अनुमति दी गई। दिग्विजय सिंह से तो यही आशा थी किन्तु शिवराजसिंह चौहान से नहीं थी। तीन बार प्रदेश के मुख्यमंत्री बन चुके शिवराजजी की ये उदासीनता खटकती है, जैसे हिंदुत्व की बात करना हिन्दुओं के साथ उनका छलावा भर है।

इसलिए अब मध्यप्रदेश सरकार को प्रतिमा को लन्दन से लाने का केंद्र सरकार के सहयोग से सफल प्रयत्न करना चाहिए और भोजशाला को विश्व की सर्वश्रेष्ठ संस्कृत अकादमी बनाने का, भोजशाला के गौरव की पुनः प्राप्ति का अनुष्ठान करना चाहिए। संस्कृत, साहित्य, कला इत्यादि क्षेत्रों में कार्य करने वालों को अपनी अकादमियां, संस्थान धार में प्रारंभ करना चाहिए और संपूर्ण समाज को वाग्देवी की वापसी के लिए सरकार पर तीव्र आन्दोलन का दबाव बनाना चाहिए। साथ ही भोजशाला के उद्भव, वैभव, पराभव के बारे में पढ़ना और जानना चाहिए और अपने स्वजनों को बताना चाहिए। ध्यान में रखने योग्य बात यह है कि वाग्देवी की प्रतिमा का लन्दन से वापस लाना बिल्कुल संभव है। हाल ही में काशी विश्वनाथ कोरिडोर में प्रतिष्ठित अन्नपूर्णा माता की प्रतिमा, अयोध्या में आयी प्रतिमाएं विदेशों से ही लायी गई हैं। इसलिए वाग्देवी सरस्वती की प्रतिमा भी पुनः भोजशाला में आ सकती है और प्रतिष्ठित भी हो सकती है और धारानगरी फिर से विश्व का संस्कृत केंद्र भी बन सकती है। तभी इस असह्य दुःख का शमन होगा और तभी जाकर मात्र वसन्त में ही वसन्त नहीं होगा वरन शिशिर में भी वसन्त होगा।

मां वाग्देवी चालीसा

देवकृष्ण व्यास

मां वाग्देवी की मुक्ति और भोजशाला में उनकी स्थापना हेतु हिंदू समाज प्रत्येक मंगलवार इस चालीसा का पाठ भोजशाला में करता है।

दोहा

वाग्देवी धाम में, पूजन होगा रोज।
सदियों पहले कह गये, सबको राजाभोज।।

चौपाई

जयजयजय वाग्देवेश्वरी, बार बार वन्दन परमेश्वरी।
नित्य करेंगे पूजन अर्चन, दूर भगेंगे सारे दुर्जन।
जन-जन जब हुंकार भरेगा, माता की जयकार करेगा।
जिस दिन हम सब जाग जायेंगे, खिलजी सारे भाग जायेंगे।
सातवार की होगी पूजा, किसी वार कोई ना दूजा।
माता बैठी है लन्दन में, शीश झुकाएं हम वन्दन में।
सात समन्दर पार जायेंगे, वाग्देवी को धार लायेंगे।
यही लक्ष्य है नेक हमारा, कट जाये माता की कारा।
बांधाओं को थमना होगा, नित्य बसन्त जब अपना होगा।
जन-जन के मन की यह निष्ठा, वाग्देवी की प्राण प्रतिष्ठा।
आओ करें हम एक प्रतिज्ञा, नही करेंगे और प्रतिक्षा।
माँ का कोई पार नहीं है, इससे बड़ी सरकार नहीं है।
कितना बड़ा धरम संकट है, पथ में बिछे हुए कंटक हैं।
लहर-लहर- लहर लहरेगा, केवल केसरिया फहरेगा।
कोई रोक नहीं पाएगा, कोई टोक नहीं पाएगा।
घर-घर पूजा थाल सजेगी, मंदिर में घड़ियाल बजेगी।
बोलेंगे सारे के सारे, गूंजेंगे माँ के जयकारे।
हम सब जय-जयकार सुनेंगे, वीणा की झंकार सुनेंगे।
बहुत निकट है लक्ष्य हमारा, इतिहास बताता पक्ष हमारा।
निश्चित विजय हमारी होगी, पूजा की तैयारी होगी।
मंगल मंगलवार करेगा, माता का दरबार सजेगा।
कोई वार रहे ना खाली, आएगी माँ वीणा वाली।
पूजा का संकल्प हमारा, नहीं और विकल्प हमारा।
वाद ना कोई विवाद रहेगा, माँ का आशीर्वाद रहेगा।
बाधाओं का अन्त आएगा, झूम-झूम बसन्त आएगा।
वाग्देवी का बाग सजेगा, और विजय का राग बजेगा।
द्वारे वन्दनवार सजेगी, उस दिन पूरी धार सजेगी।
घर-घर में होगी दीवाली, आएगी माँ हंसों वाली।
धर्म जागरण करना होगा, त्याग समर्पण करना होगा।
इतिहास हमारा बोल रहा है, सारी गुत्थी खोल रहा है।
ऐसा कोई काल नहीं हो, बसन्तरूधिर से लाल नहीं हो।
फड़क रही है भुजा दाहिनी, आएंगी माँ हंस वाहिनी।
माता का सत्कार करेंगे, जय जय जय जयकार करेंगे।
भोजशाला मुक्त करेंगे, सरस्वती से युक्त करेंगे।
सभी करें माता की भक्ति, संगठन में होती शक्ति।
मुट्ठी बंधी रहे ना खोले, चिंगारी बन जाये शोले।
पत्थर पत्थर बोल रहा है, पृष्ठ अतीत के खोल रहा है।
करें प्रतिज्ञा शिखा खोल दें, सरकारों को खुला बोल दें।
सातोंवार हैं हमको प्यारे, नित आएं माता के द्वारे।
होकर के निर्भय सब बोलें, भारत माता की जय बोलें।

दोहा

परमेश्वर है प्रार्थना। ऐसा आए बसन्त
जितने वाद विवाद हो, हो जाए बस अन्त।

लौहस्तम्भ : अद्भुत धातु मिश्रण

श्रीकृष्ण जुगनू

हमारे यहां लौह कितने प्रकार का रहा और उसको भी कितने प्रकार से काम में लिया गया? यह कम रोचक विषय नहीं है। धार में जब मैंने विजय मन्दिर में लौह स्तंभ, के तीन टुकड़े देखे तो क्या क्या याद नहीं आया। दिल्ली, आबू, ऊंटाला आदि के लौह स्तंभ, त्रिशूल तक के कौतुक स्मरण हुए। कैसे कारीगरों ने उल्कापिंडों में लोहा देखा और नाम दिया - बिजलसार। बीजूसार। गीतों में गाया - बजाड़ किंवाड़ कै ताला जडिया छै विजलसार का...!

यज्ञ ने यूप दिए। जलाशयों ने यष्टि दी। सीमाओं ने गोर स्तंभ दिए। जीत पर पहाड़ी जय स्तंभ खड़े हुए। लेकिन, लोहे के स्तंभ खड़े हुए, क्यों?

लौह स्तंभ का राजा चंद्र का लेख इस नवाचार का सूचक और धार का लौह स्तंभ भी उसका उदाहरण है। दिल्ली में होता तो बच्चा-बच्चा जानता। धार में होने से पहचान ही नहीं बनी! लेकिन, इसकी ख्याति होनी चाहिए।

लौह स्तंभ को देखकर किसे आश्चर्य नहीं होता। यह किस धातु का बना कि आज तक उस पर जंग नहीं लगा। ऐसी तकनीक गुप्तकाल के आसपास भारत के पास थी। हां, उस काल तक धातुओं का सम्मिश्रण करके अद्भुत वस्तुएं तैयार की जाती थीं। ऐसे मिश्रण का उपयोग वस्तुओं को संयोजित करने के लिए भी किया जाता था। यह मिश्रण ''वज्रसंघात'' कहा जाता था।

शिल्पियों की जो शाखा मय नामक शिल्पिवर के मत स्वीकारती थी, इस प्रकार का वज्र संघात तैयार करती थी। महा विश्वकर्म पुराण में इसका सुंदर उल्लेख है भी। उस काल में मय का जो ग्रंथ मौजूद था, उसमें इस प्रकार की कतिपय विधियों की जानकारी थी। हालांकि आज मय के नाम से जो ग्रंथ हैं, उनमें शिल्प में मन्दिर और मूर्ति बनाने की विधियां ज्यादा हैं, मगर 580 ई. के आसपास वराहमिहिर को मय का उक्त ग्रंथ प्राप्त था। वराहमिहिर ने मय के मत को उद्धृत करते हुए वज्रसंघात तैयार करने की विधि को लिखा है- अष्टौ सीसकभागाः कांसस्य द्वौ तु रीतिकाभागः। मय कथितो योगोह्ययं विज्ञेयो वज्रसंघातः।। (बृहत्संहिता 57, 8)

मय ने 8:2:1 अनुपात में क्रमशः सीसा, कांसा और पीतल को गलाने का नियम दिया था, इससे जो मिश्रण बनता था, वह वज्रसंघात कहा जाता था। यह कभी नहीं हिलता था और वज्र की तरह चिपकाने के काम आता था। वराहमिहिर के इस संकेत के आधार पर 9वीं सदी में कश्मीर के पंडित उत्पल भट ने खोजबीन की और मय का वह ग्रंथ खोज निकाला था। उसी में से मय का वह श्लोक वराहमिहिर की टीका के साथ लिखा था-

संगृह्याष्टौ सीसभागान् कांसस्य द्वौ तथाशंक। रीतिकायास्तु संतप्तो वज्रायः परिकीर्तितः।। (मयमतम्: श्रीकृष्ण जुगनू, चौखंबा, बनारस, 2008, परिशिष्ट, मय दीपिका)

आज वह ग्रंथ हमारे पास नहीं। मगर, इस श्लोक में कहा गया है कि इस मिश्रण के लिए सभी धातुओं को मिलाकर तपाया जाता था। इसके लिए उचित तापमान के संबंध में जरूर शिल्पियों को जानकारी रही होंगी, वे उन मूषाओं के बारे में भी जानते रहे होंगे, जो काम आती थीं। मगर, क्या हमारे पास इस संबंध में कोई जानकारी है... बस यही तो समस्या है।

राजा भोज और उनका विजय स्तंभ

विश्वनाथ शर्मा

भोज ने धार में विजय स्तंभ, लाट प्रथम चालुक्य विजय के प्रसंग पर खड़ा किया था या द्वितीय युध्द की विजय के बाद। तो बरबस भोजकृत कोदण्डकाव्य शिलालेख की ओर ध्यान जाता है। इसमें भोज के जीवन काल की कतिपय घटनाओं का क्रमबध्द उल्लेख मिलता है। कोदण्डकाव्य में पंक्ति ।। 305 ।। के आगे पंक्ति ।। 312 ।। तक स्तंभ से जयकुंजर हाथी को बाँधने का उल्लेख दिया होकर इसके बाद पंक्ति ।। 460 ।। से ।। 475 ।। में तुरुष्कों से भूमि का रक्षण करने का उल्लेख है। इससे ज्ञात होता है कि तुरुष्कों को सन् 1025 में भगाने के पूर्व स्तंभ खड़ा कर दिया था।

इस काव्य शिलालेख में जयकुंजरस्य थंभो यह वाक्य बड़े महत्व का है। मेरी तो धारणा यह है कि जय यह कुंजर का नाम है। तात्पर्य भोज राजा से पराजित होने के बाद जयसिंह सिंह न रहा, किन्तु अलंकारिक भाषा में कुंजर हो गया था, उस कुंजर को तलवार की किरण प्रताप रूपी रस्सी द्वारा स्तंभ से बाँधा है, क्योंकि सिंह को घंटा या स्तंभ से न तो तब कोई बाँध कर रखता था न आज रखता है। अर्थात् प्रथम चालुक्य विजय के बाद तलवार को किरण रूपी रस्सी से जय नाम के हाथी को धार में स्तंभ से बाँध दिया गया। निश्चय ही तब जय कुंजर जीवित था जो सन् 1042 ई. तक उस अलंकारिक रस्सी से बँधा रहा, मतलब अंकित रहा। यदि स्तंभ नहीं होता तो 18 या 20 वर्ष तक उस जयकुंजर को बाँधा किस चीज से जाता ?

द्वितीय चालुक्य युध्द में तो भोज द्वारा जयसिंह मारा गया था और मरे हुए हाथी को स्तंभ से बाँधकर रखने वाला अभी तक कोई मिला नहीं । अर्थात् सन् 1025-26 के पूर्व धार का लौहस्तंभ खड़ा कर दिया गया था।

भोज राजा मित्र सम्राट् राजेन्द्र चोल की गंगाजल लाने की यात्रा सफल हुई, उसके निमित्त उसने भी गंगकोड चोलपुरम् में सन् 1023 ई. में याने लगभग इसी समय के आसपास कुंड तथा स्तंभ बनवाया था। स्तंभ का उल्लेख करने वाला कोदण्डकाव्य स्वयं भोजकृत हैं। अतः एक ऐसा प्रमाण जिसकी पुष्टि के लिये अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं रहती। किन्तु अन्य कोई समकालीन प्रमाण यदि उपलब्ध हो तो उसको भी देख लिया जाय ।

भोजराज का समकालीन महमूद गजनवी का कृपापात्र अलबेरुनी धार के इस स्तंभ के बारे में कुछ लिख गया है। वह लिखता है कि जब वह मालवा में आया-राजा भोज राज्य करता था, राजधानी धार थी, वहाँ सरकारी भवन के द्वार पर एक लंबाकृति शुध्द चाँदी की खड़ी है, उस पर मानवीय अवयवों के जैसी आकृति दिखलाई देती है। समकालीन लेखक का यह मूलभूत कथन शीघ्रता से परे नहीं फेंका जा सकता, उसने जितना भी लिखा, स्तंभ का वर्णन करने में जितनी बातें होना चाहिए वे सब अलबरुनी के कथन में हैं याने- (1) स्तंभ (छड़ी) का स्थान जहाँ वह खड़ा था। (2) उसका बाह्य स्वरूप और (3) स्तंभ शीर्ष ।

कतिपय पुराविदों का मत है कि अपने भारत भ्रमण में अलबेरुनी धार आया नहीं। नहीं आया होगा, परन्तु धार के बारे में उसने पूछताछ तो की होगी कि नहीं? उसकी पूछताछ में जो बात उसको मालूम हुई उसको वह अपने ग्रन्थ में लिख दिया, उसके वर्णन पर यदि विश्वास नहीं बैठता हो तो उसको भी कसौटी पर परख लिया जाए।

अलबेरुनी मालवा में आया, भोजराज को वह जानता था, उसकी प्रशंसा उसने की हैं। राजधानी धार का नाम उसने दिया है। इतनी बातें जब उसने पूछकर लिखी तो धार में कौन सी चीज देखने योग्य है– वगैरह भी पूछा होगा कि नहीं? तो कहना पड़ेगा कि जरूर पूछा होगा, अन्यथा स्तंभ के बारे में जो वर्णन ग्रन्थ में लिखा गया है किस आधार पर लिखता? उसने धार में एक चाँदी की छड़ी का जो उल्लेख अपने प्रवास वर्णन में किया है वह सुनी-सुनाई बात है, माना । प्रश्न है कि स्तंभ खड़ा होने के पूर्व ही किसी ने अलबेरुनी को धार के स्तंभ को वर्णन की बात सुना दी। अजीब दलील है? जिसने धार और स्तंभ को देखा था उसको अलबेरुनी ने पूछा, क्योंकि बगैर देख-भाले तथा स्पष्ट वर्णन स्तंभ का देते आता नहीं। धार का हाल सुनाने वाले ने इस स्तंभ का वर्णन इसलिये किया कि वह कुछ ही समय पहले खड़ा किया गया था, वास्ते उसकी प्रसिध्दि थी। वह एक अद्भुत चीज थी इसलिए उसकी शोहरत थी। इस ऊँचे लौह स्तंभ को वह अरबी छड़ी नहीं लिखता तो क्या लिखता? स्तंभ जैसे संस्कृत के जोड़ा अक्षरों को अरबी भाषा में शुध्द लिखने का हाल तो सब जानते हैं । धार में

सरकारी भवन के सामने चाँदी की छड़ी जैसी कोई अद्भुत वस्तु खड़ी है इसका इशारा तो वह कर गया है या नहीं? तो क्या इस चाँदी की छड़ी को सरकारी भवन का पहरा देने वाले किसी प्रतिहार या छड़ीहार अथवा चोपहार के हाथ की छड़ी मान ली जाए बुध्दिगम्य बात है। कोई पाँच छह साल पुरानी घटना के वर्णन में चाहे वह सुनी सुनाई हो तो भी बात का बतंगड़ नहीं हो सकता। क्योंकि घटना को अपनी आँखों देखे हुए लोग विद्यमान रहते हैं। यह वजनी अद्भुत लौहस्तंभ एक महान् विजय के स्मरणार्थ और खुशी में एक सम्राट् द्वारा खड़ा किया गया था। चुपचाप किसी को मालूम बेमालूम खड़ा कर देने का प्रसंग तो था नहीं। सैकड़ों आदमी इसको बनाने और खड़ा करने में लगे हांगे, एक तमाशा सा लगा होगा, शुभ मुहूर्त पर इसको खड़ा करने का अनावरण या उद्घाटन का विशाल प्रमाण में जलसा भी हुआ होगा। ऐसे अवसरों पर जलसे आज भी तो होते हैं। बहुत संभव कोंकणग्रहण पर्वणी जैसे किसी साल के राज्य भर में मनाया जाता था पत्थरी स्तंभों की बात छोड़िए, उस समय इतना ऊँचा लौह स्तंभ संपूर्ण भारत में कहीं नहीं था और न आज है। देहली की मौजूदा मेहरौली की लाट तब नहीं खड़ी थी। देहली तो तब एक कस्बा था, गजनवियों से पराजित हो जाने के कारण अनंगपाल को दिल्ली सन् 1052 ई. के लगभग बसानी पड़ी तब वह मेहरौली की लाट कल्हनपुर में जाने कब से गड़ी पड़ी थी और कल्हनपुर तुरुष्कों के अधिकार में था। मौका पाकर अनंगपाल उसको दिल्ली उठा लाया और अपने मंदिर की शोभा का स्तंभ बनाया।

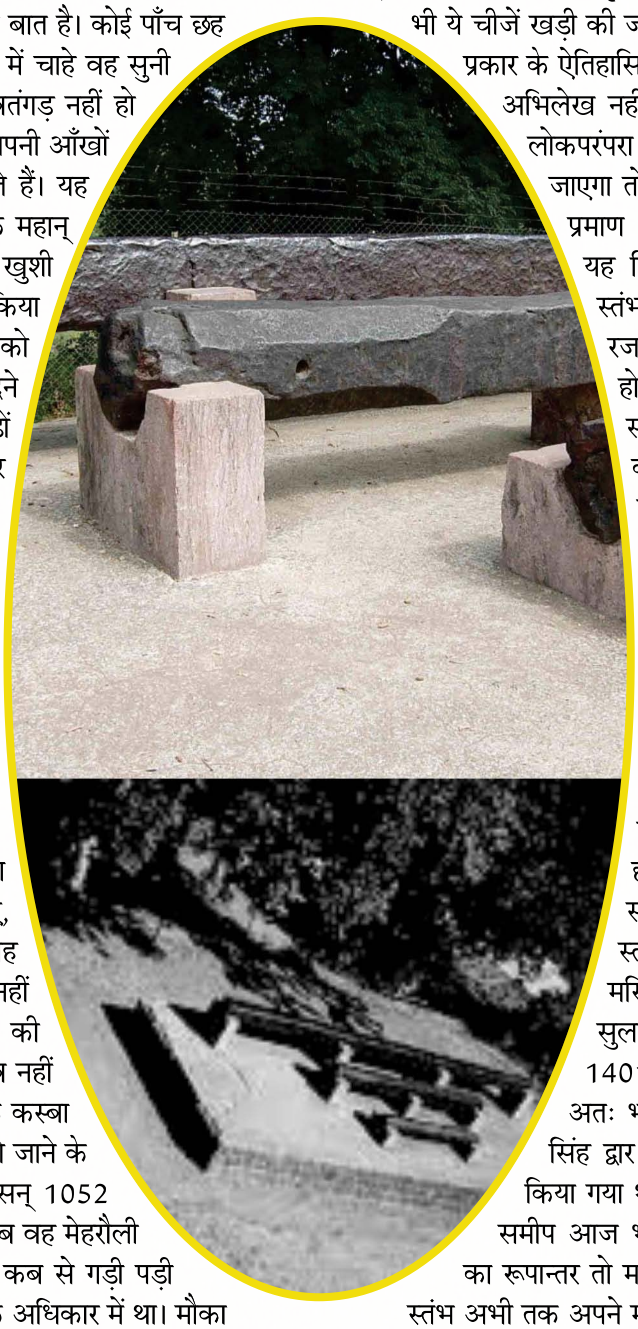

दूसरी बात, विजय स्तंभ या किसी महान पुरुष की प्रतिमा इत्यादि खड़ा करने के कौन से स्थान होते हैं या पसंद किये जाते हैं, इसको विस्तार से यहाँ इसलिए नहीं लिखा जाता कि इसका अनुभव सबको है। सब जानते हैं कि किसी सार्वजनिक उद्यान या शासन का केन्द्रीय कार्यालय, राष्ट्रभवन या राजप्रासाद प्रभृति स्थान पर तब भी और आज भी ये चीजें खड़ी की जाती हैं या रखी जाती हैं। इस प्रकार के ऐतिहासिक विवादों का निर्णय केवल अभिलेख नहीं कर सकते, उदाहरण और लोकपरंपरा को यदि काम में नहीं लिया जाएगा तो बहुधा प्रत्यक्षानुमानादि सब प्रमाण निम्नकोटि के सिध्द होंगे। यह निर्विवाद है कि इस विजय स्तंभ के निकट भोज राजा का रजा प्रासाद या सरकारी भवन होना चाहिए, अलबेरुनी उसको सरकारी भवन लिखता हैं। धार का यह विजय स्तंभ खड़ा हो जाने के लगभग 25-27 वर्ष बाद राजा आनन्दपाल ने भी अपने मंदिर की शोभा बढ़ाने के लिये मेहरौली की लाट खड़ी की थी। तो भोज राजा का राजमार्तण्ड नामक राजप्रासाद जिसका उल्लेख कोदण्डकाव्य में आता है, इस विजय स्तंभ के पास ही होना चाहिए। और वह उस स्थान पर होना चाहिए जहाँ स्तंभ के समीप वर्तमान लाट मस्जिद है, जिसको मालवे के सुलतान दिलावरखाँ गोरी ने सन् 1401-1405 में बनवाया था। अतः भोज के राजप्रासाद के उत्तरी सिंह द्वार पर यह विजय स्तंभ खड़ा किया गया था। मस्जिद के उत्तरी द्वार के समीप आज भी स्तंभ पड़ा है। राजप्रासाद का रूपान्तर तो मस्जिद में हो गया परन्तु लौह स्तंभ अभी तक अपने मूलस्थान पर ही है। तब खड़ा था, अब गिरा पड़ा है। इतनी भारी चीज को उठाकर ले कौन जाय?

प्राचीन सिक्के, मुद्राएँ, मूर्तियाँ और शिलालेख तथा ताम्रपत्र उनके मूल स्थान से सैंकड़ों मील की दूरी पर यत्र-तत्र

पाये गये हैं, इसके कई उदाहरण हैं। सिक्कों को जेब में डाल कर या व्यापार विनिमय के निमित्त मीलों दूर से ले जाना आसान काम था। परन्तु विशालकाय गेरुआ लौह स्तंभ जेब में ले जाने की वस्तु तो थी नहीं, न 10-20 आदमियों से ले जाने की चीज रही। पथरी स्तंभ हो चाहे लौह स्तंभ जैसी वजनी विशालकाय वस्तुओं को बनाने में और इधर उधर ले जाने तथा खड़ा करने का काम गुप-चुप कर लेने का काम तो होता नहीं, ऐसे कामों को हजारों लोग कौतुकवश देखते थे और आज भी देखते हैं। उदाहरणार्थ मालवे से परमारों की सत्ता उठ जाने के बाद यह होता है कि दिल्ली के सुलतान फिरोजशाह तुगलक ने मौर्य सम्राट् अशोक के स्तंभ को टोप्रा (अंबाला) से दिल्ली लाने के लिये उखाड़ा, उस भारी स्तंभ को ढोने-उठाने के लिये 8400 आदमी लगे थे, 42 चाकों पर यह लादा गया। सीरात-ई-फिरोजशाही के कथनानुसार जो सन् 1370 ई. में लिखी गई थी, ज्ञात होता है कि उपर्युक्त स्तंभ को खींचने के वास्ते प्रथम हाथियों की शक्ति का प्रयोग किया गया। बाद में 20000 आदमी उसको नदी तक पहुँचाने में लगे थे, विशाल नावों पर उसको लादा गया और इतने ही आदमी स्तंभ को फिरोजाबाद, दिल्ली में लाकर खड़ा करने में लगे थे।

भोजराज ने धार का विजय स्तंभ राजप्रासाद के सामने खड़ा किया था, हिलियोदोरस और भोज दोनों के स्तंभों को खड़ा करने के हेतु में भिन्नता थी, हिलियोदोरस का स्तंभ भक्ति भाव का द्योतक था अतः विष्णु मंदिर के सन्मुख उसकी स्थापना की गई थी। भोज राजा का विजय स्तंभ - विजय पराक्रम का सूचक था, इसी कारण सरकारी भवन (राजप्रासाद) के सामने खड़ा किया गया था।

धार की यह जगह लोहे की है परन्तु अलबरुनी उसको चाँदी की लिख गया और एक नई उलझन पैदा कर दी। अलबेरुनी लिखता है- शुध्द चाँदी की। सर राबर्ट हेटफील्ड का कथन है कि शुध्द लोहे की और वर्तमान में पड़ी हुई लाट सरासर लोहे की है। लोहे की छड़ी हो या लाट उसको चाँदी की सिध्द कर देने का काम अभिलेख कैसे कर सकते हैं? यह समस्या तो भूतकाल की मानवीय घटनाओं पर रीति-रिवाजों से वर्तमान की घटनाओं का सामंजस्य ही सुलझा सकता है। जिसने धारानगरी देखी थी, उसी से वहाँ का हाल अलबरूनी ने पूछा- उसने चाँदी की छड़ देखी थी वैसा कह दिया और वही बात वह अरबी पंडित अपने ग्रंथ में लिख गया।

मंदिरों के कलशों पर और मसजिदों के गुंबदों पर सोने चाँदी के पतरे चढ़ाने की प्रथा प्राचीनकाल से आज तक भारत में चली आ रही है। केवल माण्डव में ही 300 मंदिरों पर सोने के कलश परमार राजा जयसिंह देव (सन् 1261-80) के मंत्री पेथड़कुमार ने चढ़वाये थे। भारत की राजधानी में भी मस्जिदों के गुंबदों पर स्वर्ण जैसी कोई धातु आज भी चमकती हुई दिखलाई देती है, दीवान-इ-खास में भी कभी सोने के पतरे जड़ने का काम चल रहा था और अमृतसर का स्वर्ण मंदिर प्रसिध्द है। तो अलबेरुनी की शुध्द चाँदी की छड़ी या लाट से यही अर्थ निकलता है। विजय स्तंभ पर भी चाँदी का आवरण चढ़ा हुआ होना चाहिए। संपूर्ण लाट का खुरदरा असमान अंग इसकी पुष्टि करता है कि लाट के ऊपर कोई सुन्दर पोषाक होना चाहिए। लाट का लोहा चाहे जितना शुध्द हो वह चाँदी की चमक नहीं दे सकता था। आज से 600 वर्ष पूर्व भी चाँदी और लोहे के भेद को लोग जानते थे।

एक सम्राट् के राजप्रासाद के मुख्य द्वार पर काले लौह स्तंभ को रोज प्रातःकाल देखना कौन पसंद करता और आज भी करेगा। लोहे को सामने लगभग साठ फुट की दूरी पर प्रांगण में (1) कालायसन (2) पिण्डम् और (3) कृष्णाभिषम् कहा है । इन बातों का विचार होने के बाद लाट पर चाँदी का शिल्पकलापूर्ण सुन्दर ढंग का आवरण चढ़ाकर राजप्रासाद के प्रांगण और सिंह द्वार की शोभा प्रभाव डालने वाले ढंग से निर्माण की गई होगी। चाँदी को (1) शुभम् (2) सौयम् (3) चंद्रालम् (4) हंसालम् और (5) कुमुदासम् कहा है। तो कौनसी धातु का आवरण विजय स्तंभ पर होना चाहिए, इत्यादि बातों की छानबीन भोज की राजसभा और पंडितों की सभा में अवश्य हुई होगी। क्योंकि इस प्रकार के प्रसंग जब आते हैं तो आज भी उसकी छानबीन की चर्चा होती है। ऐसी बातों के प्रमाण अभिलेखों में क्वचित् ही मिलेंगे। यह तो भूतकालीन मानव समाज की घटनाओं के वर्तमान की घटनाओं में मिलान का निष्कर्ष है । इसी को कुछ गहराई से देखने पर पुराण इतिवृत्त आम्नायिका, उदाहरण, धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र इत्यादि का मनोहर समन्वय सामने आता है। इस लौह स्तंभ को अलबरुनी छड़ी लिख गया तो क्या हुआ? जिस चीज की वेदी में गोलाई का व्यास लगभग एक फीट का हो और उसकी लंबाई तिरयालीस या सैंतालिस फुट के करीब हो तो उसको एक छड़ी का स्वरुप प्राप्त होगा या नहीं, यह बात प्रत्यक्ष एवं चित्र खींचकर अनुभव कर लेने की है।

वे पूछते हैं कि भोज राजा ने जब यह स्तंभ खड़ा

जनवरी : 2023 जाग्रत मालवा भोजपर्व विशेषांक 2023

किया था उसके पूर्व उसके राज्य में कहीं कोई प्राचीन स्तंभ खड़ा था क्या? निवेदन है कि उसके गृहराज्य और साम्राज्य में कई प्राचीन स्तंभ खड़े थे। उसके गृहराज्य में ही ग्रीक राजदूत हेलियोदोरस का गरुड़ ध्वज स्तंभ विदिशा में खड़ा था, इस स्तंभ को अब खामबाबा कहते हैं। इस प्राचीन स्तंभ की तिथि भी बताई जा सकती है, वह है ईसा के पूर्व 140 वर्ष का याने भोज के विजय स्तंभ से लगभग 1116 वर्ष से भी अधिक प्राचीन। वह स्तंभ एक ग्रीक हेलियोदोरस ने वैष्णव धर्म अंगीकार करने के बाद वासुदेव भगवान के मंदिर के सन्मुख गरुड़ ध्वज स्तंभ के रूप में खड़ा किया था। वह एकपत्थरी है, याने बगैर जोड़ का। भोजराज ने धार का विजय स्तंभ राजप्रासाद के सामने खड़ा किया था। हिलियोदोरस और भोज दोनों के स्तंभों को खड़ा करने के हेतु में भिन्नता थी। हिलियोदोरस का स्तंभ भक्ति भाव का द्योतक था अतः विष्णु मंदिर के सन्मुख उसकी स्थापना की गई थी। भोज राजा का विजय स्तंभ - विजय पराक्रम का सूचक था, इसी कारण सरकारी भवन (राजप्रासाद) के सामने खड़ा किया गया था। अतः इस पर परमार राजाओं का पराक्रम सूचक स्तंभ शीर्ष होना चाहिए। जिसकी ओर अलबेरुनी संकेत करता है कि उस पर मानव अवयवों की बाह्याकृति जैसा दिखाई देता है। वह अपने ग्रंथ में स्थान देने में सतर्क था, यह अरबी पंडित सूक्ष्म अध्ययन करने के बाद किसी विषय सिध्द हुए बिना नहीं रहा, उसका हेतु ऐतिहासिक और प्रसिध्द स्थानों की जानकारी प्राप्त करने का था न कि भोज के राज्य का गझेटीयर लिखने का था। राजा मुंज और भोज के समय उज्जैन उनकी राजनैतिक और धार कौटुम्बिक राजधानी थी। अलबरूनी ने अपने प्रवास में धार से भिलसा जाने वाले मार्ग पर उज्जैन मुकाम और महाकालेश्वर का भी वर्णन किया है, कई स्थानों के बीच के फासले तक को इस अरबी पंडित ने नमूद किया है। तो अब स्तंभ शीर्ष की मानव आकृति की छानबीन करना आवश्यक हो गया। परमार राजाओं के राजकीय ध्वज पर गरुड़ रहा है, उनके ताम्रपत्रों पर भी सपंख मानवाकृति गरुड़ का चित्र अंकित है। भोज का पिता महाराजा सीयक- हर्षदेव का सन् 666 ई. का ताम्रपत्र और मुंज का सन् 681 का ताम्रपत्र इन दोनों ताम्रपत्रों पर स-पंख मानवाकृति गरुड़ का सुन्दर चित्र अंकित है ।

तो अलबेरुनी ने जो बातें लिखी हैं वे सत्य प्रमाणित हो जाती हैं। वह एक राज्याश्रित पंडित था, भारत भ्रमण में वह जहाँ कहीं भी गया किसी हाट या बाजार के चौराहे पर बैठकर वहाँ का और समीपवर्ती स्थानों का हाल मालूम वहीं कर लेता था। वह विद्वान् होने के कारण उच्चस्तर के लोगों में विद्वान् और अधिकारियों में तथा शासक वर्ग में भी उसका प्रवेश था, विश्वासपात्र लोगों से इतिहास और स्थानीय हाल मालूम करने के बाद उसको अपने प्रवास वृतान्त में लिखता था। अतः स्तंभ शीर्ष पर मानव अवयवों की आकृति दिखलाई देती है उसका वह कथन सत्य है ।

सीयक और मुंज इन दोनों पिता-पुत्र राजाओं के ताम्रपत्रों पर मानवाकृति स-पंख गरुड़ का जो चित्र अंकित है उसकी नाक का झोक गरुड़ पक्षी की चोंच जैसा ही बनाया गया है, एक हाथ में उसका भक्ष्य सर्प है, दूसरा हाथ ऊपर उठा हुआ है, जो उड़ने के वेग का द्योतक है। विकराल सर्प बटदार आकृति में जीभ बाहर निकाले हुए है। गरुड़ का सिरत्राण एक उठावदार टोपी की आकृति का मुकुट जैसा होकर कटिवस्त्र कमरबन्द और हाथों की पहुँचियों पर तथा पिण्डियों पर विरोचित पट्टीनुमा अलंकार दिखाई देते हैं, एक पाँव टिका हुआ और पाँव उठा हुआ गतिमान अवस्था बताता है। सारांश में उस समक्ष मानवाकृति गरुड़ के भाव वीरोचित और पराक्रम सूचक हैं। चबूतरे सहित लगभग पचास फुट ऊँचे स्तंभ के सर्वोपरी भाग में स्थित एक मानव शरीराकृति के बाद अंगों में केवल देह, हाथ, पाँव और मस्तक के सिवाय और कोई अवयव स्पष्ट रूप में दिखाई नहीं दे सकता था।

उपर्युक्त कथन का सार यही कहा जाएगा कि (1) अलबेरुनी ने धार के स्तंभ के बारे में जो कुछ वर्णन किया है वह प्रामाणिक ठहरता है। (2) भोज के समय धार में शुध्द लोहा बनाना जानते थे। (3) सरकारी भवन या राजप्रासाद के सिंह-द्वार के सामने स्तंभ खड़ा किया गया था। (4) संपूर्ण स्तंभ का असमान, ऊबड़-खाबड़ अंग पर सफाई और चमक लाने के लिये कलात्मक आवरण चढ़ाया गया था। अलबरुनी के कथनानुसार वह आवरण शुध्द चाँदी का था। (5) धार का विजय स्तंभ खड़ा होने के पूर्व कई प्राचीन प्रस्तर स्तंभ भोज के राज्य में खड़े थे। (6) इस विजय स्तंभ का शीर्ष समक्ष मानवाकृति गरुड़ था। (7) स्तंभ जहाँ खड़ा किया गया था उसके मूल स्थान पर आज भी पड़ा है। (8) स्तंभ के समीप जहाँ आज लाट मस्जिद है भोज राजा के समय कोई सरकारी भवन या राजप्रसाद खड़ा था। (9) अलबेरुनी के भारत से सन् 1030 ई. में जाने के पूर्व विजय स्तंभ खड़ा कर दिया गया था। (10) घटना का आविर्भाव हुए बिना न तो तत्संबंधी ब्यौरेवार वर्णन लिखा जा सकता है और न कहावत का जन्म होता है, इत्यादि ।

कचोट

प्रो. (डॉ) योगेन्द्र नाथ शुक्ल

आज तालाब के किनारे घूमते-घूमते वह आगे बढ़ गए और राजा भोज की प्रतिमा के पास पहुंच गए। हमेशा दूर सड़क से ही यह प्रतिमा देखी थी, आज इतने करीब से उसे देखकर चकित हो गए।

.... कितना अद्भुत व्यक्तित्व...! जितने महान योद्धा उतने ही महान सृजनकर्ता! तभी उन्हें याद आया कि कुछ दिनों पूर्व जब उन्होंने अपने पोते सुधांशु से भोज के विषय में पूछा तो उसका जवाब था राजा थे... और क्या? उन्हें और क्या शब्द पहले भी कांटे की तरह चुभा था, आज भी वैसी ही पीड़ा दे रहा था। क्या हो गया आज के युवाओं को..? अनन्य शिव भक्त,श्रृंगार प्रकाश जैसे अनेक महान ग्रंथों के रचयिता, जिनकी वीरता और राष्ट्रप्रेम की घटनाओं से इतिहास के पन्ने भरे हुए.... ऐसे महान लोकनायक को आज का युवा नहीं जान रहा! उफ़...! धिक्कार है ऐसी पढ़ाई पर!

जैसे- तैसे उन्होंने खुद को शांत किया और हाथ जोड़कर मूर्ति के सामने जाकर खड़े हो गए। आदरणीय... इन युवाओं की बात का बुरा मत मानिएगा, गलती तो हमारी ही है कि हम उन्हें आप जैसे महापुरुषों से बाकायदा परिचित नहीं करा पाए!

भोज के राज में संस्कृतनिष्ठ लकड़हारा

प्रतीकात्मक चित्र

राजा भोज न केवल स्वयं विद्वान थे..,अपितु विद्वानों का आदर भी बहुत करते थे... धारानगरी में यह नियम था कि कोई भी विद्वान कष्ट नहीं पाये तथा कोई अपठित व्यक्ति राज्य में नागरिक अधिकार प्राप्त नहीं कर सके... भोज के राजकाल में राजभाषा संस्कृत तो थी ही.., जनसाधारण भी संस्कृत भाषा बोलते थे...जनश्रुति है कि एक समय राजा भोज घूमने के लिए नगर से बाहर जा रहे थे तो मार्ग में लकड़ी के भार को सिर पर उठाये लकड़हारा मिला... राजा भोज ने उससे पूछा, 'कि भारो बाधति?' (क्या बोझा कष्ट दे रहा है ?) तब उस लकड़हारे ने उत्तर दिया,- भारो न बाधते यथा बाधति बाधते'। अर्थात्- बोझ (राजा भोज एवं उनकी भोजशाला) से उतना कष्ट नहीं हो रहा है, जितना कि बाधति शब्द कष्ट दे रहा है... **तात्पर्य यह कि राजा भोज के राज्य में एक लकड़हारा भी अच्छी संस्कृत बोलता था...**

DEVI AHILYA VISHWAVIDYALAYA, INDORE

NAAC ACCREDITED 'A+' GRADE

DEVI AHILYA VISHWAVIDYALAYA, INDORE OFFERS FOLLOWING ACADEMIC PROGRAMMES:

AFTER 10+2

Bachelor Degree Programmes (3/4 Years, as per NEP-2020): B.Com., B.A. (Journalism), **B.A.** (Economics), B.C.A., B.Sc. (Applied Statistics and Analytics), B.Sc. (Physics), B.Sc. (Mathematics), B.Sc. (Electronics), **B.A.LL.B.** (Hons.), B.Pharm, B.P.E.S.
Integrated PG Programmes (5-Year): M.B.A. (Foreign Trade), M.B.A.(E-Commerce), M.B.A.(Management Science), M.B.A.(Tourism), M.B.A. (Hospital Administration). **M.Sc.** (Electronic Media), M.Tech. (Artificial Intelligence and Data Science), M.Tech. (IoT), M.Tech. (IT), M.Tech. (Embedded Systems), M.Tech. (Energy and Environmental Engineering), M.C.A.

AFTER UNDER-GRADUATION

Two Years Programmes:
M.B.A. (Advertising & Public Relations/ Business Analytics/ Business Economics/ Computer Management/ Disaster Management/ E-Commerce / Entrepreneurship/ Financial Administration / Financial Services/ Foreign Trade/ Hospital Administration / Human Resource/ International Business/ Marketing Management / Media Management / Public Administration and Policy/ Rural Development/ Tourism Administration).
M.A. (Journalism and Mass Communication/Economics /Functional Hindi-Translation and Literature/Sanskrit Literature /Sanskrit Jyotish /English Literature/Urdu Literature/Performing Arts/Sociology/Political Science/Clinical Psychology/Lifelong Learning for Women Empowerment/Yoga).
M.L.I.Sc., M.S.W., M.Voc. (Interior Design).
M.Com. (Accounting and Financial Control / Bank Management).
M.Sc. (Applied Mathematics/ Biochemistry/ Bioinformatics/ Biotechnology (Industry Sponsored)/ Chemistry/ Computer Science/ Data Science & Analytics/ Electronics/ Electronics & Communication/ Genetic Engineering/ Industrial Microbiology/ Information Technology / Instrumentation/ Life Sciences/ Material Science/ Mathematics/ Pharmaceutical Chemistry/ Physics/ Statistics).
LL.M. (Business Law)
M.E.: Computer Engineering (Software Engg.)/ Electronics (Digital Communication)/ Electronics (IOT & System Design)/ Information Technology (Information Security)/Industrial Engg. & Management/ Mechanical Engineering (Design & Thermal Engineering).
M.TECH.: Big Data Analytics/ Computer Science/ Data Science/ Embedded Systems/Energy and Environment/ Energy Management/ Information Architecture & Software Engineering/ Internet of Things (IOT)/ Instrumentation/ Laser Sc. & Applications/ Network Management & Information Security.
M.Pharm. (Pharmaceutical Chemistry).
One Year Programme: Bachelor of Journalism (B.J.)

PART-TIME/ EXECUTIVE PROGRAMMES

Programmes: M.E./M.TECH. (Part-Time/ Executive)
M.E.(Part-Time): Computer Engineering (Software Engg.), Electronics (IOT & System Design), Electronics (Digital Communication), Industrial Engg. & Management, Mechanical Engineering (Design & Thermal Engineering), Information Technology (Information Security).
M.Tech. (Executive): Computer Science, Data Science, Embedded Systems, Instrumentation, Energy Management.
M.B.A. (Executive).

CERTIFICATE/ DIPLOMA/ PG DIPLOMA PROGRAMMES

CERTIFICATE PROGRAMMES:
French, German, Translation and Literature, Performing Arts, Labour Law and Personnel Management, Consumer Psychology and Advertising, Guidance and Counselling, Human Rights.
DIPLOMA PROGRAMMES:
Performing Arts, Dramatics, Consumer Psychology and Advertising, Interior Designing, Logistics & Supply (Cargo Management).
PG DIPLOMA PROGRAMMES:
Computer Applications, Advanced Translation and Functional Hindi, Guidance and Counselling, Human Rights, Labour Law and Personnel Management, Yoga Therapy, Population Education and Demography.

Ph.D. PROGRAMMES

Applied Chemistry/Applied Mathematics/Applied Physics/ Biochemistry/ Biotechnology/ Botany/ Chemistry/ Commerce/ Computer Science/ Computer Engineering/ Data Science/ Drawing and Painting/ Economics/ Education/ Electronics/ Electronics and Telecommunication/ Electronics and Instrumentation/ Energy and Environment/ English/Geography/ Hindi/ History/ Home Science/ Information Technology/ Instrumentation/ Journalism and Mass Communication/ Law/ Life Science/ Management/ Mathematics/ Mechanical Engineering/ Music/ Pharmacy/ Philosophy/ Physical Education/ Physics/ Political Science/ Psychology/ Sociology/ Social Work/ Statistics/ Urdu/ Yoga/ Zoology

REGISTRAR

असाधारण व्यक्तित्व के धनी - राजा भोज

राजेश्वरी भट्ट

भारत में बहुत से ऐसे महान राजाओं का जन्म हुआ जो अपने शौर्य, पराक्रम, बुद्धिमत्ता और प्रजा की सेवा के लिए जाने जाते हैं। उन्हीं वीर प्रतापी राजाओं में से एक महाराजा भोज भी थे, जो अपने पराक्रम, देशभक्ति, ज्ञान और सनातन धर्म के उद्धार के लिए जाने जाते हैं।

राजा भोज, परमार वंश के राजा थे। उनका जन्म मालवा प्रदेश की ऐतिहासिक नगरी उज्जयिनी में परमार वंश के राजा मुञ्ज के छोटे भाई, सिन्धुराज के घर 980 ईस्वी में हुआ था। राजा भोज, महाराजा विक्रमादित्य के वंशज थे।

अपनी प्रखर प्रज्ञा के कारण उन्होंने महज 8 वर्ष की अल्प आयु में ही संपूर्ण वेद-पुराण, समस्त विद्या-कला और आयुर्विज्ञान का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। प्राकृतिक नेतृत्व क्षमता के साथ जन्मे अद्वितीय, आकर्षक व्यक्तित्व के धनी राजाभोज जब 15 वर्ष के थे तब ही उन्हें मालवा का राजा बना दिया गया था। राजा भोज ने जब राज संभाला तब भारत 57 भागों में विभक्त था। उनका स्वप्न था, भारत को, अखंड भारत के रूप में देखना। उनके इसी स्वप्न ने प्रण का रूप ले लिया और अनेक राजाओं के विरोध के उपरांत भी उन्होंने देश-धर्म की रक्षा के लिए तलवार उठाई और स्वयं को सिद्ध कर दिया इतिहास के सबसे बड़े योद्धा के रूप में। राजा भोज को उनके इसी पराक्रम और सुशासन के कारण भारत ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व में नव विक्रमादित्य के रूप में जाना जाने लगा।

राजा भोज के साम्राज्य की राजधानी धार, मालवा क्षेत्र में स्थित थी, जहां परमार वंश के राजाओं ने आठवीं शताब्दी से 14 वी शताब्दी तक राज्य किया। राजा भोज के शासनकाल के दौरान इस्लामी आक्रांताओं ने भारत की सनातन संस्कृति और धर्म को खतरे में डाल दिया था। महान शिवभक्त राजा भोज को अपने धर्म और संस्कृति का निरादर स्वीकार नहीं था, यही कारण था कि उनके इसी साहसिक दृढ़ संकल्प ने हिन्दुत्व और सनातन को नया आयाम दिया, जिसके कारण सनातन, धर्म, संस्कृति और हिंदुत्व की भावनाओं को बल मिला और सनातन धर्म पुनः चारों दिशाओं में आलोकित हो उठा।

प्रतीकात्मक चित्र

राजा भोज ने अपने जीवन में देश और हिन्दुत्व की रक्षा के लिए अनगिनत युध्द किए, उनमें असाधारण योग्यता थी। इतिहास के अनुसार 1000 वर्षों में भी उनके समान कोई प्रतापी राजा नहीं हुआ। राजा भोज मात्र एक योद्धा और कुशल शासक ही नहीं थे अपितु वह एक विद्वान राजा, श्रेष्ठ कवि, दार्शनिक, ज्योतिषी, काव्य शास्त्र और व्याकरण में भी निपुण थे। साहित्य के प्रति, मोह रखते हुए उन्होंने विभिन्न विषयों पर अनेक ग्रंथों की रचना की । उनकी रचनाओं में प्रमुख रचनाएं थीं, सरस्वतीकंठाभरण, श्रृंगारमंजरी, चंपूरामायण, चारुचर्या, तत्वप्रकाश, व्यवहारसमुच्चय आदि। मान्यता अनुसार उन्हें 64 प्रकार की सिद्धियां प्राप्त थीं। उन्होंने 84 ग्रंथ लिखे, जिसमें धर्म, ज्योतिष, आयुर्वेद, व्याकरण, वास्तुशिल्प, विज्ञान, कला, नाट्यशास्त्र, संगीत, योगशास्त्र, दर्शन, राजनीतिशास्त्र आदि सम्मिलित हैं।

1000 वर्षों में भी उनके समान कोई प्रतापी राजा नहीं हुआ।राजा भोज मात्र एक योद्धाऔर कुशल शासक ही नहीं थे अपितु वह एक विद्वान राजा, श्रेष्ठ कवि, दार्शनिक, ज्योतिषी, काव्य शास्त्र और व्याकरण में भी निपुण थे। साहित्य के प्रति, मोह रखते हुए उन्होंने विभिन्न विषयों पर अनेक ग्रंथों की रचना की । उनकी रचनाओं में प्रमुख रचनाएं थी, सरस्वतीकंठाभरण,श्रृंगारमंजरी, चंपूरामायण, चारुचर्या, तत्वप्रकाश, व्यवहारसमुच्चय आदि। मान्यता अनुसार उन्हे 64 प्रकार की सिद्धियां प्राप्त थी। उन्होंने 84 ग्रंथ लिखे, जिसमें धर्म, ज्योतिष, आयुर्वेद, व्याकरण, वास्तुशिल्प, विज्ञान, कला, नाट्यशास्त्र, संगीत, योगशास्त्र, दर्शन, राजनीतिशास्त्र आदि सम्मिलित हैं।

राजा भोज स्वयं प्रखर प्रज्ञा और तेजस्वी व्यतित्व के स्वामी थे, उन्होंने सदैव विद्वानों और साहित्यकारों का आदर- सम्मान किया। उनका राजकाल मां वाग्देवी (सरस्वती) और देवी लक्ष्मी दोनों के वरदान से युक्त था, उनकी सभा सदा अपने विषयों में प्रकांड पंडितों और ज्ञानियों से सुशोभित रहती थी। **भोज प्रबंधन** उनकी आत्मकथा है जिसमे उन्होंने स्वयं के जीवन, उसके उद्देश्य और आचरण के बारे में वर्णन किया था। मालवा के इस चक्रवर्ती, काव्य और वास्तुशास्त्र में दक्ष और राजा भोज के जीवन और कृत्यों पर विश्व के अनेक विश्व विद्यालयों में शोध कार्य जारी है, जो हमें उनकी सांस्कृतिक चेतना का प्रमाण देता है।

राजा भोज के शासन में मालवा क्षेत्र में अपूर्व स्थापत्य कला के मानक, जैसे, मंदिर, भवन, तालाब और प्रतिमाओं के निर्माण दृष्टिगत होते हैं । मंदसौर में हिंगलाज गढ़ में आज भी तत्कालीन अप्रतिम प्रतिमाओं के अद्वितीय रूप को देखा जा सकता है। भोजपुर में आज भी विशाल किन्तु खंडित शिव मंदिर भोज की रचनाधर्मिता और इस्लामिक जेहाद के विध्वंस के प्रमाण स्वरूप स्थित है। मध्यप्रदेश में सांस्कृतिक गौरव के प्रतीक जो स्मारक हैं, उनमें से अधिकांश राजा भोज की ही देन हैं। विश्वप्रसिद्ध भोजपुर मंदिर, महादेव भक्तों के श्रद्धा केन्द्र, उज्जैन स्थित महाकालेश्वर मंदिर, धार की भोजशाला, भोपाल का विशाल तालाब, ये सभी राजा भोज के सृजनशील व्यक्तित्व की ही देन हैं। इन सभी मंदिरों तथा स्मारकों की स्थापत्य कला बेजोड़ है, इन्हे देखकर सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि एक हजार वर्ष पूर्व हम इस क्षेत्र में कितने समुन्नत थे।

राजा भोज शिक्षा-भाषा-संस्कृति के भी समर्थ संवाहक रहे हैं। जहाँ एक ओर हम उन्हें शिव भक्त और वाग्देवी के उपासक के रूप में देखते हैं, वहीं दूसरी ओर उनकी कृतियाँ उनके महान दार्शनिक स्वरूप को दर्शाती हैं । राजा भोज ने अपने जीवन काल जो कार्य किए वह अचंभित करने वाले हैं, कोई देव पुरुष ही ऐसा कर सकता है।

राजा भोज का व्यक्तित्व एक उच्च आदर्शवादी, उदार प्रकृति, शूरवीर, विद्वान, पराक्रमी एवं प्रजावत्सल राजा का था। जिन्होंने न्याय और नीतिपूर्वक शासन,अपनी प्रजा का पालन और रक्षण किया। भारत के इतिहास में राजा भोज के गुणों से युक्त दूसरा राजा नहीं हुआ। महाराजा भोज ने अधर्म और अन्याय से जमकर लोहा लिया और अनाचारी क्रूर आतताईयों का मानमर्दन किया, अपने प्रजा वात्सल्य,धर्म रक्षक, साहसिक निर्णय क्षमता और साहित्य-कला अनुराग से वे संपूर्ण मानव जगत के लिए एक आदर्श प्रतिमान बन गए।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे राजा भोज

मनीषा व्यास

मध्य युग के प्रसिध्द शासकों में राजा भोज का अपना विशेष स्थान है।राजा भोज की ख्याति विद्वत्ता तथा विद्या एवं कला के उत्थान के लिए अधिक नजर आती है। राजा भोज एक साधक के रूप में सामने आते हैं। काव्य साधना ने उन्हें कविराज बना दिया। भोज की रचनाओं में सरस्वती कण्डाभरण, श्रृंगार मंजरी, भोज चंपू युक्ति कल्पतरु, समरांगन सूत्रधार तत्व प्रकाश शब्दानुशासन, राज मृगांक विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

राजा भोज कला , संस्कृति, संस्कार का बीज बोकर दुनिया को सम्मोहित कर गए। उनकी दानशीलता के लिए एक कहावत मशहूर है वे हर कवि को हर श्लोक पर एक लाख मुद्राएं दिया करते थे। भोज का दरबार कवियों विद्वानों से भरा रहता था। कहा जाता है कि कर्तव्य निष्ठ, दयालु, दानवीर, आज्ञापालक, दृढ़ता, जिज्ञासु प्रवृति, वीर योद्धा की तरह जूझने की क्षमता, सर्व शक्तिमान एक बेहतर शासक में होना चाहिए। राजा भोज की विद्वता, उनके शासन का तरीका और प्रजा के प्रति संवेदनशीलता उन्हें विशेष बनाती है। राजा भोज कुशल प्रशासक होने के साथ-साथ शिक्षा-भाषा-संस्कृति के संवाहक रहे। वे सरस्वती के उपासक महान दार्शनिक थे, अनेक काव्य ग्रंथ और व्याकरण ग्रंथों की रचना कर साहित्यिक व्यक्तित्व का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने धर्म खगोल, विद्या, कोश रचना, भवन निर्माण, काव्य, औषध शास्त्र आदि विषयों पर पुस्तकें लिखीं।

भोज एक प्रतापी राजा, कवि ,ज्योतिषी और दार्शनिक थे। वे जमीन से जुड़े थे। प्रजा की कठिनाइयों को घूम घूमकर स्वयं पता लगाया करते थे। उच्च आदर्श प्रवृत्ति की ओर संकेत करता उनका व्यक्तित्व आज के युग में जीवन जीने की दिशा प्रदान करता है।

एक घटना उनके जीवन के साहस से जुड़ी है। राजा भोज धारा नगरी के सिंधुल नामक राजा के पुत्र थे। जब ये पांच वर्ष के थे तब ही इनके पिता का स्वर्गवास हो गया था। इनके लालन-पालन की जिम्मेदारी उनके छोटे भाई राजा मुंज पर थी और मुंज इनकी हत्या करना चाहते थे। उन्होंने बंगाल के वत्सराज को बुलाकर भोज की हत्या का भार इन पर सौंप दिया था। वत्सराज इन्हें देवी के सामने बलि चढ़ाने के लिए ले गया। वहां पहुंचने पर जा जब भोज को यह पता लगा कि उन्हें बलि चढ़ाया जायेगा, तब उन्होंने अपनी जांघ चीरकर उस रक्त से बड़ के एक पत्ते पर दो श्लोक लिखकर वत्सराज को दिए, और कहा कि यह चाचा मुंज को दे देना। यह सब देखकर वत्सराज का मन परिवर्तित हो गया। उसने इनकी हत्या नहीं की, इन्हें अपनी बहन के यहां ले जाकर छिपा दिया। जब वत्सराज भोज का कृत्रिम कटा हुआ सिर लेकर मुंज के पास पहुंचा और उसने भोज के लिखे हुए श्लोक दिए । तब मुंज को बहुत पछतावा हुआ वे बहुत विलाप करने लगे। यह देखकर वत्सराज ने सही बात बता दी और भोज को लाकर उनके सामने खड़ा कर दिया। और मुंज ने सारा राज्य भोज को दे दिया और स्वयं वन को प्रस्थान कर गए।

इस घटना से पता चलता है कि राजा भोज बचपन से ही साहसी, पराक्रमी और निडर थे, मौत का सामना करने में भी पीछे नहीं थे।

शक्ति, कला, संस्कृति से समृद्ध राजा भोज का राज्य

मनीष खेड़े, मंडलेश्वर

महान शिवभक्त राजा भोज धार्मिक एवं सनातनी व्यक्तित्व वाले थे। उनकी शिव भक्ति की ख्याति दसों दिशाओं में व्याप्त थी। विश्व प्रसिद्ध भगवान महाकालेश्वर उज्जयिनी का मन्दिर आज भी राजा भोज की भक्ति और सनातनी परंपरा का अखंड दीप है जो समूचे विश्व में हिन्दू धर्म की अलख ज्योत जगाता प्रतीत होता है। आज जब हम महाकाल लोक का दर्शन करते हैं तो अपने मन में अत्यंत गौरवशाली क्षण का साक्षात्कार करते हैं। महाकाल लोक की भव्य भक्तिमय ऋचाएं आज भी मन को शिव में रमा देती हैं। तन मन शिव ही शिव, जीवन शिव ही शिव के भावों का प्राकट्य यहां स्वभाविक होता है। राजा भोज की सृजनशीलता ने अति प्राचीन पौराणिक भगवान महाकालेश्वर के मंदिर के विस्तारीकरण का पुनीत कार्य किया था। विदेशी आक्रांताओं के आक्रमण ने जब भारत भूमि के कई देवस्थानों का विध्वंस किया तब उज्जयिनी भी ऐसे आक्रमण से ग्रस्त हुआ था। **लगभग 1728 ई में जब मालवा में मराठा साम्राज्य ने अपना साम्राज्य स्थापित किया तो पुनः हिन्दू गौरव लौटने लगा और पुनः हमारे देव स्थानों की प्राणप्रतिष्ठा होने लगी तथा विदेशी आक्रांताओं द्वारा ध्वस्त धर्म स्थानों का जीर्णोद्धार होने लगा तथा सिंहस्थ जैसे महापर्व की प्रथा प्रारंभ हुई।** राजा भोज के प्रयासों से ही आज मालवा माटी सांस्कृतिक विरासत के रूप में विद्यमान हैं। विश्व प्रसिद्ध महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर हो या भोजपुर शिवमंदिर, मांडव के मंदिर, विदिशा के मंदिर, धार के मंदिर हमारी संस्कृति की अमूल्य धरोहर हैं। हिन्दू गौरव की यह श्रंखला यही तक सीमित नहीं थी इसके अगले क्रम में केदारनाथ, सोमनाथ, रामेश्वरम, मुंडीर आदि गौरवशाली मंदिर भी राजा भोज की सृजनशीलता की साक्षी रही हैं।

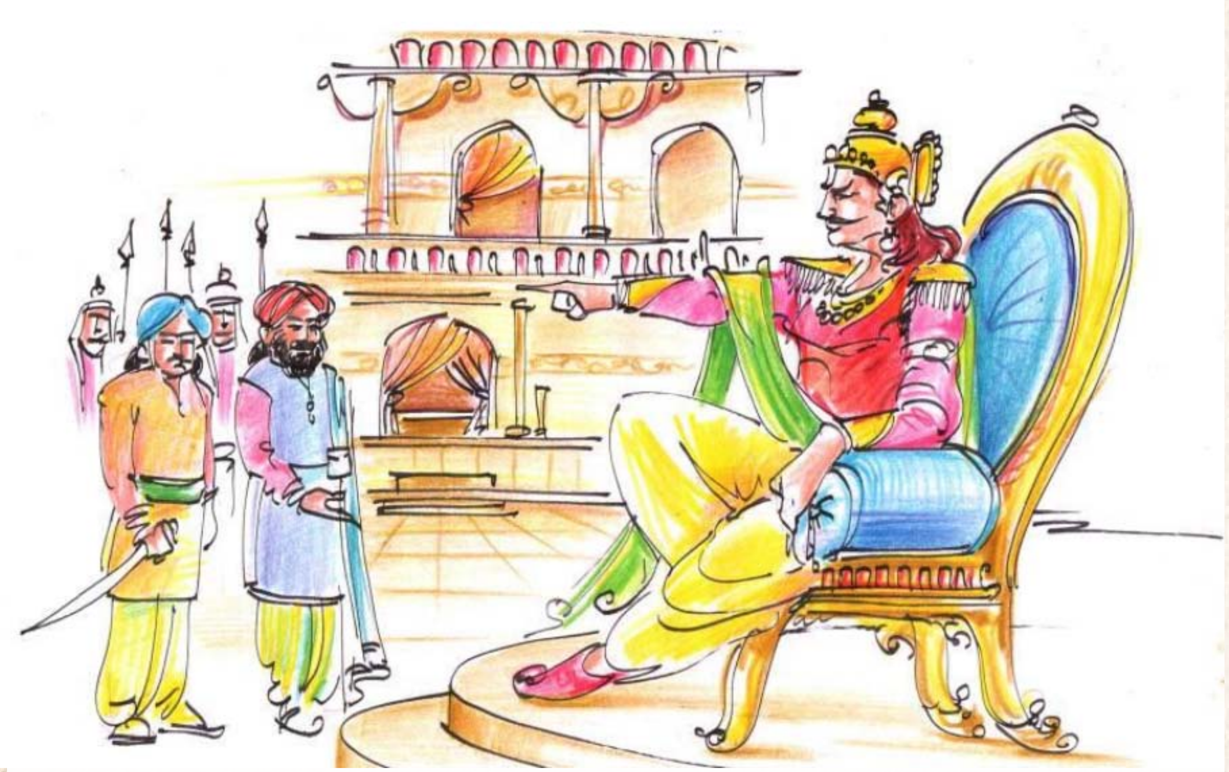

प्रतीकात्मक चित्र

राजा भोज की दानशीलता और उसका मनोवैज्ञानिक पक्ष

डॉ. मनमोहन प्रकाश

भारतीय सनातन संस्कृति में स्वेच्छा से, निष्काम भाव से दिए गए दान का विशेष महत्व बताया गया है। वस्तुत राजा हो या साधारण मनुष्य उसके यशस्वी बनने में दान की विशेष भूमिका है। हमारी संस्कृति और धर्म में ऐसी मान्यता है कि तप से सिद्धि, श्रम से धन, बल से भूमि, गुरु सेवा से ज्ञान, भगवत कृपा से मुक्ति भले ही मिल जाए किन्तु यश केवल दान से ही संभव है।

भारतीय इतिहास में शरीर-दान के लिए महर्षि दधीचि, भूमि-दान के लिए राजा बलि, कुंडल- कवच दान के लिए अंगराज कर्ण तथा धर्म हेतु दान के लिए राजा शिवि की कीर्ति विश्व विख्यात है। एपिग्राफिया इण्डिका (भा -1, पृ.235) में राजा भोज का साधन, कर्म, दान और ज्ञान सबसे बढ़कर और प्रशंसनीय माना गया है। इसलिए राज भोज के समय अन्य प्रांतों के विद्वान अपने यहां के नरेशों की विद्वत्ता और दानशीलता प्रदर्शित करने के लिए राजा भोज से उनकी तुलना किया करते थे। राजतरंगिणी (श्लोक 259) के अनुसार उस समय राजा भोज दान की अधिकता के कारण संसार में प्रसिद्ध थे। मेरी दृष्टि में राजा भोज की दानशीलता और उसके पीछे का मनोवैज्ञानिक चिंतन उनके द्वारा दिए गए दान को प्रासंगिक और उपयोगी बना देता है। शायद इसीलिए उन्हें संस्कृत वाङ्मय में **सिद्धि चूड़ामणि** की उपाधि से सम्मानित किया गया अर्थात रणवीर, दानवीर, और विद्यावीर।

प्रबंध चिंतामणि में उल्लेख मिलता है कि राजा भोज ने अपने पहनने के आभूषणों में दान से संबंधित आर्याएँ खुदवा रखी थीं ताकि वे शरीर में उनको धारण करते समय अपने दान रूपी कर्तव्य को ना भूलें, उससे विमुख ना हों। उसके कङ्कण में चार आर्याएँ खुदी हुई थीं जिनका अर्थ था- (1) स्वभाव से चंचल संपत्ति जब तक व्यक्ति के पास है, तब तक ही उस के पास उपकार करने का

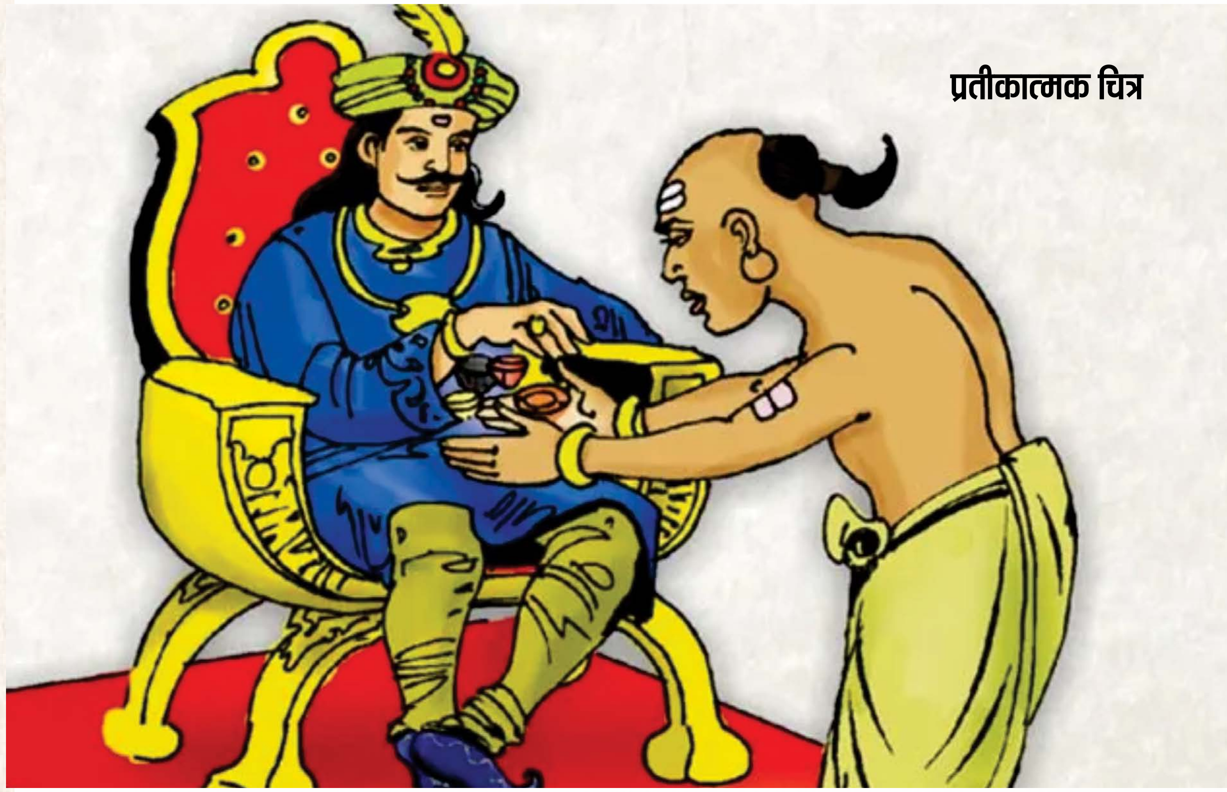

प्रतीकात्मक चित्र

मौका है। विपत्ति के आ जाने पर उपकार करने के अवसर नहीं मिलेंगे।(2) हे पूनम के चांद, तू अपनी किरणों की शोभा से दुनिया को उजली कर दे क्योंकि दुष्ट भाग्य संसार में किसी को भी बहुत समय तक अच्छी हालत नहीं रख सकता। स्पष्ट है अच्छा समय रहते भलाई, दान-पुण्य करना ही बेहतर है।(3) तलाब का उदाहरण देते हुए कहा गया है तालाब तेरे पास भलाई करने का मौका वर्षा ऋतु को छोड़कर ही है। स्पष्ट है कि अभाव के समय ही दान का महत्व है।(4) प्रभुता सदा नहीं रहती परन्तु उस समय की गई बुराई हमेशा के लिए बदनाम कर जाती है। इसी प्रकार राजा के पहनने के कंठे में लिखा था अगर सूर्य के अस्त होने के पूर्व तक तूने जरूरतमंद लोगों को धन नहीं दिया तो यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि सुबह होने तक वह किसके हाथों में चला जाएगा।

राजा भोज से जुड़े भविष्य पुराण तथा राजा भोज पर विश्वेसरनाथ जी द्वारा लिखी हुई पुस्तक **राजा भोज** में दिए गए दान से संबंधित एक प्रसंग से स्पष्ट है कि स्थिति और परिस्थितियों को समझते हुए तथा व्यक्ति की मनोदशा का अनुमान लगाते हुए तथा उसकी आवश्यकता को भांपते हुए बिना मांगे ही दान दे दिया जाना चाहिए। राजा भोज ने अपने जीवन में ऐसा ही किया। एक बार राजा भोज के दरबार में एक गरीब व्यक्ति ने यह कहकर प्रवेश की अनुमति चाही कि वह राजा का भाई है। राजा के पास जब यह संदेश पहुंचा तो उसने बिना कुछ विचारे दरबान से उसे सम्मान सहित राज दरबार में ले आने के निर्देश दिए। जैसे ही वो राज सभा में उपस्थित हुआ राजा भोज ने खड़े होकर आदर भाव से कहा पधारिए भ्राताश्री। सर्वप्रथम मैं आपको हुए कष्ट के लिए आपसे क्षमा मांगता हूं। कृपया मुझे बताइए कि मौसीजी कुशल मंगल तो हैं? उत्तर में उसने कहा जब मैं घर से आपके पास आने के लिए निकला था उस समय उनकी दशा ठीक नहीं थी। संभवतः मेरे वापस पहुंचने पर वे अपने प्राण त्याग दें। यह सुनकर राजा ने उस व्यक्ति से अन्य कोई प्रश्न किए बिना खजांची को निर्देशित किया कि मेरे भ्राता श्री को मौसी के अंतिम संस्कार के लिए 1000 स्वर्ण मुद्राएं दान में दे दी जाएं। सभा में उपस्थित सभी मंत्रीगण राजा के इस व्यवहार से आश्चर्यचकित थे क्योंकि उन्हें पता था यह राजा का भाई नहीं है। इससे पहले कि राजदरबारी राजा से कुछ प्रश्न पूछने की हिम्मत जुटा पाते राजा भोज ने स्वयं कहा कि इस दुनिया में अमीरी और गरीबी दो बहनें हैं। मैं राजा अमीरी का बेटा हूं और ये गरीबी का बेटा। इस रिश्ते से वह मेरा भाई हुआ। अतः उसकी सहायता करना मेरा कर्तव्य था जो मैंने किया। राजा भोज का यह दान अमीर/धनवान लोगों के लिए एक बहुत बड़ी सीख है कि दानी को हमेशा गरीब व्यक्तियों को अपना भाई समझते हुए दान देकर सहायता करना चाहिए न कि एहसान जताते हुए। साथ ही दान देने वाले को ध्यान रखना चाहिए कि वह जिसे दान दे रहा है उसके कारण और हालत को सबके सामने जानने का प्रयास नहीं करे। ऐसा करने से दान लेने वाला शर्मिंदा और लज्जित हो सकता है। यह आज की उस दान प्रथा पर तमाचा है जिसमें दान देने वाला, दान लेने वाले के साथ फोटो खिंचवाता है और सार्वजनिक करता है और बढ़ा-चढ़ाकर पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित करता है।

विश्वेसरनाथ की 'राजा भोज' नामक पुस्तक के 141पृष्ठ पर एक और प्रसंग मिलता है जिस में उल्लेख है कि राजा प्रतिदिन अपने सभा मंडप में याचक को उनकी आवश्यकता अनुसार दान देकर संतुष्ट किया करता था। राजा का मंत्री शेखर उनकी इस दिनचर्या से परेशान था। उसके मन में एक शंका निरंतर घर कर रही थी कि यदि राजा इसी तरह दान देते रहे तो राजकोष एक दिन खाली हो जाएगा, उस स्थिति में राजकाज कैसे व्यवस्थित रूप से संचालित होगा। किंतु राजा के नाराज होने के डर से उसके इस प्रश्न को राजा से सीधे पूछने की हिम्मत नहीं हुई। एक दिन जैस-तैसे हिम्मत जुटाकर उसने सभा मंडप की दीवार पर डरते हुए लिखा ''आपदर्थे धनं रक्षेत्'' अर्थात् आपातकाल के लिए राजा को धन की रक्षा करनी चाहिए, उसे भविष्य के लिए राजकोष बचाना चाहिए। जब राजा की नजर इस लिखावट पर पड़ी तो उसने उसके आगे 'भाग्यभाजः क्वचापद' लिख दिया जिसका अर्थ होता है कि भाग्यशाली पुरुषों के यहां आपदा कहां जन्म लेती है। इस पर मंत्री ने उसके आगे दैवं हि कुप्यते क्वापि लिख दिया। जिसका अर्थ है शायद कभी भाग पलट जाए और बुरा समय आ जाए। राजा भोज ने इसके उत्तर में लिखा 'संचितोपि विनश्यति' जिसका मतलब स्पष्ट था यदि भाग्य ही पलट जाएगा तो एकत्रित किया हुआ धन भी नष्ट हो जाएगा। राजा के इस अंतिम भाग में छुपे मनोवैज्ञानिक संदेश ने मंत्री की आंखें खोल दीं, उसकी सभी शंकाओं का समाधान कर दिया, जीवन के सत्य से परिचित करा दिया। अंत में गलती मानते हुए मंत्री ने राजा से क्षमा याचना की।

राजा भोज के दान यज्ञ से जुड़े ऐसे ही एक वार्तालाप की चर्चा करना मैं यहां उचित समझता हूँ - राज्य भ्रमण के दौरान एक दिन राजा की नजर पृथ्वी पर अनाज के दाने बीन रहे गरीब व्यक्ति के पर जा टिकी। इस पर

राजा के मुंह से अनायास निकल गया(विश्वेसरनाथ द्वारा लिखित पुस्तक 'राजाभोज' पृष्ठ 151) जो अपना पेट भरने, पालन-पोषण करने में असमर्थ हैं, सक्षम नहीं हैं उन्हें पृथ्वी पर जन्म लेने से क्या फायदा?

अनाज बीनने वाले उस व्यक्ति को राजा की यह बात चुभ गई, उसे अच्छी नहीं लगी। उसका जवाब देते हुए उसने कहा 'जो समर्थवान होकर भी दूसरों का भला नहीं कर सकते हैं उनका इस दुनिया में जन्म लेना का क्या प्रयोजन है?' उत्तर स्वरूप राजा भोज ने कहा 'हे विधाता, तू भीख मांगकर पेट भरने वालों को जन्म ही ना दे।'

इस पर गरीब पुरुष का जवाब था 'हे ईश्वर, याचक की प्रार्थना पर ध्यान ना दें, ऐसे पुरुषों को अपने ऊपर धारण ही ना कर।' अंत में राजा उस गरीब व्यक्ति की तर्कशक्ति से प्रसन्न हुआ। उसे न केवल राजा ने खूब धन दान में दिया अपितु मान सम्मान भी दिया। वस्तुतः आगे जाकर यह व्यक्ति प्रसिद्ध कवि शेखर के नाम से पहचाना गया। राजा और कवि के इस वार्तालाप से स्पष्ट है कि इस दुनिया में याचक और दाता दोनों में से किसी एक का भी अस्तित्व ना हो ऐसा असंभव है। ऐसा होना भी नहीं चाहिए। कारण ज़रूरतमंद को दान में मिली चीजों से जीवनयापन करने का सहारा मिलता है और वह ग़लत राह पर चलने से बच जाता है वहीं दूसरी ओर दाता के मन में यह भाव पनपता है कि जो उसके पास अतिरिक्त है उस पर केवल उसका अधिकार नहीं है। अपितु ईश्वर ने उसे अतिरिक्त धन दीन-दुखी, अभाव- ग्रस्त लोगों की मदद के लिए ही दिया है। राजा भोज ने एक जगह कहा भी है जो दिया है, खाया है, वही अपना है, बाकी सब व्यर्थ है इसीलिए मनुष्य को प्रतिदिन अपनी दिनचर्या की सही विवेचना करनी चाहिए और पता लगाने की कोशिश करना चाहिए कि उसने कौन सा पुण्य कार्य किया। इस वाक्य से हमें राजा द्वारा दिये गये संदेश को समझना चाहिए।

प्रतीकात्मक चित्र

हम सब को ज्ञात है पर स्मरण नहीं रहता कि सूर्य देवता उसकी आयु का एक हिस्सा लेकर ही अस्त होते हैं। एक दिन का व्यतीत होने का मतलब है ईश्वर द्वारा निर्धारित आयु के दिनों में से एक दिन का कम होना (उत्थायोत्थाय बोद्धव्यं किय सुकृति कृत्य पृ175)।

राजा भोज के चाणक्य राजनीतिशास्त्रम् में लिखा (शीत भीतश्च रण --गच्छति।।163।।) है- सर्द से डरने वाला ब्राह्मण, युद्ध से डरने वाला क्षत्रिय और दान से डरने वाले ये तीनों स्वर्ग नहीं जा सकते हैं क्योंकि वे अपने कर्तव्य पालन से विमुख हैं। अर्थात् इस संसार में सभी के काम निर्धारित हैं। दान भी धनवानों का एक कर्तव्य है और उसका पालन करना उनका धर्म है। इसका दूसरा पहलू हम देखें तो गरीबी एक अभिशाप है, इंसान की मजबूरी है । इसका एक अच्छा उदाहरण राजभोज पर विश्वेसरनाथ द्वारा लिखी पुस्तक के पृष्ठ 150 पर मिलता है - एक बार राजा भोज की सभा में एक दरिद्र पंडित आया और उसने राजन् से प्रश्न किया कि हे राजन् न मेरी मां मुझसे खुश रहती है, ना मेरी स्त्री। मैं भी ना अपनी मां से खुश रहता हूं ना अपनी स्त्री से। कृपया मुझे अवगत कराने कष्ट करें कि दोष किसका है? राजा ने अपने ज्ञान से तीनों की मनोवैज्ञानिक दशा और परिस्थितियों का अनुमान लगाकर तीनों को दोषमुक्त करते हुए गरीबी को दोषी मानते हुए उसे भरपूर धन दान में दिया ताकि भविष्य में फिर कभी उसके घर में कलह की कोई गुंजाइश नहीं रहे। यह सत्य आज भी समाज में बना हुआ है कि गरीबी व्यक्ति के जीवन में कई समस्याओं तथा बुराइयों को जन्म देती है और वो जो न कराए वह कम है। अतः समाज और प्रशासन के हर सक्षम वर्ग को गरीबी की समाप्ति के लिए प्रयास करना चाहिए।

न हि भोजसमो नृपः

डॉ. सन्तोष पण्ड्या, उज्जैन

प्रथम परमार को जो राज्य सुपुर्द किया वह अर्बुदाचल की तलहटी के अन्दर सिरोही (राजस्थान)था। सिरोही से परमार वंश क्रमशः उज्जयिनी एवं धार आये, धार से सर्वप्रथम परमार उपेन्द्र कृष्णराज थे जिसने सन् 800 से 825 तक मालवा पर धार में रहकर राज्य किया। उसी वंश में सिन्धुराज हुए जिसको सिन्धुल भी कहते थे, उसका छोटा भाई मुंज था। सिन्धुल की मृत्यु के पश्चात् शासन राजकुमार भोज को मिलता देखकर काका मुंज को षडयंत्र करने का उपाय सोचा । उन्होंने राजा भोज को कसाइयों के हाथों में दे दिया और उनको आज्ञा दी कि भोज को मारकर उसकी आँखें मेरे सामने लाइये। मन्त्री ने भोज को बचाने के लिये सैनिकों एवं कसाइयों को समझाइश दी कि मुंज की सदबुद्धि के लिये छोटा सा बालक जो महाविद्वान् था का लिखा हुआ श्लोक राजा का मुंज तक पहुचाने का कहा जिसमें लिखा था ''मानधान च महिपति कृतयुगे......। ''जिसका अर्थ था कि है मुंज मानधाता जैसे महिपति, जिन्होंने संसार पर सतयुग में राज्य किया एवं ऐसे ही कितने महापराक्रमी, महाबली राजा के साथ ये धरती नहीं गई, किन्तु हे राजा मुंज मुझे ज्ञात होता है कि षड्यंत्र पूर्वक मुझे मारकर ये पृथ्वी तेरे साथ जरूर मृत्यु के बाद स्वर्ग में जाएगी।

काका मुंज को भोज के श्लोक ने विचार परिवर्तन कर दिया और काका ने अपने हाथों से भोज का राजतिलक किया। तब महाकवि पद्मगुप्त ने अपने ग्रंथ ''नवसाहसांक'' में वर्णन किया है कि धारा नगरी सोने की लंका से भी श्रेष्ठ थी अलकापुरी विष्णु की राजधानी भी धार के सामने कुछ नहीं लगती थी।

सन् 1024 में महमूद गजनवी का सोमनाथ पर आक्रमण हुआ तब महाराज भोज की प्रचण्ड सेना को देखकर महमूद गजनवी ने अपना रास्ता बदल दिया। राजा भोज ने माँ सरस्वती की आराधना हेतु स्फटिक की दिव्य मूर्ति बनाई जो सरस्वती सदन के अन्दर विराजमान थी। राजा भोज के पास नवरत्न महाकवि माघ, कादंबरी के रचयिता बाणभट्ट, उपमाओं के शिरोमणि कालिदास, करुणरस में अभिभूत कर दें ऐसे भवभूति, जैसे प्रकाण्ड पण्डित एवं कवि तथा शास्त्रार्थ करने के लिये 1000 से 1500 विद्वानों, धर्मशास्त्रियों, कवियों एवं अनेक शिष्यों को सुचारू रूप से ज्ञान प्राप्त हो। इसलिये सरस्वती सदन, धार के मध्य में बनाया, तब धारा नगरी सरस्वती सदन के चारों ओर दूर-दूर तक फैली थी और नाना प्रकार के चौराहे अलग-अलग व्यवस्था के रूप में बने हुए थे। हर चौराहे का एक बाजार था, जहाँ सोना, मोती और जवाहर की खरीदी बिक्री होती थी उसे जौहरी बाजार, तो दूसरा इसी प्रकार का वस्त्र बाजार जैसे नाना प्रकार के चौराहों से नगरी सुरभ्य एवं तालाबों से सुशोभित थी।

> **महाराज भोज तलवार के भी धनी जिन्होंने अपने काका मुंज को हाथियों के पैरों के नीचे मरवाने वाले तेलंगाना के गांगेय देव को युद्ध में परास्त करने धार की ख्याति और विजय पताका कर्नाटक तक फैला दी। चूंकि उस समय, उस प्रदेश को तैलंगाना कहते थे इसलिये राजा भोज द्वारा गांगेय तैलंग को परास्त करने के बाद विजय स्वरूप धार से सरस्वती सदन के दक्षिण दिशा में विजय स्मारक (स्तंभ) स्थापित किया और विजय कीर्ति मंदिर बनाया जिसका नाम ''विजय मार्तण्ड कीर्ति मंदिर कहा गया।**

मध्य में सरस्वती सदन महाराज भोज ने सन् 1034 में बनवाया और उसमें शिष्यों की एवं जिज्ञासुओं की ज्ञान पिपासा निरंतर बढ़ती जाती थी यथा राजा भोज की पाठशाला संचालित हो रही थी इसलिये नगरवासियों ने सरस्वती सदन को राजा भोज की भोजशाला कहना शुरू किया। सन् 1035 में प्रथम धर्माचार्यों, विद्वानों, संतों, ज्ञानवर्धन करने वाले आचार्यों ने 40 दिनों तक सारस्वत यज्ञ किया। सरस्वती सदन के मध्य में करोड़ों आहुतियों से सुगंधित यज्ञ से धार नगरी पावन बन गई और कोटि-कोटि आहुतियों से सरस्वती की मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा की गई। ये सरस्वती सदन राजा भोज के बाद भी 200 वर्षों तक हिन्दुओं के लिये ज्ञान, विज्ञान और दर्शन, संस्कृति का अध्ययन केन्द्र रहा।

महाराज भोज के बाद परमार वंश के महान थाती जैसे पारिजातकमंजरी के भग्नावशेष आज भी भोजशाला में विद्यमान हैं। राजा भोज के अनेक वंशज एवं उत्तराधिकारी उदयादित्य के समय में भी भोजशाला में नाना प्रकार के नाटक, चंपू यंत्र, पत्थरों पर उत्कीर्ण होते रहे। वह उस समय

के नागरीलिपि में आज भी हमें भोजशाला में काले पत्थरों के दो शिलालेखों में अंकित विद्यमान है। परन्तु अन्य प्रस्तर विधर्मी लोगों ने नष्ट कर दिया या उल्टे करके दीवार या जमीन में गाड़ दिये जो पुरातत्व विभाग वालों को मिलते रहे हैं।

भोजराज कहाँ नहीं हैं? ज्ञान गौरव, सृजन क्षमता, संवेदनात्मक प्रजोन्मुखी शासन आदि ने भोजराज को जन-जन में अभिनन्दनभाजक बना दिया। भोजराज कला, कलम, कटार और करनी के धनी रहे।

तत्कालीन धार नगर के मध्य में यह सरस्वती सदन था उसकी एक या दो नहीं बल्कि 84 चौपाटी वाला महानगर था। राजा भोज ने अनेक शिव मंदिर निर्माण करवाने तथा भोपाल के पास भोजपुर जैसे स्थान बनाये। राजा भोज विद्वानों के पोषक थे, कहते हैं कि उस समय धार में कोई मूर्ख निवास नहीं करता था।

''अद्य धारा सदाधारा सदालंबा सरस्वती'' यहाँ का जुलाहा, लकड़हारा या मजदूर भी संस्कृत में बातें करता था-

काव्यं करोमि न हि चारुतरं करोमि यत्नात् करोमि यदि चारुतरं करोमि।
भूपेन्द्रमौलिमणिमण्डितपादपीठ हे साहसांक कवयामि वयामि यामि।।

नगर में जितने विद्वान् थे उनको समय-समय पर राजा भोज अपनी दानशीलता से परिपूरित करते थे, ऐसे महाराज भोज तलवार के भी धनी जिन्होंने अपने काका मुंज को हाथियों के पैरों के नीचे मरवाने वाले तेलंगाना के गांगेय देव को युद्ध में परास्त करने धार की ख्याति और विजय पताका कर्नाटक तक फैला दी। चूंकि उस समय, उस प्रदेश को तैलंगाना कहते थे इसलिये राजा भोज द्वारा गांगेय तैलंग को परास्त करने के बाद विजय स्वरूप धार से सरस्वती सदन के दक्षिण दिशा में विजय स्मारक (स्तंभ) स्थापित किया और विजय कीर्ति मंदिर बनाया जिसका नाम ''विजय मार्तण्ड कीर्ति मंदिर कहा गया।

ऐसे महापराक्रमी भोज ने धार को उन्नत, वैभवशाली और पूर्ण समृद्ध बनाया। महाराज भोज स्वयं ज्ञानी, विद्वान, कविराज थे। श्री और सरस्वती का अनुग्रह उनके साथ सदैव रहा-

तथा श्रीभोजराजोस्ति राजा निर्व्याजवैभवः।
अवैरं यन्मुखांभोजं भारतीश्रीनिवासयोः।।

भोज साहित्य के विद्वानों के नाम

1. डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित, उज्जैन
2. डॉ. केदारनाथ शुक्ल, उज्जैन
3. डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू, उदयपुर
4. डॉ. सुषमा आर्य, प्रयागराज
5. स्व. श्री यंशवत उद्गीर, खण्डवा
6. स्व. डॉ. ईशनारायण जोशी, भोपाल
7. स्व. डॉ. रुद्रदेव त्रिपाठी, उज्जैन
8. डॉ. विश्वेश्वरनाथ रेउ
9. डॉ. के. नीलकण्ठम, हैदराबाद

कला धर्म और राजा भोज

कवि राकेश दांगी (इंदौर)

मालवा के राजा भोज का स्थान भारतीय इतिहास में अमरता को प्राप्त है। महान पराक्रमी भोज का व्यक्तित्व, कृतित्व, राजतंत्र, भक्ति, शक्ति धर्म अकल्पनीय माना गया। युद्धविद्या, राज्यशास्त्र, स्थापत्य, कला, धर्म साहित्य समस्त क्षेत्रों में राजा भोज के कार्य अतुलनीय हैं। उदारता, दानशीलता, नम्रता, वीरता मध्यकालीन इतिहास में अद्वितीय हैं। भोज के गुणों की प्रशंसा मध्यकाल के संस्कृत भाषा साहित्य तथा किंवदंती में सर्वत्र है। राजा भोज का लेखनी में योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकता। भोज की ऐतिहासिक उपलब्धियों के प्रमाण वर्तमान में भी कई अभिलेखों, प्रतिमाओं, राजभवनों, शिलालेखों, सार्वजनिक निर्माणों, उनके समकालीन प्रशस्तियों, पुस्तकों, ग्रंथों, लोकव्यापी कहानी कविताओं में प्रमाणित हैं। राजा भोज की सांस्कृतिक रुचि तथा साहित्यिक अनुराग के प्रमाण भोज प्रबंध सहित अनेक ग्रंथों में मिलते हैं।

महाराजा भोज ने भोजपाल बसाया जिसे वर्तमान में भोपाल कहते हैं। भोपाल में संस्कृत विद्यालय की स्थापना कला तथा धर्म की साधना प्रचार प्रसार के लिए की। उनका उद्देश्य था विद्यालय का रमणीक एवं शांत स्थान होने के कारण विद्यार्थियों को किसी भी प्रकार का विघ्न कष्ट न होगा। एकांत वातावरण में साहित्य विज्ञान कला दर्शन आदि की अभिवृद्धि व नव सृजन हो सकेगा। भोज के काल में लगभग 500 विद्वान विद्यार्थियों को शिक्षा देने का कार्य करते थे। इससे यह प्रतीत होता है। निश्चित ही भोजपाल में अनेक ग्रंथों की रचना लिखी गई होगी। उपरोक्त कथन से यह प्रमाणित होता है कि ग्रंथ तो नष्ट हो सकते हैं कलाकृति प्रतिमा खंडित हो सकती हैं परंतु पूर्णतः नष्ट नहीं, आज भी धार, भोपाल में भोजकालीन मूर्तियां यह सिद्ध करती हैं। कि भोज कला एवं धर्म के कितने करीब थे।

प्रतीकात्मक चित्र

भोजपाल का संस्कृत विश्व-विद्यालय तेरहवीं शताब्दी तक प्रारंभ रहा, परंतु उसके पश्चात आक्रांताओं के आक्रमणों के कारण नष्ट हो गया। विद्वानों ने अपने ग्रंथों के साथ इधर उधर शरण ले ली। परंतु पाषाण पर अंकित कलाकृति प्रतिमाएं उठाकर न ले जाते हुए उन्हें नष्ट करने का प्रयास किया। 138 वर्ष पूर्व भोजपाल के इस संस्कृत विश्वविद्यालय के खंडहरों को देखा जा सकता था। उनके अस्तित्व का प्रमाण इतिहास के अत्यंत विश्वस्त सूत्रों में मिलता है।

संस्कृत, प्राकृत, देशी भाषा- बोली भोज के साहित्य में विद्यमान हैं। राजा भोज अपने समकाल में लोकाकर्षण के मुख्य केंद्र बन गए थे, उनके राजकीय शत्रु भी उनके कृतित्व, व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उनका अनुकरण करने का प्रयास करते थे, ऐसे महान पराक्रमी राजा के व्यक्तित्व को सबने अपन-अपने प्रकार से देखने परखने तथा प्रस्तुत करने का प्रयास किया। राजनीतिज्ञों ने राजनैतिक, शास्त्रज्ञों ने शास्त्रीय, कवियों ने, रसिकों ने भोज को विविध रूप में प्रकट किया है। यही आभा भोज के व्यक्तित्व में दिखाई देता था। राजा भोज कला तथा धर्म को धारण कर ही राज्य को आदर्श रूप में संचालित करते थे।

धर्मशास्त्र, दर्शनशास्त्र, काव्य अलंकार और ज्योतिष शास्त्रादि कामधेनु इत्यादि ग्रंथों को भोज राज में प्रधानता मिली, राजा भोज के रचे सरस्वतीकंठाभरण, राजमार्तण्ड नाम के योगसूत्रभाष्य, राजमृगांकरण, विद्वज्जनवल्लभ नामक ज्योतिषशास्त्र समरांगण नामक वास्तुशास्त्र और श्रृंगारमंजरी कथा नामक खंडकाव्य आदि महत्वपूर्ण ग्रंथ मिलते हैं।

राजा भोज के राज में साहित्य कला धर्म का मानो नव सृजन हुआ हो, शास्त्रों का विकास भोजराज में हुआ, शास्त्रकार लोकनीति की ओर अग्रसर हुए। कौटिल्य अर्थशास्त्र, महाभारत की नीति कथाएं, जातक कथाएं, पंचतंत्र के रूप में साहित्य का नवसृजन हुआ तथा जीवन को सुचारू रूप से व्यतीत करने का उदय हुआ। यह जीवन कला साहित्य में भी प्रविष्ट हुई जिसे व्यवहारविदे के रूप में प्रश्रय मिला।

राजा भोज और कालिदास परम मित्र थे। एक बार किसी बात पर कालिदास कहीं रूठकर चले गए, प्रिय मित्र के कहीं चले जाने पर राजा भोज ने उन्हें खोजने की घोषणा करवा दी, जो कोई अपने स्वयं का लिखा नया श्लोक लाकर सुनाएगा उसे लाख मुद्राएं दी जाएंगी। कई लोग अपने नवीन रचित श्लोक लेकर पहुंचे परंतु सभी असफल रहे। पुरुस्कार प्राप्त नहीं कर पाए, क्योंकि राजा भोज की सभा में तीन विद्वान थे। एक को एक बार, दूसरे को दो बार, तीसरे को तीन बार सुनने पर वैसा ही याद हो जाता था। जब कोई कवि आकार सुनाता तो एकश्रुत उस काव्य श्लोक को पुराना बताते हुए पूरा का पूरा सुना देता था। वह सुनकर दूसरा द्विश्रुत सुना देता था। तीन बार सुनकर त्रिश्रुत वैसा ही सुना देता था। जब तीन लोग उसे सुना दे तो नया काव्य होने पर भी कवि लज्जित होकर चला जाता था,और उसे पुरुस्कार नही मिल पाता था, सब कविगण निराश थे। कालिदास को यह सब ज्ञात हो गया, उन्होंने एक श्लोक लिखकर एक वृद्ध ब्राम्हण को देकर राजा भोज की सभा में भेजा, उसने वह श्लोक पढ़ा उस श्लोक का तात्पर्य यह था। हे राजन, हे भोजराज,आपका कल्याण हो, सारा संसार जानता है आपके पिता बड़े धार्मिक थे। उन्होंने मुझसे 99 करोड़ रत्न कर्ज में लिए थे। यह बात आपकी सभा के सभी पंडित जानते हैं। अतः आप अपने पिता का कर्ज चुका दें, यदि आपकी सभा के पंडित मना करें तो आप इस श्लोक के रचनाकार मुझे मानकर एक लाख रुपए प्रदान करें। यह सुनकर वे तीनों विद्वान चुप रह गए और एक-दूसरे की ओर देखने लगे। समस्या यह थी की यदि वे इस श्लोक को पुराना बताएं तो राजा पर कर्ज सिद्ध होता है और वह कर्ज अदा करना पड़ता है। नया सिद्ध होता है तो घोषणानुसार एक लाख पुरुस्कार देना पड़ता है। वे पंडित उदास होकर चुप रहे। राजा प्रसन्न हो रहे थे, वह समझ गए थे यह चतुराई का श्लोक कालिदास ही लिख सकते हैं। राजा भोज ने उस विप्र को एक लाख रुपए दिलवाए, फिर उससे पूछा सच बताओ किसने लिखा था यह श्लोक। ब्राम्हण ने सच बता दिया, बोला कालिदास की रचना है। राजा ने ब्राम्हण से कालिदास का पता पूछा और ससम्मान वापस राजसभा में स्वयं लेकर आए। उपरोक्त कथन का प्रमाण भी भोज के कला तथा धर्म को दर्शाता है।

राजा भोज विभिन्न धर्मधराओं का सम्मान करते हुए भी शैव थे। उनके ताम्रपत्रों का आरंभ शिव स्तुति से होता है। भोजपुर में राजा भोज का बनवाया हुआ अपूर्ण शिव मंदिर भी है। उदयपुर प्रशस्ति में राजा भोज द्वारा विभिन्न शिव मंदिरों के निर्माण की चर्चा हुई है।

केदारेश्वर, रामेश्वर, सोमनाथ प्रमुख हैं। धार की भोजशाला में विद्यमान प्राकृत में रचित शिलांकित खण्डित भोज प्रशस्ति में भी इन्हीं पंचायतनों के निर्माण की चर्चा है-
महयाले मुंडीरे केआरे तह य सोमनाहमि।
रामेसरे अ विहिअं पंचाययणं तए भोअ।

यहां कालानल के स्थान पर महाकाल मंदिर के निर्माण की बात की गई है। स्पष्ट ही कालानल महाकाल के पर्याय के रूप में प्रयुक्त हुआ है। राजा भोज ने महाकाल का पंचायतन मंदिर बनवाया था। महाकाल के आसपास अन्य देव भी थे। आज भी महाकाल परिसर में कितने ही देवी देवताओं के मंदिर हैं। साहित्य तथा संस्कृति के साधक राजा भोज कला धर्म के संधारक थे। मालवा सहित देश के इतिहास में कला तथा धर्म के प्रति जो आस्था राजा भोज की है वह अद्वितीय है। इस प्रकार हम जान सकते हैं कि कला, धर्म के संरक्षण, प्रसारण में राजा भोज का योगदान अतुलनीय है।

भारत के गौरव - महाराजा भोज

जीवनसिंह ठाकुर

हमारे मालवा - निमाड़ को इसका गौरव है कि हमारी इस शस्य श्यामल धरा पर परमार वंश की अपार ख्याति, कीर्ति की परंपरा में महाराजा भोज जैसे राजा, विचारक, साहित्यकार, शोधकर्ता, प्रजा-वत्सल समदृष्टि वाले शासक ने जन्म लेकर भारत के गौरव को उज्जवल नक्षत्र की तरह दैदीप्यमान किया।

सिर्फ राजा ही नहीं वरन राजा भोज भारत के हृदय प्रदेश मालवा के शासक थे। वे सिर्फ राजा ही नहीं वरन विद्या अनुरागी, लेखक, प्रजा के कल्याण में सतत संलग्न और सक्रिय रहते थे। भोज के कार्यकाल में लगभग समस्त परमार वंश की परंपरा में नारी का सम्मान, उसकी शिक्षा दीक्षा - प्रथम प्राथमिकता में रही है।

राजा भोज के शासन में - समाज में जातिगत भेद नहीं था। उस समय अपने व्यवसाय से ही लोग पहचाने जाते थे। लोग अपना व्यवसाय बदलते भी थे - तो वे तात्कालिक व्यवसाय से ही जाने, पुकारे जाते थे। इस तरह छुआछूत की भेदभरी व्यवस्था से राजा भोज ने समाज को मुक्त किया था।

ऐतिहासिक प्रमाण है कि राजा भोज के समय जनता में कृषि, व्यापार, उत्पादन, निर्माण, सिंचाई, धातु उद्योग की उन्नति हुई। समाज के हर परिवार, व्यक्ति के पास रोजगार और आमदनी थी। समाज में निरंतर संपन्नता रही। इससे राजकोष भरपूर था। इस समृद्धि के कारण मंदिर, भवन, शिक्षा संस्थानों, की संख्या बढ़ी। शिक्षा का लोक व्यापीकरण हुआ।

राजा भोज के समय भवन, मंदिर, निर्माण की समृद्ध - परंपरा मजबूत हुई। भवन, मंदिर निर्माण के लिए बाकायदा सिविल इंजिनियरिंग के ग्रंथ, सिद्धांतों, की रचना हुई। इन ग्रंथों, सिद्धांतों की सिर्फ भारत (अखंड भारत में) में ही मान्यता नहीं वरन समग्र विश्व में इसे मान्य किया गया। आज भी भारत सहित दुनिया के समस्त इंजिनियरिंग कालेजों, विश्वविद्यालयों में अध्ययन किया जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में राजा भोज का श्रेष्ठ योगदान आज ग्यारह सदी के बाद भी उतना ही अनुकरणीय और प्रेरक है। जगह-जगह भोज शालाएं अध्ययन, मनन, शोध, संस्थान के स्थान रहे हैं।

राजा भोज जहां सनातन हिन्दू परंपरा, धर्म का पालन करने वाले शासक थे। वहीं विभिन्न चिंतन परंपरा, मतों, विचारों को भी सम्मान देने वाले, विचार स्वातंत्र्य देने वाले शासक थे। परमारों के शिरोमणि भोज के काल में जैन, वैष्णव, शैव, शाक्त, बौद्ध-मतों को संरक्षण प्रदान किया था। वैचारिक - लोकतंत्र से साहित्य, संस्कृति की अपार उन्नति हुई। ऐतिहासिक प्रमाणों से पता चलता है कि परमार वंशीय राजाओं की प्रणाली, शैली का अनुकरण अन्य राज्यों, राज्य सभाओं में किया जाता था।

राजा भोज तथा उनके पहले के परमार राजा वाक्पति द्वितीय के समय में मालवा के क्षेत्र की प्रतिष्ठा बहुत बढ़ी थी । भोज के समय धार नगरी और उज्जयनी संस्कृति साहित्य कला का स्वर्ण क्षेत्र बन गयी थी।

इतिहासकारों, शोधकर्ताओं, प्रमाणों के आधार पर महाराजा भोज ने 84 ग्रंथ लिखे थे। ज्ञान-विज्ञान के ये ग्रंथ स्त्रोत हैं। इसमें उनका एक विशिष्ट ग्रंथ है जिसका समरांगण सूत्रधार (तकनीकी) है, इसमें नगर निर्माण, भवन निर्माण, देवालय निर्माण, मूर्तिकला निर्माण के सूत्र, सामग्री, कला, साहित्य, दर्शन का अभूतपूर्व - ज्ञान है जो इस सदी के बाद भी पूर्ण तथा आधुनिक है।

84 ग्रंथों का वर्णन करने के लिए पृथक से विशद लेख लिखना पड़ेगा। इस संक्षिप्त लेख में राजा भोज के कार्यों का उल्लेख है। हम सभी मालवा-निमाड़ वासियों को गर्व है कि हमारे देश के महान राजा भोज के महान क्षेत्र में हमारा जन्म हुआ और महान सांस्कृतिक की परंपरा के वंशज हैं।

लोकपुरूष राजा भोज

डॉ. शिव प्रसाद बामने

महाराजा भोज लोक में व्याप्त कथाओं, गाथाओं गीतों और किंवदंतियों के आधार पर मैं महाराजा भोज को राजपुरूष के बदले लोक पुरूष कहना अधिक उपयुक्त समझता हूँ। महाराजा भोज राजपुरूष होकर भी धरतीपुत्र थे और माँ सरस्वती के वरदपुत्र भी। सचमुच वे माता सरस्वती के अनन्य उपासक थे। वे किसान का संघर्ष समझते थे। वे लोक की पीड़ा जानते थे इसलिए उनके न्याय प्रशासन का सूत्र था, ''मैं इस भूमि का हूँ'' से स्पष्ट हो जाता है कि राजा भोज ने प्राकृतिक संसाधन के रूप मे जल का वितरण व प्रबंधन का महत्व समझा। और इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए उन्होंने प्रजा को स्वच्छ पेयजल मुहैया करवाने के लिए अनेक तालाब बनाए। इसलिए वे लोक के चहेते थे, लोकपुरूष थे।

एक लोक-कथा मे कहा गया है कि राज्य में जब एक बुढ़िया अपने बेटे को गुड़ नहीं दे पायी फलस्वरूप उसके बेटे ने प्राण त्याग दिए। जब राजा भोज को यह ज्ञात हुआ कि उसका राज्य इतना विपन्न हो चुका है कि राज्य के निर्धन व्यक्ति मिष्ठान्न तो क्या गुड़ की डली के लिए भी तरसते हैं, तब उन्होंने स्वयं के लिए मिष्ठान्न का त्याग कर दिया। तब तक दृढतापूर्वक इस संकल्प का पालन किया जब तक राज्य में कृषि की संपन्नता नहीं लौट आई। ऐसे राज पुरूष को यदि लोकपुरूष कहा जाय तब कोई अतिशयोक्ति नही होगी।

इसी प्रकार दरबार में जब एक दरिद्र ब्राह्मण उन्हें बार-बार मूर्ख कहता है तब वे कुपित होकर उसे दण्डित करने का आदेश नहीं देते अपितु उसके तर्क सुनते हैं। उसके तर्कों का समाधान भी करते हैं और उसे पुरस्कृत कर सम्मान के साथ विदा करते हैं। क्रोध पर ऐसी संयमित विजय राजा भोज के ही बस की बात थी। वे क्रोधजयी भी थे। उनके

एक स्वर में कृष्ण का शंख बजता था तो दूसरे स्वर में प्रेम की बाँसुरी। शंख जो ऊर्जा का प्रतीक है वही युद्ध का उद्घोष भी हैं। वही बाँसुरी शान्ति की प्रतीक है। इसलिए वे कृष्ण की भाँति युद्धजयी और हृदयजयी दोनों थे। वे कालिका और सरस्वती दोनों के उपासक थे। कालिका उनके पराक्रम की शक्ति थी तो सरस्वती उनके सृजन की दोनों का अपना-अपना महत्व और अस्तित्व है। जिस प्रकार भोज की तुलना केवल भोज से ही संभव है उसी प्रकार विक्रमादित्य की तुलना भी विक्रमादित्य से ही संभव है।

विक्रम जैसा पराक्रम, विक्रम जैसा प्रताप, विक्रम जैसी आभा-ऊर्जा यदि हो तो विक्रमादित्य कहला सकते हो। विक्रम जैसी न्यायप्रियता यदि हो तो विक्रमादित्य के आसन पर बैठ सकते हो। क्या ये सभी गुण राजा भोज में नहीं थे ? निश्चित रूप से थे। जब यह लोककथा कहती है' विक्रम जैसो विक्रम साजो तो सिंघासन बिराजो।' तब यह लोककथा महाराजा भोज की योग्यता पर प्रश्न चिन्ह नहीं लगाती। वह तो आत्मचिन्तन के लिए एक प्रेरक संदर्भ मात्र है। सिंहासन बत्तीसी की कथा या सन्दर्भ कितना वास्तविक है और कितना काल्पनिक प्रश्न यह नहीं है, प्रश्न यह है कि वह लोककथा एक लोकनायक की आचार संहिता निर्धारित करती हुई तथा अपना दायित्व निर्वाह करती हुई प्रतीत होती है। जिस प्रकार विक्रम जैसा बनने के लिए विक्रम जैसा चरित्र आवश्यक है उसी प्रकार भोज जैसा बनने के लिए भी भोज जैसा ही चरित्र होना आवश्यक है। विक्रमादित्य विशुद्ध रूप से एक राजपुरूष ही थे जबकि भोज तो लोक पुरूष थे। उनके जीवन चरित्र में चमत्कार जैसी आश्चर्यजनक घटनाएँ नहीं घटित होतीं। दोनों की तुलना संभव ही नहीं है। भोज का व्यवहार सीधा-साधा अपनी प्रजा से था, वे स्वयं प्रजा से भेंट करते थे। उनके साथ साधारणजन की तरह रहकर उनके दुःख-सुख को समझकर उसका निवारण करते थे। ऐसी अनेक घटनाएँ, लोक कथाओं और गीतों गाथाओं में हमें सुनने को आज भी मिल जाती हैं।

यदि हम उनके पराक्रम की चर्चा करें तो प्रचलित लोककथाओं में उपलब्ध राजा भोज की गौरवगाथा में उनकी वीरता, पराक्रम, रणकौशल, क्षमा, दया, प्रजा-वात्सल्य आदि महती भव्य भावनाओं का वर्णन किया गया है। इसी गाथा में उनके द्वारा पूर्वजों के गौरव की रक्षा, निर्भयता, आत्मविश्वास और आत्मगौरव जैसी महानताओं का भी वर्णन किया गया है। वे यदि किसी पर दया अथवा क्षमा करते हैं तो एक सर्व सक्षम सामर्थ्यवान की तरह, भयभीत अथवा भीरू व्यक्ति की तरह नहीं। जब तैलंग सत्याश्रय मालवा पर आक्रमण करता है तब भोज उसके आक्रमण को असफल कर देते हैं। सत्याश्रय के शरणागत होने पर वे उसे ललकार कर कहते हैं '' सावधान तैलंग अब कभी भविष्य में यदि तुमने मालवा की ओर आँख उठाकर भी देखा तो फिर क्षमा नहीं करूँगा। इस बार मैंने तुम्हें हाथी के पैरों के नीचे नहीं कुचलवाया किन्तु तब नहीं छोड़ूँगा। तुम्हारे शरीर के खण्ड-खण्ड करके तुम्हारा नाम निशान ही मिटा दूँगा।''

एक लोक-कथा मे कहा गया है कि राज्य में जब एक बुढ़िया अपने बेटे को गुड़ नहीं दे पायी फलस्वरूप उसके बेटे ने प्राण त्याग दिए। जब राजा भोज को यह ज्ञात हुआ कि उसका राज्य इतना विपन्न हो चुका है कि राज्य के निर्धन व्यक्ति मिष्ठान्न तो क्या गुड़ की डली के लिए भी तरसते हैं, तब उन्होंने स्वयं के लिए मिष्ठान्न का त्याग कर दिया। तब तक दृढ़तापूर्वक इस संकल्प का पालन किया जब तक राज्य में कृषि की संपन्नता नहीं लौट आई। ऐसे राज पुरूष को यदि लोकपुरूष कहा जाय तब कोई अतिशयोक्ति नही होगी।

अबके जो नजरां उठाई हामूँ। कुचलाऊँ हाथी के पाँव।
रणभूमि में नी मिल पावे प्राण शखवा को कोई दाँव।। राजा भोज की गौरव गाथा पद क्र. 32-26

राजा भोज जहाँ युद्धवीर थे वहीं वे दानवीर भी कम नहीं थे। उनके दरबार में से कोई भी याचक, विद्वान अथवा दीन-हीन खाली हाथ वापिस नहीं लौटा। एक समय जब खजाना कम होने लगा और मंत्री वत्सराज ने उन्हें एक दोहा लिखकर भेजा और खजाने में धन की कमी होने की सूचना दी-

बुरो समै कद आ पड़े,कोई सके न जान।
बुरा समे ने जाणतां, किन्ही संचय धान।।

राजा भोज वत्सराज के दोहे और राज्य के प्रति उनकी सद्भावना को तो समझ गए किन्तु अपनी दानप्रवृत्ति से विमुख नहीं हुए। उन्होंने प्रति उत्तर में लिख भेजा -

धन संचयाँ कई होवसी, हाथ करण री रेख।
इत बाँटूँ उत धण वधे, लियो विधाता लेख।।4

हे वत्सराजजी धन संचय करने से क्या होगा? मेरे हाथ में विधाता ने 'कर्ण' जैसी धन रेखा डाल रखी है जितना बाँटूगा उतना बढ़ेगा आप चिन्ता नहीं करें। औघढ़ दानी थे राजा भोज। वे मालवा के श्रेष्ठ शिखर पुरूष की तरह सदा याद रखे जाएंगे। वे अतुल और अमूल्य बड़प्पन के लोकपुरूष थे। राजा भोज की महानता को वही समझ सकता है जिसने लोक को जाना-समझा हो।

भोज का परिवार

डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित

भोज के स्वजनों के प्रामाणिक नाम तो बहुत कम प्राप्त होते हैं। अनेक नाम जैन प्रबन्धों में प्राप्त होते हैं। कुछ अभिधान भोज के समकालीन सन्दर्भों से तथा कुछ अभिलेखों से उपलब्ध होते हैं जिनकी प्रामाणिकता सन्देह से परे है। विभिन्न स्रोतों से ज्ञात वे कतिपय नाम तथा संबन्ध इस प्रकार हैं-

भोज का पितामह - श्रीहर्ष (सीयक द्वितीय)
भोज की दादी - रत्नावली
भोज का ताऊ - मुञ्जराज
मुञ्ज के पुत्र - अरण्यराज (आबू का प्रशासक) चन्दन (जालौर का प्रशासक)
भोज का पिता - सिन्धुराज (सिन्धुल अथवा नवसाहसाङ्क)
भोज की माता - रत्नावली (जननी सावित्री-भोजप्रबन्ध)
भोज की विमाता - शशिप्रभा (नागकन्या)
भोज के भाई - दूसल या उत्पल (परमारों की भीनमाल शाखा का प्रवर्तक), उदयादित्य
भोज की पत्नी - लीलावती या लीलादेवी (पटरानी), सौभाग्यसुन्दरी, सत्यवती, मदनमञ्जरी, भानुमती, पिंगला, सुभद्रा (गोपगिरि के राजा नरवर्मदेव की पुत्री जिसे राधावेध से जीती - पुरातन प्रबन्ध संग्रह, पृ0 30, कुन्तलेश्वरपुत्री पद्मावती, अंगराजपुत्री चन्द्रमुखी, कमला इत्यादि
भोज के पुत्र -देवराज, वत्सराज, वीरनारायण, वीरसिंह, फूलकुँवार
भोज की पुत्री - राजमती (बीसलदेव की पत्नी), भानुमती (समकालीन किसी विक्रमादित्य की पत्नी ?)
भोज के कुमार - समरपुङ्गव
भोज का प्रधानमन्त्री - रोहक
भोज के मन्त्री - बुद्धिसागर तथा वररुचि
भोज के सेनापति - साढ़, कुलचन्द्र तथा सुरादित्य
भोज का राजपुरोहित - चन्द्रशेखर दीक्षित ।

राजा भोज की सन्तानें

राजा भोज की अनेक (एक कथानुसार सौ) रानियाँ थीं। राजा भोज की कुछ सन्तानों के सन्दर्भ प्राप्त होते हैं जो इस प्रकार हैं।

राजा भोज की कुलदेवी मां गढ़कालिका

पुत्री - राजा भोज की पुत्री का नाम राजमती था। उसका साँभर के तत्कालीन राजा बीसलदेव से विवाह हुआ था। संवत् 1272 या 1212 में नरपति नाल्ह कवि द्वारा विरचित बीसलदेव काव्य की वह नायिका है। (1) बारह सो बहोत्तराँ नरपति कीन्हो काव्य । (2) अतिरंग स्वामी सूँ मिली राति, बेटी राजा भोज की।

पुत्र - **(1) वीरनारायण** - राजा भोज के इस पुत्र ने सं0 1077 (1020 ई0) में सेवाणा बसाया।

सं0 1077 राजा भोज रे बेटे वीरनारायण सेवाणो बसायो। (राजस्थान के जैनशास्त्रभण्डारों की ग्रन्थसूची के चतुर्थ भाग के पृष्ठ 591 पर) राजा भोज का 'त्रिभुवननारायण एक विरुद था। इस नाम का उसने चित्तौड़ में मन्दिर बनवाया था। बाद में उदयादित्य के पुत्र नरवर्मा का एक पद निर्वाणनारायण भी था। अतः त्रिभुवननारायण भोज के पुत्र का नाम निर्वाणनारायण होना असम्भव नहीं है।

(2) वीरसिंह - मध्यप्रदेश के बड़वानी जिले की एक भीली लोककथा के अनुसार राजा भोज के पुत्र का नाम वीरसिंह था। पूर्वोक्त वीरनारायण से यदि यह भिन्न हो तो भोज का यह द्वितीय पुत्र होता है। इसके मित्रों की संगति से नाराज होकर भोज ने इसे निर्वासित कर दिया था। फिर 24 वर्षों बाद यह अपने पिता राजा भोज के पास लौटा था।

(3) देवराज- राजवल्लभ की भोजचरित्र पुस्तक में भोज के एक पुत्र देवराज की चर्चा पायी जाती है। इसकी माता सत्यवती थी। यह अपने भाई वत्सराज से बड़ा था। देवराज का किराडू लेख 1002 ई0 का प्राप्त होता है।

(4) वत्सराज- उसी देवराज से तीन वर्ष छोटे वत्सराज पुत्र को भी राजा भोज ने देवराज के साथ भगा दिया था। इसकी माता का नाम मदनमंजरी था। यह वत्सराज भोज का गुजरात में सामन्त था। इसका सं0 1067 (1010 ई0) का ताम्रपत्र

(5) फूलकुँवार नामक एक और पुत्र का उल्लेख मिलता है। इसका पुत्र जयसिंह राजा भोज का उत्तराधिकारी राजा बना था। इस जयसिंह का 1056 ई0 का ताम्रपत्र प्रकाशित है। इस फूलकुँवार का उल्लेख मध्यप्रदेश के पूर्व राज्यपाल कुँवर अली के वंशवृक्ष (पृष्ठ 14) में प्राप्त होता है। पंचशतीप्रबोध की एक लघुकथा के अनुसार अपनी एक रानी को एक दरबारी पण्डित के साथ देखकर राजा भोज ने रानी को मृत्युदण्ड दे दिया था। इन विवरणों से स्पष्ट है कि भोज सदाचार का कठोरता से पालन करता और करवाता था।

राजा भोज की सर्जना

राजा भोज द्वारा निर्मित चित्तौड़ स्थित भोजस्वामिदेव मंदिर/समाधीश्वर मंदिर

• प्रांगण में स्थित मंदिर समूह

• समाधीश्वर मंदिर

• मंदिर पर उत्कीर्ण कलाकृतियां

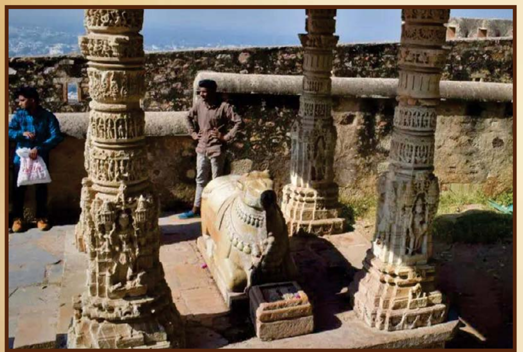

• मंदिर प्रांगण में स्थित नंदी

• गर्भगृह स्थित भगवान शिव की त्रिमुखी प्रतिमा

राजा भोज द्वारा विदिशा में निर्मित बीजा मंडल / विजय मंदिर

राजा भोज की सर्जना

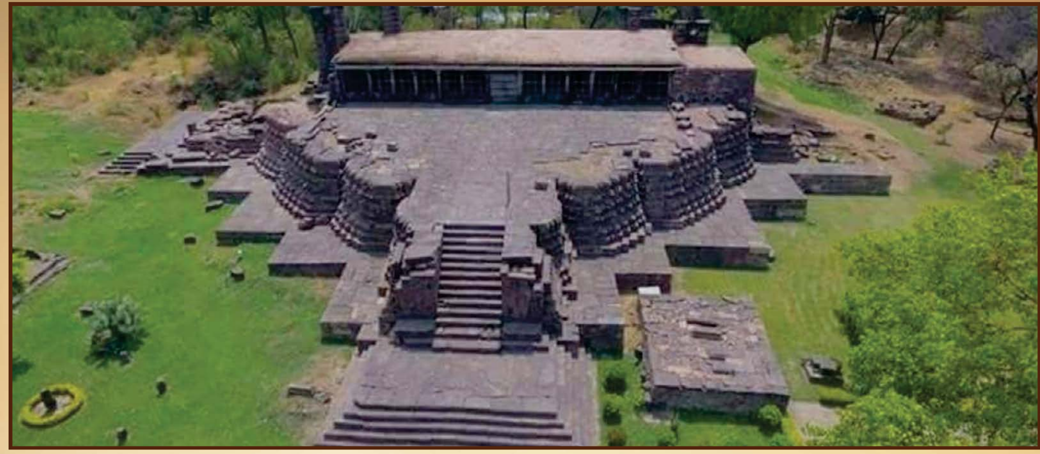

• बीजामंडल का विहंगम द्रश्य

• ओरंगजेब द्वारा बीजामंडल का खंडित द्वार

• बीजामंडल के भग्नावेश

• बीजामंडल का आंतरिक द्रश्य

• बीजामंडल में स्थित बावड़ी

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

अद्भुत मध्यप्रदेश

श्री महाकाल महालोक

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा
भव्य-दिव्य लोकार्पण

चीतों की वापसी

70 साल बाद कूनो अभयारण्य में
प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा चीतों का पुनर्स्थापन

पेसा नियम

जनजातीय समुदाय को जल, जंगल, ज़मीन, मजदूरों,
महिलाओं व संस्कृति संरक्षण के अधिकार

रोज़गार

एक लाख शासकीय पदों पर भर्तियां जारी, युवाओं को
प्रतिमाह 2 लाख से अधिक स्व-रोज़गार के अवसर

माफिया पर कार्रवाई

23 हजार एकड़ ज़मीन मुक्त कराई,
बनेंगे गरीबों के घर

मुख्यमंत्री जन सेवा अभियान

83 लाख से अधिक हितग्राही
विभिन्न योजनाओं से जुड़े

स्वच्छ भारत मिशन

शहरी और ग्रामीण स्वच्छता में अग्रणी,
इंदौर लगातार 6वीं बार सबसे स्वच्छ शहर

**नववर्ष में प्रवासी भारतीय दिवस, ग्लोबल इंवेस्टर्स समिट,
खेलो इंडिया यूथ गेम्स और जी-20 बैठकों का आयोजन**

आइये, विकास के नये अध्याय जोड़ें

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2022

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी, पोलोग्राउन्ड इन्दौर म.प्र. से
मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यू इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731-3551341